सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

Mahadev Temple

Jain Temple/Monastery

Maniyar Math

Sone Bhandar Caves

Jarasandh ka Akhada

Bimbisar Jail

Jivakamra Van

Chariot Wheel Mark & Sheel Characters

New Excavated Stupa or Van Ganga Stupa

Gridhakuta Stupa

Partially Mud Stupa on Hill

Giriyak Stupa

उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar

उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar

Mahadev Temple

Jain Temple/Monastery

Maniyar Math

Sone Bhandar Caves

Jarasandh ka Akhada

Bimbisar Jail

Jivakamra Van

Chariot Wheel Mark & Sheel Characters

New Excavated Stupa or Van Ganga Stupa

Gridhakuta Stupa

Partially Mud Stupa on Hill

Giriyak Stupa

विषय – सूची

अध्याय - 1 प्रारंभिक		
1.1	संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ	1
1.2	परिभाषाएं	2-3
अध्याय - 2 प्राचीन संस्मारकों तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि		
2.1	अधिनियम की पृष्ठभूमि	4
2.2	धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध	4
2.3	आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां	4-5
अध्याय - 3 संरक्षित संस्मारकों - उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार का स्थान और अवस्थिति		
3.1	संरक्षित संस्मारकों का स्थान और अवस्थिति	6-13
3.2	संरक्षित संस्मारकों की संरक्षित सीमा	13
	3.2.1 एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/योजना	13
3.3	संरक्षित संस्मारकों का इतिहास	14-16
3.4	संरक्षित संस्मारकों का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि)	16-18
3.5	वर्तमान स्थिति	18
	3.5.1 संरक्षित संस्मारकों की स्थिति-स्थिति आकलन	18
	3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या	19-20
अध्याय - 4 स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो		
4.1	मौजूदा ज़ोनिंग	21
4.2	स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश	21
अध्याय - 5 प्रथम अनुसूची एवं सर्वेक्षण योजना के अनुसार सूचना		
5.1	संरक्षित संस्मारकों की सर्वेक्षण योजना	22
5.2	सर्वेक्षित आंकड़ो का विश्लेषण	22
	5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण	22-23
	5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण	23-26

	5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण	26-28
	5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि	28
	5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई	28-30
	5.2.6 राज्य संरक्षित संस्मारकों और सूचीबद्ध धरोहर भवन	30
	5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं	30
	5.2.8 संरक्षित संस्मारकों तक पहुंच	30-31
	5.2.9 अवसरंचनात्मक सेवाएं	31
	5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित ज़ोनिंग	31
अध्याय - 6 **संरक्षित संस्मारकों की वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व**		
6.1	वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व	32-33
6.2	संरक्षित संस्मारकों की संवेदनशीलता	33
6.3	संरक्षित संस्मारकों या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता	33-35
6.4	भूमि उपयोग	35
6.5	संरक्षित संस्मारकों के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर अवशेष	35
6.6	सांस्कृतिक परिदृश्य	35-36
6.7	महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य	36
6.8	खुली जगह और निर्माण का उपयोग	36
6.9	पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ	36
6.10	संरक्षित संस्मारकों और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज	36-37
6.11	पारंपरिक वास्तुकला	37
6.12	स्थानीय प्राधिकरण द्वारा उपलब्ध विकास योजना	37
6.13	अनुमेय भवन संबंधी मापदंड	37-38
	6.13.1 मरम्मत और नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में)	38
	6.13.2 पुनर्निर्माण	38
	6.13.3 नया निर्माण	39-41
6.14	आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन	41
अध्याय - 7 **स्थल विशिष्ट सिफारिशें**		
7.1	स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें	42
7.2	अन्य सिफ़ारिशें	42-43

CONTENTS

CHAPTER - 1 **PRELIMINARY**		
1.1	Short title, Extent and Commencements	44
1.2	Definitions	45-46
CHAPTER - 2 **Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended**		
2.1	Background of the Act	47
2.2	Provisions of the Act related to Heritage Bye-Laws	47
2.3	Rights and Responsibilities of Applicant	47-48
CHAPTER - 3 **Location and Setting of the Protected Monuments - All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar**		
3.1	Location and Setting of the Protected Monuments	49-56
3.2	Protected Boundary of the Protected Monuments	56
	3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records	56
3.3	History of the Protected Monuments	57-59
3.4	Description of the Protected Monuments (architectural features, elements, materials etc.)	59-61
3.5	Current Status	61
	3.5.1 Condition of the Protected Monuments - condition assessment	61
	3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers	61-62
CHAPTER - 4 **Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans**		
4.1	Existing Zoning	63
4.2	Existing Guidelines of the Local Bodies	63
CHAPTER - 5 **Information as per First Schedule and Survey Plan**		
5.1	Survey Plan of the Protected Monuments	64
5.2	Analysis of surveyed data	64
	5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details	64-65
	5.2.2 Description of built-up area	65-68
	5.2.3 Description of green/open spaces	68-70
	5.2.4 Area covered under circulation-roads, footpaths etc.	70

	5.2.5 Existing Heights of the Buildings	70-71
	5.2.6 State Protected Monuments and listed Heritage Buildings	72
	5.2.7 Public Amenities	72
	5.2.8 Access to the Protected Monuments	72-73
	5.2.9 Infrastructure services	73
	5.2.10 Proposed zoning of the area as per guidelines of the Local Bodies	73
CHAPTER - 6 **Architectural, Historical and Archaeological Value of the Protected Monuments**		
6.1	Architectural, Historical and Archaeological Value	74
6.2	Sensitivity of the Protected Monuments	75
6.3	Visibility from the Protected Monuments or Area and visibility from the Regulated Area	75-77
6.4	Land-use	77
6.5	Archaeological heritage remains other than the Protected Monuments	77
6.6	Cultural Landscapes	77-78
6.7	Significant natural landscapes	78
6.8	Usage of open space and constructions	78
6.9	Traditional, Historical and Cultural Activities	78
6.10	Skyline as visible from the Protected Monuments and from the Regulated Areas	78-79
6.11	Traditional Architecture	79
6.12	Developmental plan, as available by the local authorities	79
6.13	Permissible Building related parameters	79
	6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated Area)	79-80
	6.13.2 Reconstruction	80
	6.13.3 New Construction	80-82
6.14	Visitor facilities and amenities	82
CHAPTER - 7 **Site Specific Recommendations**		
7.1	Site Specific Recommendations	83
7.2	Other Recommendations	83

Annexures		
अनुलग्नक-I Annexure-I	उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार की सर्वेक्षण योजना Survey Plan of All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar	84-89
अनुलग्नक-II Annexure-II	संरक्षित संस्मारकों की अधिसूचना Notification of the Protected Monuments	90-91
अनुलग्नक–III Annexure–III	नए और पुराने राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार को दर्शाता अभिलेखीय मानचित्र The Archival Map showing New and Old Rajgir, District-Nalanda, Bihar	92
अनुलग्नक–III(क) Annexure–III(a)	राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार की किलेबंदी को दर्शाता अभिलेखीय मानचित्र The Archival Map showing Fortifications of Rajgir, District-Nalanda, Bihar	93
अनुलग्नक-III(ख) Annexure-III(b)	संरक्षित संस्मारकों के अभिलेखीय चित्र Archival Images of the Protected Monuments	94-97
अनुलग्नक-IV Annexure-IV	बिहार भवन उप-नियम, 2014 Bihar Building Bye-Laws, 2014	98-99
अनुलग्नक-V Annexure-V	संरक्षित संस्मारकों और उसके आसपास के क्षेत्रों के चित्र Images of the Protected Monuments and its surrounding areas	100-123

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधि विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम (22) के साथ पठित प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, संरक्षित संस्मारकों **"उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार"** के लिए निम्नलिखित धरोहर उप-विधि जिन्हें राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान पटना, बिहार के परामर्श से सक्षम प्राधिकारी द्वारा तैयार किया गया है, को राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें और कार्य प्रणाली), नियम, 2011 के नियम 18 के उप नियम 2 द्वारा यथा अपेक्षित जनता से आपत्ति या सुझाव आमंत्रित करने के लिए एतद्वारा 09.06.2023 को प्रकाशित किया गया था।

यथा विनिर्दिष्ट दिनांक से पहले प्राप्त आपत्ति/सुझावों पर सक्षम प्राधिकारी के परामर्श से राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण द्वारा विधिवत विचार किया गया है।

इसलिए, अब प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ की उप-धारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण, निम्नलिखित उप-विधि बनाता है, नामत:

"उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार" के लिए धरोहर उप-विधि

अध्याय - 1
प्रारंभिक

1.1 संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ:-

(i) इन धरोहर उप-विधियों को संरक्षित संस्मारकों **"उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार"** के लिए राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण धरोहर उप-विधि, 2026 कहा जाएगा।

(ii) ये संस्मारक के सम्पूर्ण प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र तक लागू होंगी।

(iii) इन उप-विधियों के प्रावधान किसी भी अन्य उप-विधि में निहित असंगतता के बावजूद प्रभावी होंगे, चाहे इन उप-विधियों के प्रारंभ होने से पहले या बाद में बनाए गए हों, या किसी उप-विधि के आधार पर प्रभावी होने वाले किसी भी दस्तावेज़ में हों। इन उप-विधियों को किसी अन्य उप-विधि के अनुरूप बनाने के लिए इनमें संशोधन करना अनिवार्य नहीं होगा।

(iv) ये अधिकारिक राजपत्र में उनके प्रकाशन की तिथि से प्रवृत्त होंगी।

1.2 परिभाषाएं:-

1. इन धरोहर उप-विधियों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो:-

(क) "प्राचीन संस्मारक" से कोई संरचना, रचना या संस्मारक, या कोई स्तूप या स्थान या दफ़नगाह या कोई गुफा, शैल-मूर्ति, शिला-लेख या एकाश्मक जो ऐतिहासिक, पुरातत्वीय या कलात्मक रुचि का है और जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, अभिप्रेत है, और इसके अंतर्गत हैं -

i. किसी प्राचीन संस्मारक के अवशेष,

ii. किसी प्राचीन संस्मारक का स्थल,

iii. किसी प्राचीन संस्मारक के स्थल से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो ऐसे संस्मारक को बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

iv. किसी प्राचीन संस्मारक तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ख) "पुरातत्वीय स्थल और अवशेष" से कोई ऐसा क्षेत्र अभिप्रेत है, जिसमें ऐतिहासिक या पुरातत्वीय महत्व के ऐसे भग्नावशेष या अवशेष हैं या जिनके होने का युक्तियुक्त रूप से विश्वास किया जाता है, जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, और इनके अंतर्गत हैं-

i. उस क्षेत्र से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो उसे बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

ii. उस क्षेत्र तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ग) "अधिनियम" से आशय प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, है;

(घ) "पुरातत्व अधिकारी" से भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का कोई ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद् से निम्नतर पद (श्रेणी) का नहीं है;

(ड.) ''प्राधिकरण'' से अधिनियम की धारा 20च के अधीन गठित राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(च) "सक्षम प्राधिकारी" से केंद्र सरकार या राज्य सरकार के पुरातत्व निदेशक या पुरातत्व आयुक्त की श्रेणी से नीचे न हो या समतुल्य श्रेणी का ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन कृत्यों का पालन करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, सक्षम प्राधिकारी के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया हो:

बशर्ते कि केंद्र सरकार सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, धारा 20ग, 20घ और 20ङ के प्रयोजन के लिए भिन्न भिन्न सक्षम प्राधिकारी विनिर्दिष्ट कर सकेगी;

(छ) ''निर्माण'' से किसी संरचना या भवन का कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसके अंतर्गत उसमें ऊर्ध्वाकार या क्षैतिजीय कोई परिवर्धन या विस्तारण भी है, किन्तु इसके अंतर्गत किसी विद्यमान संरचना या भवन का कोई पुन:निर्माण, मरम्मत और नवीकरण या नालियों और जलनिकास सुविधाओं तथा सार्वजनिक शौचालयों, मूत्रालयों और इसी प्रकार की सुविधाओं का निर्माण, अनुरक्षण और सफाई या जनता के लिए जलापूर्ति की व्यवस्था करने के लिए आशयित सुविधाओं का निर्माण और अनुरक्षण या जनता के लिए विद्युत की आपूर्ति और वितरण के लिए निर्माण या अनुरक्षण, विस्तारण, प्रबंध या जनता के लिये इसी प्रकार की सुविधाओं के लिए व्यवस्था शामिल नहीं हैं;

(ज) "सरकार" से आशय भारत सरकार से है;

(झ) अपने व्याकरणिक रूपों और सजातीय पदों सहित "अनुरक्षण" के अंतर्गत हैं किसी संरक्षित संस्मारक को बाड़ से घेरना, उसे आच्छादित करना, उसकी मरम्मत करना, उसका पुनरूद्धार करना और उसकी सफाई करना, और कोई ऐसा कार्य करना जो किसी संरक्षित संस्मारक के परिरक्षण या उस तक सुविधाजनक पहुंच को सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक है;

(ञ) "स्वामी" के अंतर्गत हैं-

i. संयुक्त स्वामी जिसमें अपनी ओर से तथा अन्य संयुक्त स्वामियों की ओर से प्रबंध करने की शक्तियॉ निहित हैं और किसी ऐसे स्वामी के हक-उत्तराधिकारी, तथा

ii. प्रबंध करने की शक्तियों का प्रयोग करने वाला कोई प्रबंधक या न्यासी और ऐसे किसी प्रबंधक या न्यासी का पद में उत्तराधिकारी;

(ट) "विहित" से इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियम अभिप्रेत है:

(ठ) "प्रतिषिद्ध क्षेत्र" से धारा 20क के अधीन प्रतिषिद्ध क्षेत्र के रूप में विनिर्दिष्ट क्षेत्र या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(ड) "संरक्षित क्षेत्र" से कोई ऐसा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ढ़) "संरक्षित संस्मारक" से कोई ऐसा प्राचीन संस्मारक अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ण) "विनियमित क्षेत्र" से धारा 20ख के अधीन विनिर्दिष्ट या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(त) "पुन: निर्माण" से किसी संरचना या भवन का उसकी पूर्व विद्यमान संरचना में ऐसा कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसकी क्षैतिजीय और ऊर्ध्वाकार सीमाएं समान हैं;

(थ) "मरम्मत और पुनरुद्धार" से किसी पूर्व विद्यमान संरचना या भवन के परिवर्तन अभिप्रेत हैं, किन्तु इसके अंतर्गत निर्माण या पुन: निर्माण नहीं होंगे।

2. इसमें प्रयुक्त और परिभाषित नहीं किए गए शब्दों और अभिव्यक्तियों का आशय वही अर्थ होगा जैसा अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों में समनुदेशित किया गया है।

अध्याय - 2

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम,1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि

2.1 अधिनियम की पृष्ठभूमि:

धरोहर उप-विधियों का उद्देश्य केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित संस्मारकों की सभी दिशाओं में 300 मीटर के अंदर भौतिक, सामाजिक और आर्थिक दखल के बारे में मार्गदर्शन देना है। 300 मीटर के क्षेत्र को दो भागों में बॉटा गया है (i) **प्रतिषिद्ध क्षेत्र,** यह क्षेत्र संरक्षित क्षेत्र अथवा संरक्षित संस्मारक की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 100 मीटर की दूरी तक फैला है और (ii) **विनियमित क्षेत्र,** यह क्षेत्र प्रतिषिद्ध क्षेत्र की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 200 मीटर की दूरी तक फैला है।

अधिनियम के उपबंधों के अनुसार, कोई भी व्यक्ति संरक्षित क्षेत्र और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी प्रकार का निर्माण अथवा खनन का कार्य नहीं कर सकता जबकि ऐसा कोई भवन अथवा संरचना जो प्रतिषिद्ध क्षेत्र में 16 जून, 1992 से पूर्व मौजूद था अथवा जिसका निर्माण बाद में महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनुमति से हुआ था, विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना का निर्माण, पुन:निर्माण, मरम्मत अथवा पुनरुद्धार की अनुमति सक्षम प्राधिकारी से लेना अनिवार्य है।

2.2 धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ और प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधियों का विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम 22 में संरक्षित संस्मारकों के लिए उप-विधि बनाना विनिर्दिष्ट है। नियम में धरोहर उप-विधि बनाने के लिए मापदंडों का प्रावधान है। राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें तथा कार्य निष्पादन) नियम, 2011, नियम 18 में प्राधिकरण द्वारा धरोहर उप-विधियों के अनुमोदन की प्रक्रिया विनिर्दिष्ट है।

2.3 आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग में प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मरम्मत और पुनरुद्धार अथवा विनियमित क्षेत्र में निर्माण अथवा पुनर्निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण के लिए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार आवेदन का ब्यौरा विनिर्दिष्ट है:

(क) कोई व्यक्ति जो किसी ऐसे भवन अथवा संरचना का स्वामी है जो 16 जून, 1992 से पहले प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मौजूद था अथवा जिसका निर्माण इसके उपरांत महानिदेशक के अनुमोदन से हुआ था तथा जो ऐसे भवन अथवा संरचना का किसी प्रकार की मरम्मत अथवा नवीकरण का काम कराना चाहता है तो वह ऐसी मरम्मत और नवीकरण, जैसा भी स्थिति हो, को कराने के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ख) कोई व्यक्ति जो किसी विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना अथवा भूमि का स्वामी है और वह ऐसी भूमि पर ऐसे भवन अथवा संरचना अथवा का कोई निर्माण अथवा पुन:निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, करना चाहता है तो वह निर्माण अथवा पुन:निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ग) सभी संबंधित सूचना प्रस्तुत करने तथा राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष तथा सदस्यों की सेवा की शर्तें और कार्य संचालन) नियम, 2011 के अनुपालन की जिम्मेदारी आवेदक की होगी।

अध्याय - 3

संरक्षित संस्मारकों – उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार का स्थान और अवस्थिति

3.1 संरक्षित संस्मारकों का स्थान और अवस्थिति:

संरक्षित संस्मारकों में 12 संरक्षित संस्मारक शामिल हैं: - महादेव मंदिर, जैन मंदिर/मठ, मणियार मठ, सोन भंडार गुफाएं, जरासंध का अखाड़ा, बिम्बिसार जेल, जीवकामरा वन, रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण, नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप, गृधकूट स्तूप, आंशिक रूप से पहाड़ी पर मिट्टी स्तूप और गिरियाक स्तूप। ये राजगीर पहाड़ियों और उनके आसपास के क्षेत्रों में स्थित हैं, कुछ पहाड़ियों के ऊपर स्थित हैं, अन्य जंगली तलहटी के भीतर हैं और कई पर्वतमालाओं के बीच के गड्ढों में स्थित हैं। इस क्षेत्र को पांच प्रमुख पहाड़ियों द्वारा सीमांकित किया गया है: रत्नागिरी, विपुलाचल, वैभारगिरी, सोंगिरी और उदयगिरी, जिन्हें सामूहिक रूप से राजगीर पहाड़ियों के रूप में जाना जाता है।

संरक्षित संस्मारकों राजगीर पहाड़ियों और उनकी तलहटी में स्थित हैं। रत्नागिरी पहाड़ी पर गिरियाक स्तूप, गृधकूट स्तूप और आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप खड़ा है। वैभारगिरी पहाड़ी में जैन मंदिर/मठ और महादेव मंदिर हैं, जबकि इसकी तलहटी में जरासंध का अखाड़ा, सोन भंडार गुफाएं और मणियार मठ हैं। उदयगिरी पहाड़ी की तलहटी में रथ के पहिये के निशान, खोल के पात्र और नए उत्खनित स्तूप (वन गंगा स्तूप) हैं। बिम्बिसार जेल सोंगिरी पहाड़ी के आधार पर स्थित है और जीवकामरा वन रत्नागिरी पहाड़ी की तलहटी में स्थित है।

रत्नागिरी पहाड़ी के सबसे पूर्वी छोर पर स्थित गिरियाक स्तूप महादेव मंदिर से लगभग 14 किलोमीटर दूर है, जो वैभारगिरी पहाड़ी के सबसे पश्चिमी बिंदु पर स्थित है। स्थलीय स्थलों में नए उत्खनित स्तूप सबसे दक्षिणी बिंदु को चिह्नित करता है, जो उत्तर में मणियार मठ से लगभग 2.8 किलोमीटर दूर स्थित है।

राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) के माध्यम से संरक्षित संस्मारकों तक पहुंच प्रदान की जाती है। संरक्षित संस्मारकों वन क्षेत्रों, पहाड़ियों और कुछ निर्माणों से घिरे हुए हैं।

इनके स्थान के भौगोलिक निर्देशांक हैं:

i. **महादेव मंदिर: अक्षांश:** 25°00'23.0" उत्तर, **देशांतर:** 85°24'42.7" पूर्व ।

ii. **जैन मंदिर/मठ: अक्षांश** 25°00'24.7" उत्तर, **देशांतर:** 85°24'41.9" पूर्व ।

iii. **मणियार मठ: अक्षांश:** 25°00'07.0"उत्तर, **देशांतर:** 85°25'20.6" पूर्व ।

iv. **सोन भंडार गुफाएं: अक्षांश:** 25°00'14.9" उत्तर, **देशांतर:** 85°25'00.4" पूर्व ।

v. **जरासंध का अखाड़ा: अक्षांश:** 24°59'57.2" उत्तर, **देशांतर:** 85°24'43.3" पूर्व ।

vi. **बिम्बिसार जेल: अक्षांश:** 24°59'41.6" उत्तर, **देशांतर:** 85°25'45.0" पूर्व ।

vii. **जीवकामरा वन: अक्षांश:** 24°59'43.7" उत्तर, **देशांतर:** 85°26'07.9" पूर्व ।

viii. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण: अक्षांश:** 24°59'05.0" उत्तर, **देशांतर:** 85°25'52.6" पूर्व ।

ix. **नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप: अक्षांश:** 24°58'55.8" उत्तर, **देशांतर:** 85°25'48.2" पूर्व ।

x. **गृद्धकूट स्तूप: अक्षांश:** 25°00'06.4" उत्तर, **देशांतर:** 85°26'47.1" पूर्व ।

xi. **पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप: अक्षांश:** 25°00'20.0" उत्तर, **देशांतर:** 85°27'01.8" पूर्व ।

xii. **गिरियाक स्तूप: अक्षांश:** 25°01'30.5" उत्तर, **देशांतर:** 85°30'46.8" पूर्व ।

निकटतम रेलवे स्टेशन लगभग पांच किलोमीटर दूर राजगीर रेलवे स्टेशन है और निकटतम हवाई अड्डा गया हवाई अड्डा और जय प्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, पटना है, जो संरक्षित संस्मारकों से क्रमशः 78 किलोमीटर और 120 किलोमीटर दूर स्थित है।

संरक्षित संस्मारकों - "जैन मंदिर/मठ और महादेव मंदिर" एक अन्य संरक्षित संस्मारक, "सप्तपर्णी गुफाओं" के निकट स्थित हैं। इसलिए, इस धरोहर उप-विधि को "पुराने और नए राजगृह के रूप में ज्ञात उक्त दो प्राचीन शहरों के आधे मील की दूरी के भीतर स्थित सभी प्राचीन संरचनाएं और सभी कृत्रिम गुफाएं और प्राचीन अवशेषों वाले टीले, राजगीर, जिला- नालंदा, बिहार" की धरोहर उप-विधि के संयोजन में पढ़ा जाना चाहिए। **चित्र 7 देखें**

संरक्षित संस्मारकों - "रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप" एक अन्य संरक्षित संस्मारक - "साइक्लोपियन दीवार" के करीब स्थित हैं। इसलिए, इस धरोहर उप-विधि को "उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील- राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार" की धरोहर उप-विधि के संयोजन में भी पढ़ा जाना चाहिए। **चित्र 8 देखें**

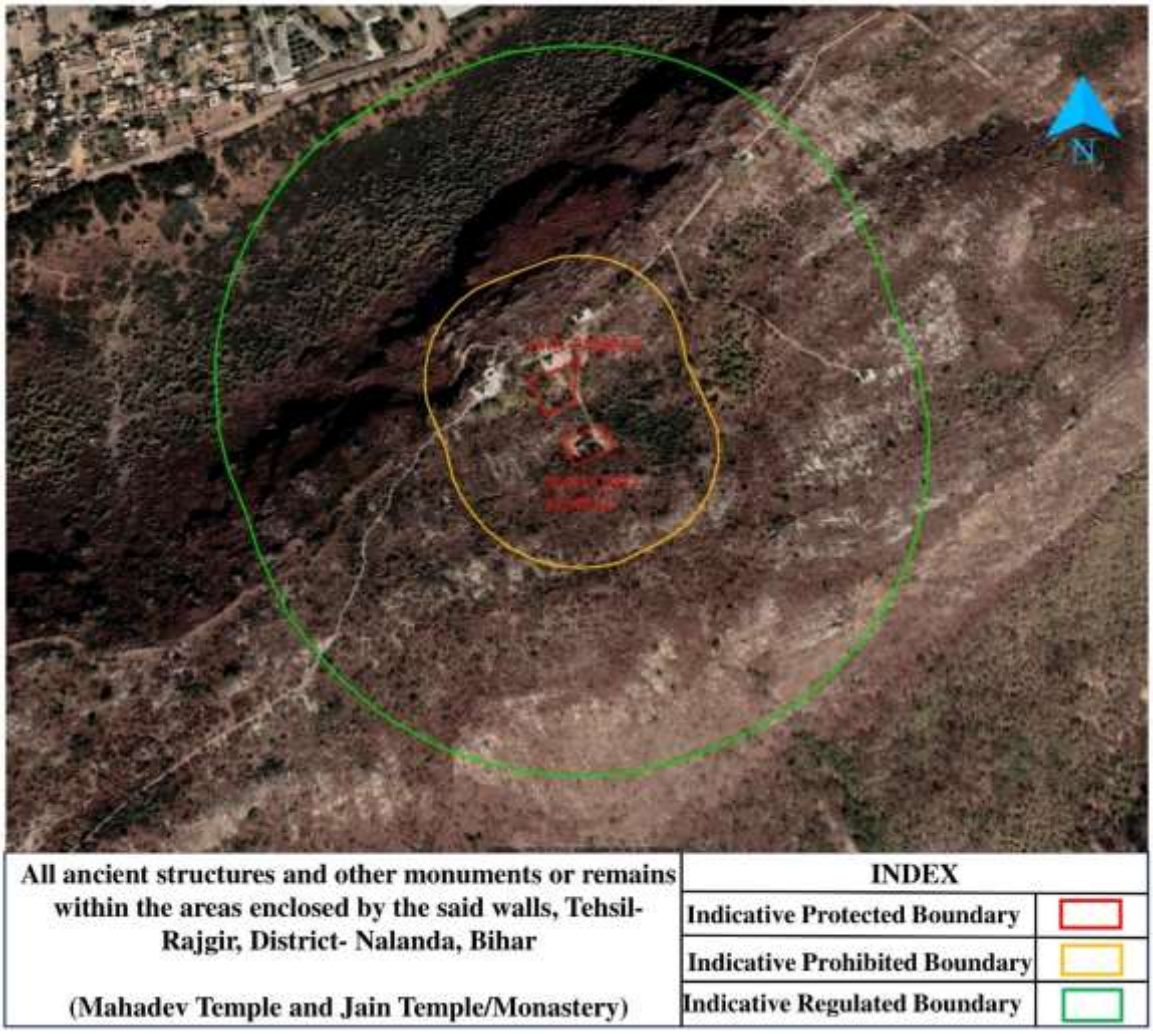

चित्र 1: उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार का स्थान एवं अवस्थिति दर्शाता उपग्रह चित्र ।

(महादेव मंदिर और जैन मंदिर/मठ)

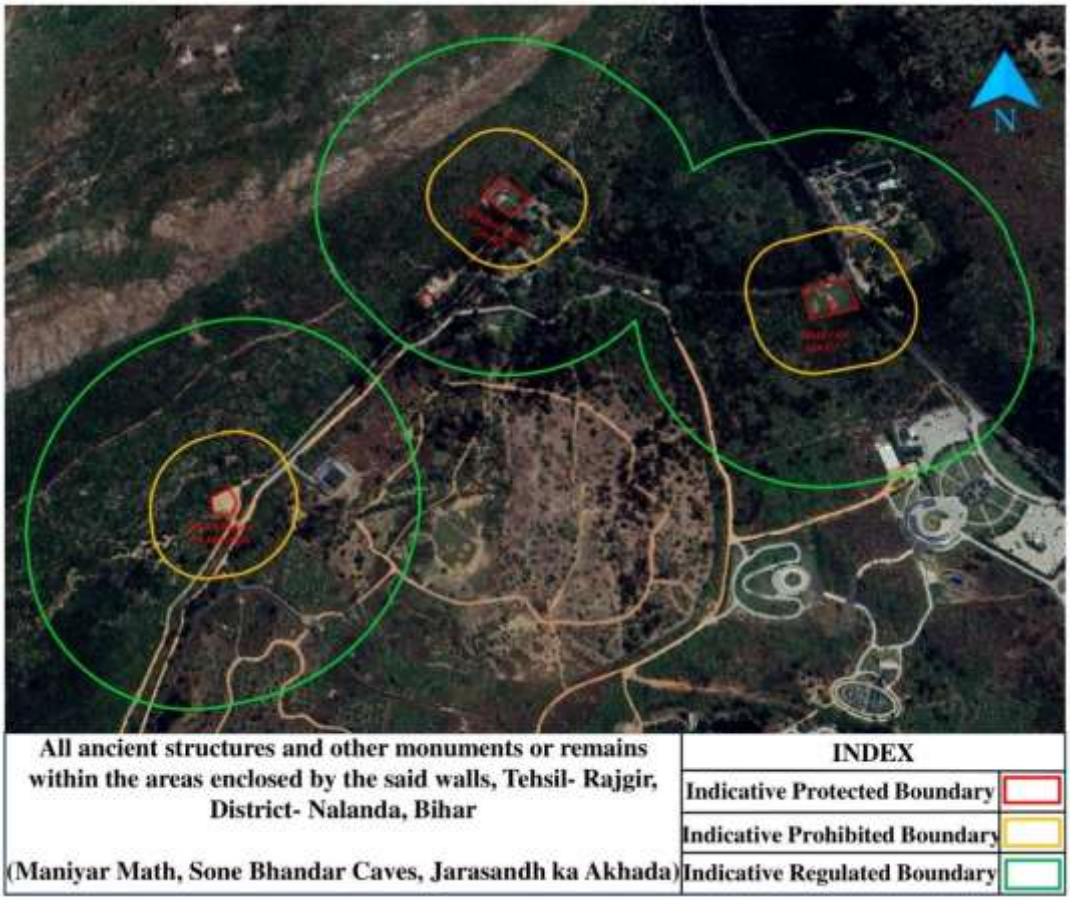

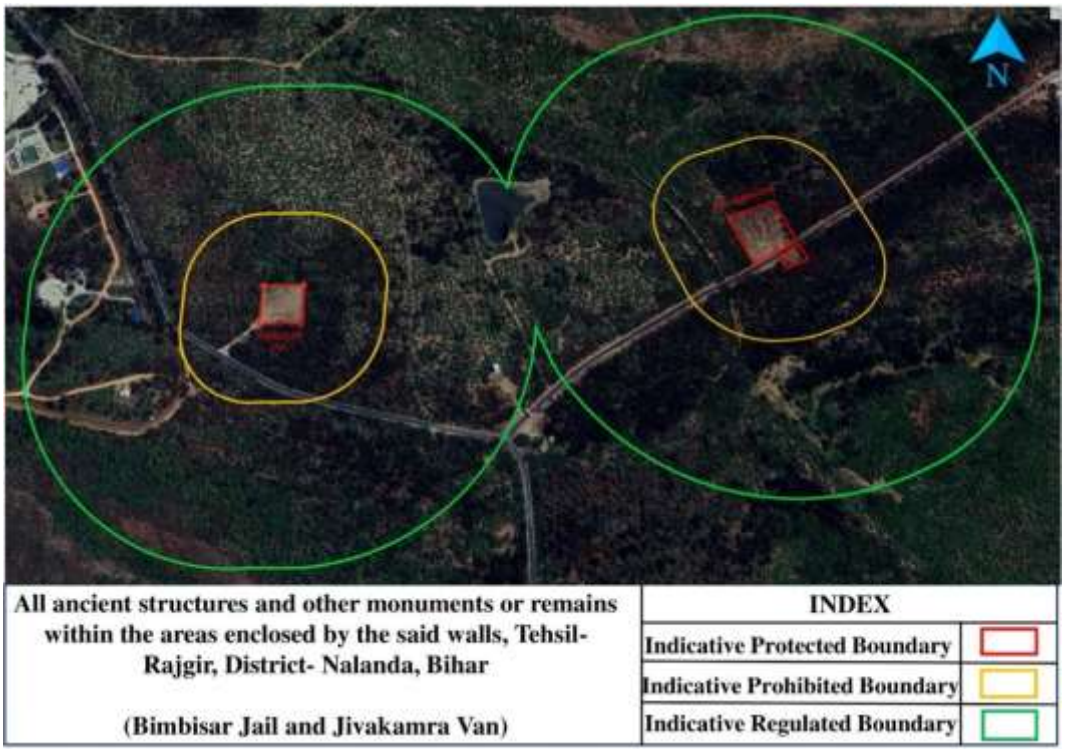

चित्र 2 और 3: उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार का स्थान और अवस्थिति दर्शाता उपग्रह चित्र।
(मणियार मठ, सोन भंडार गुफाएं, जरासंध का अखाड़ा, बिम्बिसार जेल और जीवकामरा वन)

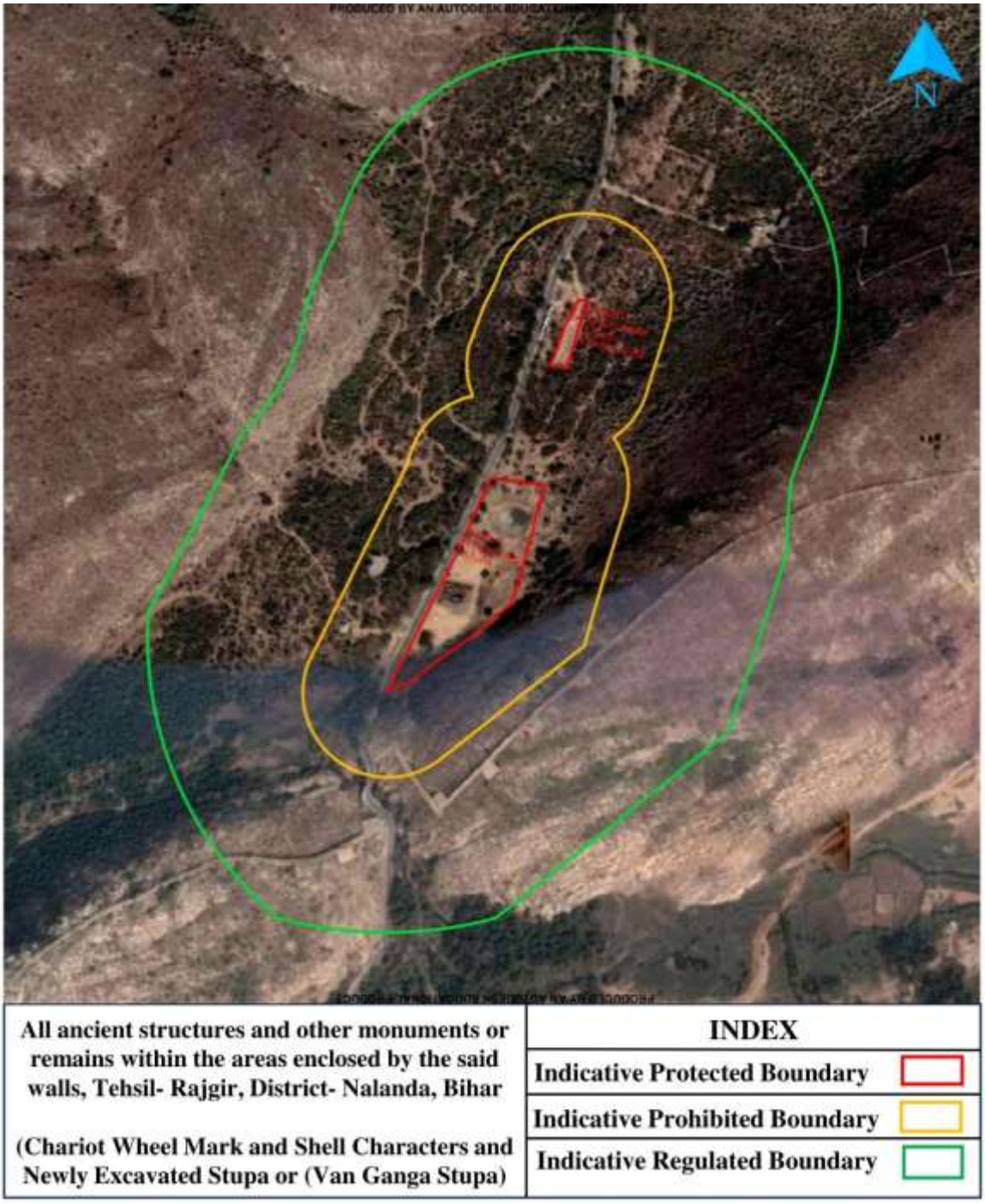

चित्र 4: उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार का स्थान और अवस्थिति दर्शाता उपग्रह चित्र ।

(रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप)

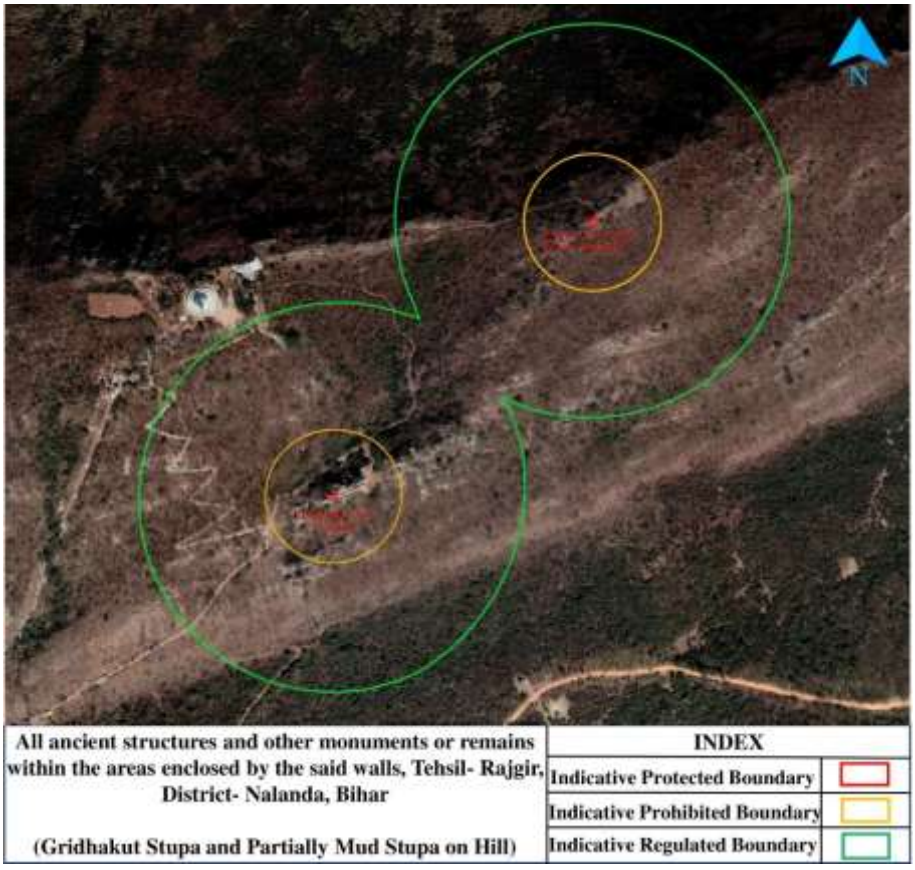

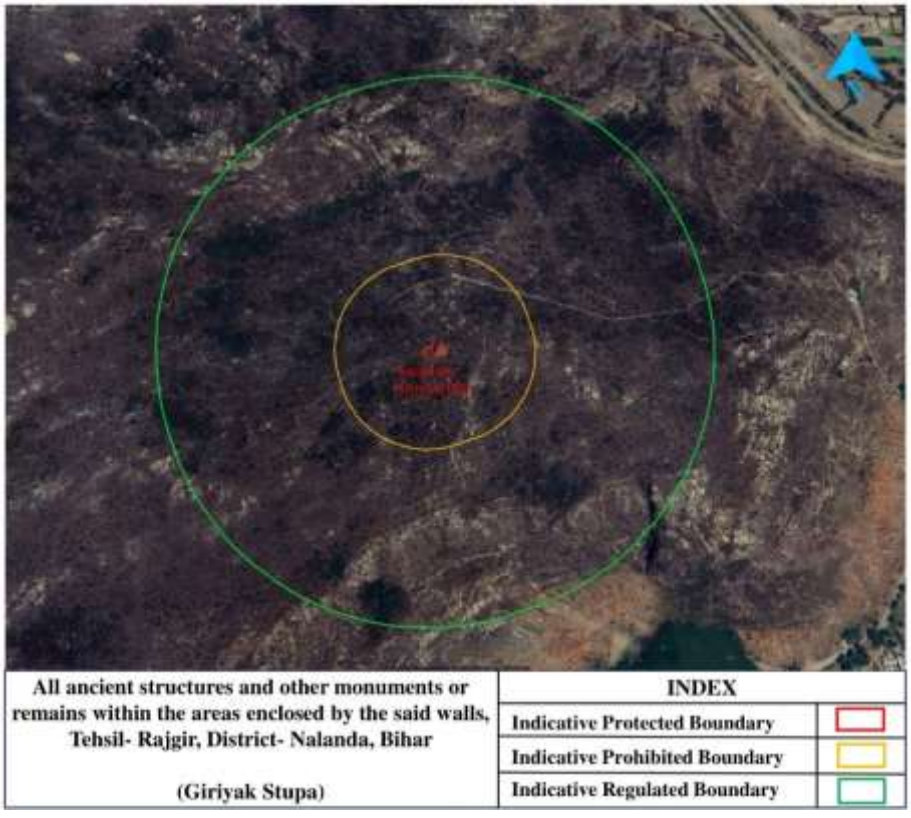

चित्र 5 और 6: उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील- राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार का स्थान और अवस्थिति दर्शाता उपग्रह चित्र ।

(गृद्धकूट स्तूप, पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी स्तूप और गिरियाक स्तूप)

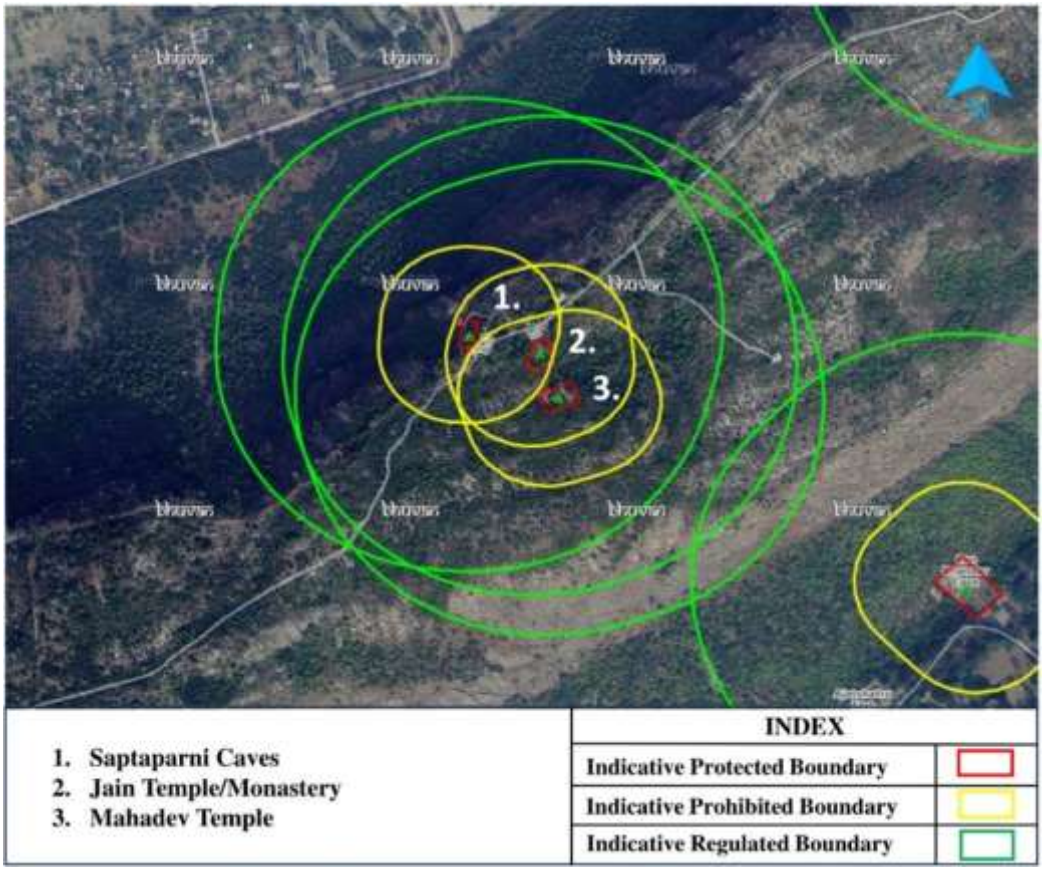

चित्र 7: उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार।

जैन मंदिर/मठ और महादेव मंदिर का स्थान और अवस्थिति दर्शाता उपग्रह चित्र एक अन्य संरक्षित संस्मारक अर्थात:- सप्तपर्णी गुफाएं के साथ स्रोत: भुवन पोर्टल

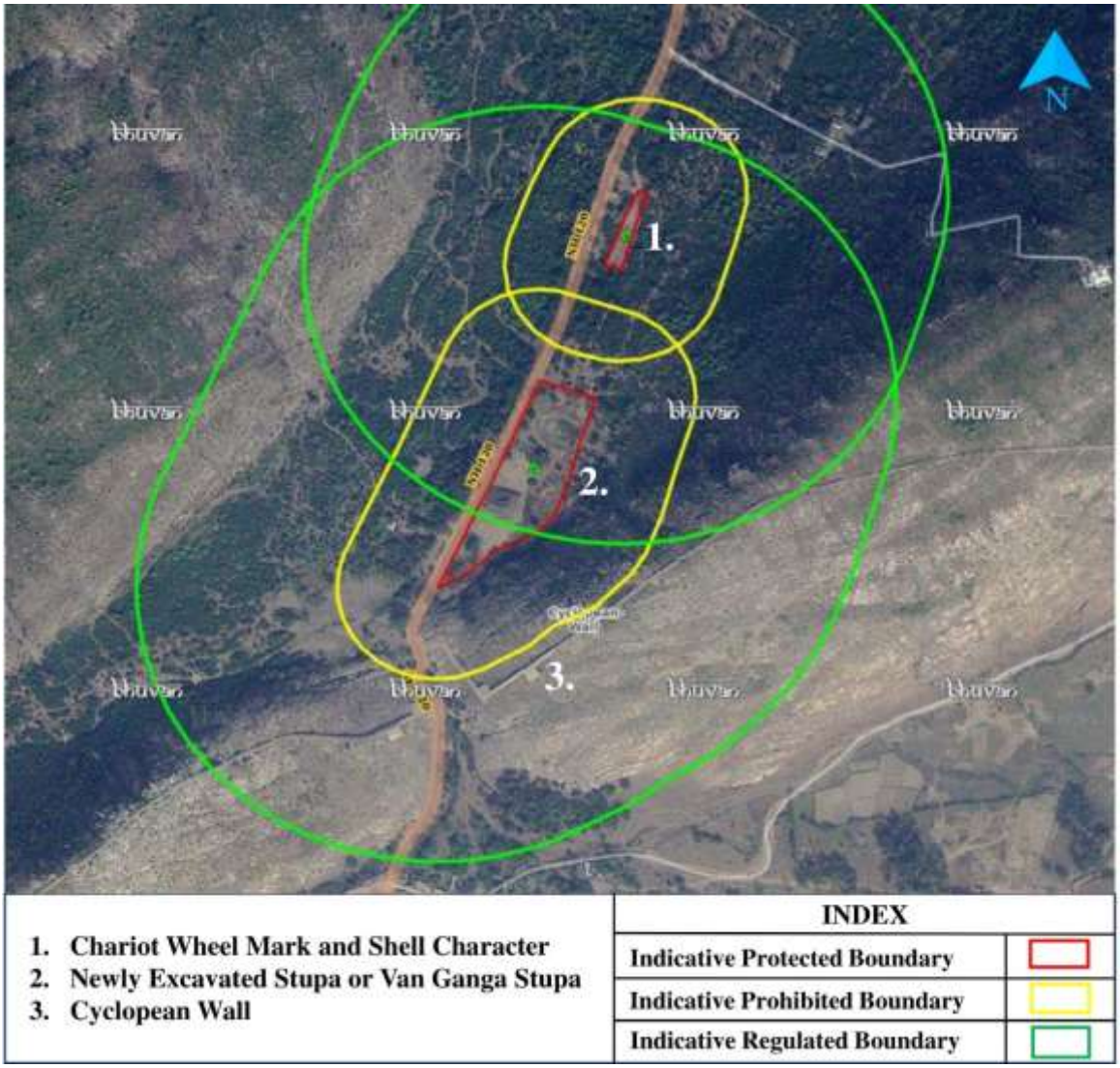

चित्र 8: उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील- राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार

रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप का स्थान और अवस्थिति दर्शाता उपग्रह चित्र एक अन्य संरक्षित संस्मारक अर्थात: - साइक्लोपियन दीवार के साथ। स्रोत: भुवन पोर्टल

3.2 संरक्षित संस्मारकों की संरक्षित सीमा:

संरक्षित संस्मारकों - उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार की सीमा **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती है।

3.2.1 एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/योजना:

उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार की राजपत्र अधिसूचना **अनुलग्नक-II** में देखी जा सकती है।

3.3 संरक्षित संस्मारकों का इतिहास:

i. महादेव मंदिर:

वैभारगिरि पहाड़ी में कई प्राचीन और अपेक्षाकृत हाल के मंदिर और खंडहर शामिल हैं। शिव को समर्पित एक खंडहर मंदिर में एक छोटा गर्भगृह (*गर्भ-गृह*) है। यह मान्यता है कि यह मंदिर प्राचीन मगध के शासक जरासंध से जुड़ा हुआ है। ईंट और ग्रेनाइट से निर्मित मंदिर लगभग 1000 वर्ष पुराना है। यह मंदिर हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के लिए महत्वपूर्ण स्थलों के एक परिसर का हिस्सा है।

ii. जैन मंदिर/मठ:

वैभारगिरी पहाड़ी पर स्थित इस प्राचीन जैन मंदिर को 1830 के दशक के मध्य में प्रकाश में लाया गया था। ईंट संरचना में एक आंगन द्वारा घिरा एक केंद्रीय पूर्व-मुखी कक्ष शामिल है। कक्ष और आसपास के प्रकोष्ठों के भीतर आले जैन मूर्तियों को प्रतिष्ठापित करते हैं, जिनमें पार्श्वनाथ, महावीर और संभवनाथ शामिल हैं। केंद्रीय कक्ष में एक विकृत मूर्ति में एक संक्षिप्त समर्पित शिलालेख है, जो 8वीं शताब्दी ईस्वी का है।

वैभारगिरि पहाड़ी पर जैन परिवारों की पुरातनता को महावीर की एक बारीक नक्काशीदार मूर्ति से प्रमाणित किया गया है, जिसके आसन पर एक टुटा-फुटा शिलालेख है, जो 5वीं शताब्दी ईस्वी का बताया गया था और चीनी तीर्थयात्री ज़ुआनज़ांग (ह्युएन त्सांग) के 7वीं शताब्दी के विवरण जिसमें उन्होंने बिना कपड़े पहने तपस्वियों की लगातार उपस्थिति दर्ज की, स्पष्ट रूप से जैन भिक्षुओं के संदर्भ में है।

iii. मणियार मठ:

संरक्षित संस्मारक की पहचान पाली ग्रंथों के *मणिमाला-चैत्य* या महाभारत में उल्लिखित मणि-नागा मंदिर से की जा सकती है। बाहरी हिस्से में एक विशेषता माला पहने हुए लियांगा, चार सशस्त्र ताज पहने हुए विह्नू, नागा और नागी आकृतियों जैसी मूर्तियों के साथ महीन चूने के आलों को दिखाया गया था, गणेश सांपों और छह सशस्त्र नृत्य शिव के साथ उलझा हुआ था, जो आज काफी हद तक समाप्त गया है। छवि चित्रण शैली एक गुप्त उद्गम के बारे में बताती है, जबकि सबसे पहला संरचनात्मक चरण तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है।

iv. सोन भंडार गुफाएं:

संरक्षित संस्मारक में वैभारगिरी पहाड़ी के दक्षिणी आधार पर दो शैलकृत कक्ष शामिल हैं, जो संभवतः तीसरी - चौथी शताब्दी ईस्वी के हैं। पश्चिमी गुफा के दरवाजे और खिड़की के बीच एक शिलालेख के अनुसार, जैन तपस्वियों के लिए संत भैरोदेव द्वारा उनकी खुदाई की गई थी। पूर्वी गुफा, कम ऊंचाई पर, अपनी दक्षिणी दीवार पर पद्मप्रभा, पार्श्वनाथ और महावीर जैसे जैन तीर्थंकरों की बारीकी से की गई नक्काशी वाली है। निर्माण में ईंट का उपयोग करके गुप्त काल के दौरान चट्टान में कटी हुई सीढ़ी द्वारा पहुंचने के लिए एक ऊपरी मंजिल को जोड़ा गया था।

v. **जरासंध का अखाड़ा:**

महाभारत के अनुसार, जरासंध बृहद्रथ का पुत्र था और युद्ध में अपने असाधारण कौशल के लिए प्रसिद्ध था। यह सोन भंडार गुफाओं से लगभग 1.5 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है और एक संकीर्ण फुटपाथ के माध्यम से सुलभ है। इसे स्थानीय रूप से जरासंध के अखाड़ा या राणभूमि के रूप में जाना जाता है। इस स्थल को पारंपरिक रूप से युद्ध के मैदान के रूप में माना जाता है, जहां पांच पांडव भाइयों में से एक, भीम ने मगध के महान शासक जरासंध पर विजय प्राप्त की और उसे मार डाला, जो अट्ठाईस दिनों के गहन *मल्ल-युद्ध* (दोहरी लड़ाई) के बाद हुआ था।

vi. **बिम्बिसार जेल:**

संरक्षित संस्मारक मुख्य सड़क के किनारे मणियार मठ से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। इसे पारंपरिक रूप से उस जेल के रूप में जाना जाता है जहां राजा बिम्बिसार को उनके बेटे अजातशत्रु ने कैद किया था। बौद्ध पाली परंपरा के अनुसार इस जेल से बिम्बिसार ने अपनी अंतिम इच्छा को पूरा करते हुए गृद्धकूट पहाड़ी - बुद्ध के निवास को देखा।

vii. **जीवकामरा वन:**

इन संरचनात्मक अवशेषों की पहचान 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध परंपरा से जुड़े जीवकामरा वन मठ के रूप में की गई है। जिवक, राजा बिम्बिसार के प्रख्यात दरबारी चिकित्सक और हरियांका वंश के अजातशत्रु (544 ईसा पूर्व से 413 ईसा पूर्व)। पाली बौद्ध ग्रंथों के अनुसार बुद्ध की शिक्षाओं को अपनाने पर जिवक ने बौद्ध मठवासी समुदाय के उपयोग के लिए अपना आम का उपवन (*अमरवन*) दान किया।

viii. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण:**

पत्थर का घेरा दो मुख्य विशेषताओं से प्रतिष्ठित है। लगभग 30 फीट तक फैले हुए दो गहरे, समानांतर फरो चट्टान में तराशे गए हैं। महाभारत युग की एक प्रसिद्ध शख्सियत, बृहद्रथ वंश के जरासंध के साथ राजगीर के ऐतिहासिक जुड़ाव के कारण, स्थानीय परंपरा इन्हें भगवान कृष्ण के शक्तिशाली रथ पहिये के लिए जिम्मेदार ठहराती है। इन चिह्नों के बगल में शंख गोले के समान अलंकृत सर्पिल रूपांकन हैं। ये अपठित खोल शिलालेख, उत्तरी भारत में पाए जाते हैं, जो 4वीं से 9वीं शताब्दी ईस्वी तक के हैं।

ix. **नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

1847 में मेजर किट्टो ने टीले को संभावित पुरातनता के स्थल के रूप में पहचाना और इसे महत्वपूर्ण अवशेष रखने के लिए माना। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (1999-2001) द्वारा की गई खुदाई से एक कम मिट्टी के टीले के ऊपर एक दो-स्तरीय ईंट स्तूप का पता चला, जिसमें एक पत्थर से ढका कक्ष दाह संस्कार के बाद दफन का सबूत दे रहा था। चूने के प्लास्टर के अवशेषों के निशान भी पाए गए। संबद्ध पुरावशेषों और सिरेमिक टाइपोलॉजी के आधार पर मुख्य संरचना संभवतः प्रारंभिक मौर्य काल (324 ईसा पूर्व - 273 ईसा पूर्व) की है, जिसमें गुप्त काल (319 ईस्वी - 550 ईस्वी) के दौरान सीमित परिवर्धन है।

x. **गृद्धकूट स्तूप:**

गृद्धकूट, राजगीर में बुद्ध का पसंदीदा निवास कई उपदेशों का स्थान था। इस स्थल में दो प्राकृतिक गुफाएँ हैं जिनमें सीढ़ियों से जाया जा सकता है, जो प्राचीन मूल की विस्तृत पत्थर की दीवारों से बाहरी रूप से घिरी हुई हैं। ऊपर एक चौड़ा चबूतरा है जो काफी ईंटों और पत्थर के मंदिरों से सजाया गया है। पहाड़ी की चोटी का रास्ता दो स्तूपों से गुजरता है जैसा कि हुएन त्सांग ने उल्लेख किया है: पहला निशान जहां राजा बिम्बिसार अपने रथ से उतरे, दूसरा जहां उन्होंने बुद्ध के प्रवचन को सुनने के लिए भीड़ को निकाल दिया।

xi. **पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप:**

रत्नागिरी पहाड़ी पर स्तूप टीला, संभवतः मौर्य युग की तारीखें, सिरका तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व है। इस स्तूप को पारंपरिक रूप से सम्राट अशोक के संरक्षण के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जिसके शासनकाल में बौद्ध धर्म फला-फूला। परिनिब्बाण सुत्त के अनुसार, बुद्ध के अवशेषों का एक हिस्सा अजातशत्रु को दिया गया था और माना जाता है कि ये अवशेष इस स्तूप के नीचे हैं।

xii. **गिरियाक स्तूप:**

गिरियाक शिखर की पहचान बौद्ध ग्रंथों में उल्लिखित हंस मठ और स्तूप के साथ की गई है और चीनी तीर्थयात्रियों फा-हियान और ह्युएन त्सांग द्वारा जाना जाता है। स्तूप के बगल में प्रसाद के लिए एक ऊंचा चबूतरा है, जिसमें एक केंद्रीय कक्ष है जो बौद्ध पंथ और स्तूप रूपांकनों को धारण करने वाली मुहरों का है। 2010-11 के दौरान खुदाई से स्तूप और चबूतरा दोनों को शामिल करते हुए एक ईंट की बाड़े की दीवार का पता चला, जो स्थल के मठवासी और अनुष्ठान महत्व[1] की पुष्टि करती है।

3.4 संरक्षित संस्मारकों का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि):

i. **महादेव मंदिर:**

संरक्षित संस्मारक में आंतरिक रूप से लगभग 3.5 मीटर वर्ग का एक छोटा गर्भगृह (गर्भ-गृह) शामिल है। गर्भगृह में एक सपाट छत है और इसमें एक छोटा लिंग है, एक बिना सिर वाला बैल और एक लघु शिखर है। दरवाजे के बगल में दो महिला मूर्तियां और बर्तन तथा पत्ते के डिजाइन के साथ मूर्तिकला पत्थर के स्लैब हैं। इस गर्भगृह के सामने मूल रूप से एक मंडप खड़ा था, जिसमें से प्रत्येक पांच की छह पंक्तियों में व्यवस्थित ग्रेनाइट स्तंभ अभी भी खड़े हैं। बाड़े की दीवार स्तंभों को संरक्षित करने के लिए यह एक बाद का परिवर्धन है और निर्माण की दो अलग-अलग अवधि दिखाती है।

ii. **जैन मंदिर/मठ:**

संरक्षित संस्मारक एक ईंट-निर्मित संरचना है जिसमें पूर्व की ओर एक केंद्रीय कक्ष-उन्मुख और एक आंगन शामिल है। यह आंगन कोठरियों की एक श्रृंखला द्वारा सभी तरफ से घिरा हुआ है। केंद्रीय कक्ष और निकटवर्ती कक्ष दोनों दीवार के आलों से सुसज्जित हैं, जिसमें जैन मूर्तियां, विशेष रूप से पार्श्वनाथ, महावीर और संभवनाथ की मूर्तियां शामिल हैं। पूर्वी दीवार से सटी

[1]भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (पटना सर्कल) ।

हई प्रमुख संरचना से नीचे के स्तर पर एक सहायक कक्ष है, जिसमें उत्तरी दिशा में एक सीढ़ी द्वारा जाया जा सकता है। भीतर कुछ मूर्तियां हैं, जिनमें से एक नेमिनाथ का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे इसके आसन पर शंख-गोले की जोड़ी द्वारा दर्शाया गया है।

iii. **मणियार मठ:**

संरक्षित संस्मारक में एक खोखली बेलनाकार संरचना शामिल है, जिसका व्यास लगभग 3.00 मीटर है और इसका निर्माण 1.20 मीटर मोटाई की दोहरी परत वाली दीवार से किया गया है। बाहरी सतह को आलों की आकृतियों से सजाया गया है, जिसमें एक माला वाला लिंग, चार सशस्त्र ताज पहने विष्णु, नागा और नागी की मूर्तियां, गणेश सांपों और छह सशस्त्र नृत्य शिव से घिरे हुए हैं। कई सहायक संरचनाएं- वेदी, मंच और मंदिर धार्मिक और अनुष्ठान उपयोग के लिए बनाए गए प्रतीत होते हैं, जो स्पष्ट रूप से साँप पूजा से जुड़े हुए हैं, जैसा कि टेराकोटा सर्प हुड्स और मिट्टी के बर्तनों, कुछ साँप के हाथों के रूप में होने से पता चलता है।

iv. **सोन भंडार गुफाएं:**

आंतरिक रूप से गुफाएं योजना में आयताकार हैं, जिसमें एक निश्चित ऊंचाई तक ऊर्ध्वाधर दीवारें हैं, जो एक गुंबददार छत से घिरी हुई हैं। गुफाओं के सामने का आंगन, उनके बाहरी हिस्से पर दिखाई देने वाले बीम छेद के साथ, एक छत वाले बरामदे के उस समय का होने को इंगित करता है। निचले स्तर पर स्थित पूर्वी गुफा, जैन तीर्थंकरों-पद्मप्रभा, पार्श्वनाथ, महावीर की दक्षिणी दीवार पर बारीक नक्काशी को दर्शाती है। गुप्त काल के दौरान जोड़ी गई एक ऊपरी मंजिल का निर्माण ईंट में किया गया था और शैल-कृत सीढ़ी के माध्यम से पहुंच जा सकता था।

v. **जरासंध का अखाड़ा:**

चतुर्भुज पत्थर की संरचना, एक तरफ की सीढियों से पहुँचा जा सकता है, जिसमें विशिष्ट रूप से नरम, सफेद ब्लीच वाली मिट्टी है, जो आमतौर पर पारंपरिक कुश्ती मैदान या अखाड़ों में होती है।

vi. **बिम्बिसार जेल:**

संरक्षित संस्मारक योजना में वर्गाकार है और लगभग 60 वर्ग मीटर के क्षेत्र को कवर करता है, जो लगभग 2 मीटर मोटाई की पत्थर की दीवार से घिरा हुआ है, जिसमें प्रत्येक कोने पर गोलाकार अंडाकार आकृति हैं।

vii. **जीवकामरा वन:**

स्थल पर व्यापक पत्थर की चिनाई के खंडहर और मलबा पाए जाते हैं। खुदाई से एक विशिष्ट संरचनात्मक पैटर्न का पता चला है जिसमें आयताकार कक्षों से घिरे अण्डाकार हॉल शामिल हैं।

viii. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण:**

बाड़े में "शैल" पात्रों में कई शिलालेख शामिल हैं, साथ ही कई प्राचीन गाड़ी या रथ के पहिये चट्टानी जमीन पर गहराई से प्रभाव डालते हैं।

ix. **नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

1999 और 2001 के बीच भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा की गई खुदाई में कम मिट्टी के टीले पर बनाए गए दो स्तरीय ईंट के स्तूप का पता चला। इस संरचना में दाह संस्कार के बाद दफन प्रथाओं से जुड़ा एक पत्थर से ढका कक्ष शामिल है। स्तूप के एक तरफ पाए जाने वाले साबुन बनाने के पत्थर के ताबूत के टुकड़े विशेष महत्व के थे, जबकि विपरीत दिशा में एक डाकू की खाई देखी गई थी। निचली छत 29 मीटर लम्बी और 25 मीटर चौड़ी है तथा लगभग 2 मीटर ऊंची है। ऊपरी छत में एक अर्धवृत्ताकार कक्ष और कई आयताकार या चौकोर ईंट के कक्ष होते हैं, जिनमें से कुछ चूने के प्लास्टर के निशान बनाए रखते हैं।

x. **गृद्धकूट स्तूप:**

सात अतीत के बुद्ध और मैत्रेय - भविष्य के बुद्ध को दर्शाने वाले कई टेराकोटा पट्टे, प्रत्येक आकृति के नीचे अंकित बौद्ध पंथ के साथ दो पंक्तियों में बैठे थे, एक गुफा के भीतर पाए गए थे। गुफाओं से सटी प्राचीन संरचनाओं की अधिकांश पत्थर की दीवारें खड़ी हैं। आगे की ओर एक चौड़ा चबूतरा है जिसमें कई ईंट और पत्थर के मंदिर हैं। गृद्धकूट पहाड़ी की चोटी की ओर जाने वाला मार्ग दो स्तूपों द्वारा चिह्नित है।

xi. **पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप:**

संरचना योजना में गोलाकार है, जिसके ऊपर एक स्तूप का संकेत देने वाला ईंट का टीला है। ऐसा प्रतीत होता है कि ईंटें और गारे के उपयोग के बिना बनाई गई थीं, एक को दूसरे के ऊपर सूखी चिनाई में रखा गया था।

xii. **गिरियाक स्तूप:**

स्तूप में एक ठोस बेलनाकार ईंट टॉवर होता है, जिसकी ऊंचाई 7 मीटर और व्यास 9.5 मीटर होती है, जिसमें चूने के प्लास्टर के अवशेष सजावटी डिजाइन होते हैं। टॉवर एक चौकोर मंच पर स्थित है, जो चारों तरफ मोल्डिंग और आलों से सुसज्जित है। एक तरफ एक अलग चबूतरा है, जिसे अनुष्ठान प्रसाद के लिए ऊंचा उठाया गया है, जिसमें एक केंद्रीय कक्ष है जिसमें बौद्ध पंथ और स्तूपों के चित्रण के साथ अंकित कई मुहरें हैं। 2010-11 की खुदाई के दौरान, एक ईंट के बाड़े की दीवार का पता लगाया गया था, जिसमें स्तूप और आसपास के चबूतरे[2] दोनों शामिल थे।

3.5 वर्तमान स्थिति:

3.5.1 संरक्षित संस्मारकों की स्थिति - स्थिति आकलन:

संरक्षित संस्मारकों का रखरखाव और संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) का विशेष अधिकार क्षेत्र है। संरक्षित संस्मारकों की वर्तमान स्थिति को दर्शाने वाले चित्र **अनुलग्नक-V** में संलग्न हैं।

[2]भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (पटना सर्कल) ।

3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या:

i. **महादेव मंदिर:**

सावन के दौरान 2000 आगंतुक प्रतिदिन, अन्यथा सामान्य दिनों में 10-20 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

ii. **जैन मंदिर/मठ:**

सावन के दौरान 2000 आगंतुक प्रतिदिन, अन्यथा सामान्य दिनों में 10-20 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

iii. **मणियार मठ:**

गर्मियों में 100-150 आगंतुक प्रतिदिन, जबकि सर्दियों में 500-600 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

iv. **सोन भंडार गुफा:**

गर्मियों में 100-150 आगंतुक प्रतिदिन, जबकि सर्दियों में 500-600 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

v. **जरासंध का अखाड़ा:**

75-80 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

vi. **बिम्बिसार जेल:**

नियमित दिनों में 50-75 आगंतुक प्रतिदिन, जबकि सर्दियों में 100-150 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

vii. **जीवकामरा वन:**

लगभग 50 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

viii. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण:**

सामान्य दिनों में 50-60 आगंतुक प्रतिदिन, जबकि सर्दियों में 100-150 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

ix. **नए उत्खनित स्तूप (वन गंगा स्तूप):**

सामान्य दिनों में आगंतुक 50-60 प्रतिदिन, जबकि सर्दियों में 100-150 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

x. **गृद्धकूट स्तूप:**

सामान्य दिनों में 50-60 आगंतुक प्रतिदिन, जबकि सर्दियों में 400-500 आगंतुक प्रतिदिन आते है।

xi. **पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप:**

खड़ी झाड़ियों से ढके पहुंच रास्ते और संकेतों के नहीं होने के कारण कोई आगंतुक नहीं है।

xii. **गिरियाक स्तूप:**

केवल 5-7 आगंतुक प्रतिमाह आते हैं।

महादेव मंदिर (संरक्षित संस्मारक), वेणु वन में माघ पूजा, राजगीर महोत्सव (नवंबर-दिसंबर) और मलमास मेला (तीन साल में एक बार, जुलाई-अगस्त) में महा शिवरात्रि का त्योहार आसपास के क्षेत्रों से अतिरिक्त आगंतुकों को आकर्षित करता है, जिससे दैनिक पदयात्रा[3] करने वालों की काफी वृद्धि होती है।

[3] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (पटना सर्किल) ।

अध्याय - 4

स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो

4.1 मौजूदा ज़ोनिंग:

स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा आज तक कोई ज़ोनिंग विनियम या मास्टर प्लान तैयार नहीं किया गया है। संरक्षित संस्मारक 'नगर परिषद राजगीर' के अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

संरक्षित संस्मारकों के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के हिस्से नालंदा वन प्रभाग के अधिकार क्षेत्र में आते हैं, जो बिहार पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग का एक भाग है।

4.2 स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश:

"बिहार भवन उप-नियम, 2014", में निर्दिष्ट अन्य सभी विकास नियंत्रण मानदंड और भवन विनियम, जब भी संशोधित होंगे, लागू होंगे। **अनुलग्नक-IV देखें**

अध्याय - 5

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख (रिकार्ड) में परिभाषित सीमाओं के आधार पर प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों की प्रथम अनुसूची नियम 21 (1) / सर्वेक्षण योजना के अनुसार सूचना

5.1 संरक्षित संस्मारकों की सर्वेक्षण योजना:

उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार की सर्वेक्षण योजना **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती है।

5.2 सर्वेक्षित आंकड़ों का विश्लेषण:

5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण:

i. **महादेव मंदिर और जैन मंदिर/मठ:**

दोनों संरक्षित संस्मारकों का प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 62,945 वर्ग मीटर है।

दोनों संरक्षित संस्मारकों का विनियमित क्षेत्र लगभग 3,08,777 वर्ग मीटर है।

ii. **मणियार मठ और सोन भंडार गुफा:**

मणियार मठ का प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 54,074 वर्ग मीटर है।

सोन भंडार गुफा का प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 47,391 वर्ग मीटर है।

दोनों संरक्षित संस्मारकों का विनियमित क्षेत्र लगभग 5,68,408 वर्ग मीटर है।

iii. **जरासंध का अखाड़ा:**

प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 43,545 वर्ग मीटर है।

विनियमित क्षेत्र लगभग 2,75,915 वर्ग मीटर है।

iv. **बिम्बिसार जेल और जीवकामरा वन:**

बिम्बिसार जेल का प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 47,452 वर्ग मीटर है।

जीवाकामरा वन का प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 59,096 वर्ग मीटर है।

दोनों संरक्षित संस्मारकों का विनियमित क्षेत्र लगभग 5,93,168 वर्ग मीटर है।

v. **रथ के पहिये का निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 1,37,199 वर्ग मीटर है।

विनियमित क्षेत्र लगभग 4,64,275 वर्ग मीटर है।

vi. **गृद्धकूट स्तूप और पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी स्तूप:**

गृद्धकूट स्तूप का प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 34,631 वर्ग मीटर है।

पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी के स्तूप का प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 35,772 वर्ग मीटर है।

दोनों संरक्षित संस्मारकों का विनियमित क्षेत्र लगभग 5,79,270 वर्ग मीटर है।

vii. **गिरियाक स्तूप:**

प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 38,401 वर्ग मीटर है।

विनियमित क्षेत्र लगभग 2,64,963 वर्ग मीटर है।

5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण:

प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र:

1. **महादेव मंदिर और जैन मंदिर/मठ:**

   i. **उत्तर:**

   प्रतिषिद्ध क्षेत्र में दो जैन मंदिर और उत्तर-पश्चिम की ओर संरक्षित संस्मारक-सप्तपर्णी गुफाएं मौजूद हैं। उत्तर-पूर्व की ओर विनियमित क्षेत्र में एक जैन मंदिर मौजूद है।

   ii. **पूर्व:**

   प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है, हालांकि विनियमित क्षेत्र में एक जैन मंदिर मौजूद है।

   iii. **दक्षिण और पश्चिम:**

   प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

2. **मणियार मठ:**

   i. **उत्तर:**

   प्रतिषिद्ध क्षेत्र में कोई निर्माण मौजूद नहीं है। उत्तर-पूर्व की ओर जय प्रकाश उद्यान के भीतर विभिन्न संरचनाएं विनियमित क्षेत्र में स्थित हैं।

   ii. **पूर्व:**

   प्रतिषिद्ध क्षेत्र में जय प्रकाश उद्यान के भीतर विभिन्न संरचनाएं शामिल हैं। विनियमित क्षेत्र में कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

iii. **दक्षिण:**

प्रतिषिद्ध क्षेत्र में कोई निर्माण मौजूद नहीं है। विनियमित क्षेत्र में राजगीर वन्यजीव सफारी के भीतर विभिन्न संरचनाएं मौजूद हैं।

iv. **पश्चिम:**

प्रतिषिद्ध क्षेत्र में कोई निर्माण मौजूद नहीं है। विनियमित क्षेत्र में राजगीर वन्यजीव सफारी की चारदीवारी शामिल है।

3. **सोन भंडार गुफाएं:**

i. **उत्तर:**

उत्तर-पूर्व की ओर वन विभाग द्वारा निर्मित कुछ संरचनाएं, एक पुराने टेलीफोन एक्सचेंज और टॉवर के साथ प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं।

ii. **पूर्व और पश्चिम:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

iii. **दक्षिण:**

दक्षिण-पश्चिमी दिशा में वन विभाग द्वारा निर्मित फार्महाउस सहित कई संरचनाएं प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं। राजगीर वन्यजीव सफारी की चारदीवारी विनियमित क्षेत्र के भीतर दक्षिण की ओर स्थित है।

4. **जरासंध का अखाड़ा:**

i. **उत्तर और पश्चिम:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

ii. **पूर्व:**

राजगीर वन्यजीव सफारी की सीमा दीवार प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर है, जबकि सफारी के भीतर कई संरचनाएं विनियमित क्षेत्र में स्थित हैं।

iii. **दक्षिण:**

राजगीर वन्यजीव सफारी की चारदीवारी प्रतिषिद्ध और विनियमित दोनों क्षेत्रों में स्थित है।

5. **बिम्बिसार जेल:**

i. **उत्तर, पूर्व और दक्षिण:**

कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

ii. **पश्चिम:**

राजगीर वन्यजीव सफारी का एक हिस्सा, जिसमें चारदीवारी और संरचनाएं शामिल हैं, विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थित है।

6. **जीवकामरा वन:**

i. **उत्तर, पूर्व और दक्षिण:**

कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

ii. **पश्चिम:**

एक संरचना विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थित है।

7. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

i. **उत्तर:**

प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है। जैन मंदिर और कई संरचनाएं विनियमित क्षेत्र के भीतर उत्तर-पूर्व में स्थित हैं।

ii. **पूर्व:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

iii. **दक्षिण:**

एक और संरक्षित संस्मारक - साइक्लोपियन दीवार और माँ दुर्गा मंदिर प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर स्थित हैं। कुछ निर्माण विनियमित क्षेत्र के भीतर मौजूद हैं।

iv. **पश्चिम:**

एक जैन समाधि प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर स्थित है, जबकि विनियमित क्षेत्र के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

8. **गृद्धकूट स्तूप:**

i. **उत्तर:**

छोटे मंदिर और शेड प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर स्थित हैं। विश्व शांति स्तूप का एक हिस्सा, एक छोटे स्तूप के साथ, विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थित है।

ii. **पूर्व:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

iii. **दक्षिण:**

शेड प्रतिषिद्ध और विनियमित दोनों क्षेत्रों के भीतर दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित हैं।

iv. **पश्चिम:**

प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है, हालांकि एक चालू रोपवे विनियमित क्षेत्र से गुजरता है।

9. **पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप:**

रत्नागिरी पहाड़ी के ऊपर होने के कारण किसी भी कार्डिनल दिशा में कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

10. **गिरियाक स्तूप:**

रत्नागिरी पहाड़ी के ऊपर होने के कारण किसी भी कार्डिनल दिशा में कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण:

प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र:

1. **महादेव मंदिर और जैन मंदिर/मठ:**

इन दोनों संरक्षित संस्मारकों के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र सभी दिशाओं में घनी वनस्पति के साथ वन क्षेत्र और पहाड़ी इलाके से घिरे हुए हैं।

2. **मणियार मठ:**

i. **उत्तर:**

वन क्षेत्र, जय प्रकाश उद्यान के भीतर पेड़ों और तालाबों के साथ खुले स्थान प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर हैं।

ii. **पूर्व:**

जय प्रकाश उद्यान का एक हिस्सा, जिसमें पेड़ों और वन क्षेत्र के साथ खुले स्थान शामिल हैं, प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित है।

iii. **दक्षिण और पश्चिम:**

राजगीर वन्यजीव सफारी और वन क्षेत्र के भीतर खुले स्थान प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं।

3. **सोन भंडार गुफाएं:**

i. **उत्तर:**

वैभारगिरी पहाड़ी और आसपास के वन क्षेत्र प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं।

ii. **पूर्व:**

पहाड़ी इलाके और वन क्षेत्र प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं।

iii. **दक्षिण:**

वन क्षेत्र, एक बरसाती नाला और राजगीर वन्यजीव सफारी के भीतर खुले स्थान प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं।

iv. **पश्चिम:**

वैभारगिरी पहाड़ी और आसपास का वन क्षेत्र प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित है।

4. **जरासंध का अखाड़ा:**

i. **उत्तर:**

वैभारगिरि पहाड़ी, आसपास के वन क्षेत्र के साथ, प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित है।

ii. **पूर्व और दक्षिण:**

राजगीर वन्यजीव सफारी के भीतर वन क्षेत्र और खुले स्थान प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं।

iii. **पश्चिम:**

वैभारगिरि पहाड़ी, आसपास के वन क्षेत्र के साथ, प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित है।

5. **बिम्बिसार जेल:**

i. **उत्तर:**

पहाड़ी इलाके और घने वन प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं। एक तालाब उत्तर-पूर्व की ओर विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थित है।

ii. **पूर्व:**

घना वन प्रतिषिद्ध और विनियमित दोनों क्षेत्रों में स्थित है।

iii. **दक्षिण:**

पहाड़ी इलाके और घने वन प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं।

iv. **पश्चिम:**

घना वन प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर स्थित है, जबकि राजगीर वन्यजीव सफारी के खुले स्थान और वन क्षेत्र विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थित हैं।

6. **जीवकामरा वन:**

घना वन प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों की सभी कार्डिनल दिशाओं में स्थित है, जबकि एक तालाब उत्तर-पश्चिम की ओर विनियमित क्षेत्र में स्थित है।

7. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

पहाड़ी इलाके और घने वन प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर उत्तर, पूर्व और दक्षिण में स्थित हैं, जबकि घने वन भी प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर पश्चिम में मौजूद हैं।

8. **गृद्धकूट स्तूप:**

प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर उत्तर-पूर्व और पश्चिम में दो बरसाती नाले मौजूद हैं। घने वन और पहाड़ी इलाके प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर सभी कार्डिनल दिशाओं में स्थित हैं।

9. **पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप:**

घने वन और पहाड़ी इलाके प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर सभी कार्डिनल दिशाओं में स्थित हैं।

5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि:

संरक्षित संस्मारक एक अच्छी तरह से जुड़े सड़क नेटवर्क से घिरे हुए हैं जो प्रतिषिद्ध और विनियमित दोनों क्षेत्रों तक पहुंच प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग 120 (राजगीर-नालंदा राजमार्ग) दक्षिण से पहुंच प्रदान करता है और उत्तर और पूर्व में फैला हुआ है, जो संरक्षित संस्मारकों के परिवेश को जोड़ने वाली विभिन्न सड़कों और मार्गों को एक दूसरे के साथ काटती है।

5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई:

प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र:

1. **महादेव मंदिर और जैन मंदिर/मठ:**

   i. **उत्तर और पूर्व:**

   भवनों की ऊँचाई भूतल तक है।

   ii. **दक्षिण और पश्चिम:**

   प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

2. **मणियार मठ:**

   i. **उत्तर और पूर्व:**

   भवन की ऊंचाई जी से जी+1 मंजिलों तक होती है।

ii. **दक्षिण और पश्चिम:**

इमारत की ऊंचाई भूतल तक है।

3. **सोन भंडार गुफाएं:**

i. **उत्तर और दक्षिण:**

भवन की ऊंचाई जी से जी+1 मंजिलों तक है।

ii. **पूर्व और पश्चिम:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

4. **जरासंध का अखाड़ा:**

i. **उत्तर और दक्षिण:**

भवन की ऊंचाई जी से जी+1 मंजिलों तक है।

ii. **पूर्व और पश्चिम:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

5. **बिम्बिसार जेल:**

i. **उत्तर, पूर्व और दक्षिण:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

ii. **पश्चिम:**

इमारतों की ऊंचाई भूतल तक है।

6. **जीवकामरा वन:**

i. **उत्तर, पूर्व और दक्षिण:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

ii. **पश्चिम:**

भवन की ऊंचाई जी से जी+1 मंजिलों तक है।

7. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

i. **उत्तर, दक्षिण और पश्चिम:**

इमारतों की ऊंचाई भूतल तक है।

ii. **पूर्व:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

8. **गृद्धकूट स्तूप:**

i. **उत्तर:**

भवन की ऊंचाई जी से जी+1 मंजिलों तक होती है।

ii. **पूर्व और पश्चिम:**

प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

iii. **दक्षिण:**

इमारतों की ऊंचाई भूतल तक है।

9. **पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप और गिरियाक स्तूप:**

पहाड़ी की सबसे ऊंची चोटी के ऊपर इसकी स्थिति के कारण किसी भी मुख्य दिशा में कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

5.2.6 प्रतिषिद्ध/विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा राज्य संरक्षित संस्मारकों और सूचीबद्ध धरोहर भवन, यदि उपलब्ध हों:

संरक्षित संस्मारकों के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में अभी तक कोई राज्य संरक्षित संस्मारक या स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा सूचीबद्ध अन्य विरासत भवन नहीं बताए गए हैं।

5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं:

पेयजल, रैम्प, सार्वजनिक सुविधाएं और बैठने की जगह सहित सार्वजनिक सुविधाएं मौजूद हैं।

5.2.8 संरक्षित संस्मारकों तक पहुंच:

i. **महादेव मंदिर और जैन मंदिर/मठ:**

संरक्षित संस्मारक घने वन के बीच वैभारगिरि पहाड़ी के ऊपर स्थित हैं और सप्तपर्णी गुफा मार्ग से पहुंचा जा सकता है, जिसमें लगभग 560 कदम शामिल हैं।

ii. **मणियार मठ:**

यह संरक्षित संस्मारक राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) के पश्चिम में स्थित है और स्वर्ण भंडार (सोन भंडार) सड़क से पहुंचा जा सकता है, जो एक पक्की सड़क है।

iii. **सोन भंडार गुफाएं:**

गुफाएं राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) के पूर्व में स्थित हैं और स्वर्ण भंडार (सोन भंडार) सड़क से पहुंचा जा सकता है, जो राजमार्ग (एनएच-120) से भी जुड़ी हुई है।

iv. **जरासंध का अखाड़ा:**

संरक्षित संस्मारक स्वर्ण भंडार (सोन भंडार) सड़क के उत्तर-पूर्व में स्थित है और इससे जुड़ी एक अनपैव्ड (*कच्चा*) सड़क से पहुंचा जा सकता है।

v. **बिम्बिसार जेल:**

संरक्षित संस्मारक राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) के पूर्व में स्थित है और इससे जुड़ी एक अनपैव्ड (*कच्चा*) सड़क से पहुंचा जा सकता है।

vi. **जीवकामरा वन:**

संरक्षित संस्मारक शांति स्तूप सड़क के उत्तर में स्थित है और इससे सीधे पहुंचा जा सकता है।

vii. **रथ पहिये के निशान, शैल वर्ण और और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

ये संरक्षित संस्मारक राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) के पूर्व में स्थित हैं और राजमार्ग से सीधे सुलभ हैं।

viii. **गृद्धकूट स्तूप:**

संरक्षित संस्मारक रत्नागिरी पहाड़ी पर स्थित है और गुफा में सीढ़ियों से पहुंचा जा सकता है, जो शांति स्तूप ट्रेल (दक्षिण-पश्चिम) से जुड़ती है, जो आगे राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) से जुड़ी हुई है।

ix. **पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप:**

संरक्षित संस्मारक रत्नागिरी पहाड़ी पर स्थित है और गृद्धकूट के लिए उपयोग किए जाने वाले उसी रास्ते को जारी रखते हुए पहुंचा जाता है, जो मिट्टी के स्तूप तक ऊपर की ओर फैला हुआ है।

x. **गिरियाक स्तूप:**

संरक्षित संस्मारक रत्नागिरी पहाड़ी के पूर्व में स्थित है और बिहार-मोकामा रोड से एक *कच्चा* रोड के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। मार्ग में लगभग 350 कदम शामिल हैं, इसके बाद अंतराल पर पत्थर की सीढ़ियों के साथ एक लंबा रास्ता है जो सीधे गिरियाक स्तूप की ओर जाता है।

5.2.9 अवसंरचनात्मक सेवाएं (जल आपूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पार्किंग आदि):

जल आपूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज, कूड़ेदान और पार्किंग उपलब्ध हैं।

5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित ज़ोनिंग:

किसी भी मौजूदा स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा कोई विकास योजना तैयार नहीं की गई है और न ही उसे सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध कराया गया है, इसलिए वर्तमान में कोई ज़ोनिंग प्रस्तावित नहीं है।

अध्याय - 6

संरक्षित संस्मारकों की वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व

6.1 वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व:

वास्तुकला महत्व:

राजगीर में संरक्षित संस्मारक कई शताब्दियों तक फैली वास्तुशिल्प शैलियों के एक उल्लेखनीय संगम का उदाहरण देते हैं, जो हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म की धार्मिक परंपराओं को दर्शाते हैं। स्थापत्य रूप से, महादेव मंदिर, अपने मामूली गर्भगृह (*गर्भ-गृह*), ग्रेनाइट स्तंभ तथा ईंट और पत्थर के संयोजन के साथ, प्रारंभिक मध्ययुगीन मंदिर निर्माण का प्रतिनिधित्व करता है। जैन मंदिर/मठ उन्नत ईंट चिनाई और स्थानिक योजना का प्रदर्शन करता है, जिसमें धार्मिक मूर्तियों वाली प्रकोष्ठों से घिरे एक केंद्रीय पूर्व के चेहरे वाले कक्ष की विशेषता है। मणियार मठ अपनी खोखली बेलनाकार संरचना से प्रतिष्ठित है, जिसमें दोहरी परत वाली दीवारें हैं, जो गुप्त-काल की कलात्मक और धार्मिक अभिव्यक्ति के संकेत वाली गचकारी आकृतियों से सुशोभित हैं। चट्टान में काटी गई सोन भंडार गुफाएं जैन आइकनोग्राफी और गुप्त-युग के विस्तार के मिश्रण को दर्शाती हैं, जो गुंबददार छतों और बारीक नक्काशीदार संविशेषता है। वन गंगा स्तूप और गिरियाक स्तूप सहित ईंट के स्तूप, प्रारंभिक मौर्य और गुप्त अंत्येष्टि वास्तुकला का प्रदर्शन करते हैं, जिसमें सीढ़ीदार मंच, अर्धवृत्ताकार कक्ष और सजावटी चूना प्लास्टरवर्क होता है, जो विकसित निर्माण तकनीकों और अनुष्ठान महत्व को दर्शाता है।

ऐतिहासिक महत्व:

ऐतिहासिक रूप से ये संरक्षित संस्मारक प्राचीन मगध के जीवंत सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य का पर्याप्त प्रमाण प्रदान करते हैं। वैभारगिरी पहाड़ी पर महादेव मंदिर और जैन मंदिर कई शताब्दियों तक निरंतर पूजा के प्रमाण देते हैं और जरासंध और ह्युएन त्सांग जैसे चीनी तीर्थयात्रियों द्वारा दर्ज प्रारंभिक जैन तपस्वियों जैसी पौराणिक हस्तियों से जुड़े हुए हैं। मणियार मठ और सोन भंडार गुफाएं मौर्य से गुप्त काल तक धार्मिक प्रतिमा विज्ञान और प्रथाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। जरासंध का अखाड़ा जैसे संरक्षित संस्मारक महाभारत के महाकाव्य आख्यानों से जुड़ी मार्शल परंपराओं को संरक्षित करते हैं, जबकि बिम्बिसार जेल बौद्ध इतिहास से जुड़ी हुई है, विशेष रूप से राजा बिम्बिसार के कारावास । जीवकामरा वन प्रारंभिक बौद्ध संघ से जुड़ी प्रमुख ऐतिहासिक शख्सियतों के संरक्षण का प्रतिनिधित्व करती है। सामूहिक रूप से ये संरक्षित संस्मारक प्राचीन बिहार में पौराणिक कथाओं, धार्मिक इतिहास और वंशवादी विकास के बीच एक जटिल परस्पर क्रिया को प्रकट करते हैं।

पुरातात्विक महत्व:

पुरातात्विक रूप से संरक्षित संस्मारकों से प्राचीन निर्माण पद्धतियों, धार्मिक प्रतीकवाद और निपटान पैटर्न पर अमूल्य जानकारी मिलती है। वन गंगा स्तूप में खुदाई ने मौर्य काल से संबंधित दो स्तरीय ईंट संरचना का खुलासा किया है, बाद में गुप्त परिवर्धन के साथ, सिरेमिक टाइपोलॉजी और रेलिक कक्षों द्वारा पुष्टि की गई है। मणियार मठ और सोन भंडार गुफाओं के शिलालेख और मूर्तिकला तत्व प्रारंभिक मूर्तिकला परंपराओं और धार्मिक प्रतीकवाद की समझ में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शैल शिलालेख और रथ के पहिये के निशान क्षेत्र की पौराणिक ऐतिहासिक

परंपराओं से संबंधित दुर्लभ एपिग्राफिक साक्ष्य प्रदान करते हैं। गृधकूट से जीवकामरा वन और टेराकोटा पट्टियों के खंडहर मठवासी वास्तुकला और बौद्ध भक्ति कला के ज्ञान को और बढ़ाते हैं।

6.2 संरक्षित संस्मारकों की संवेदनशीलता (विकासात्मक दबाव, शहरीकरण, जनसंख्या दबाव, आदि):

मणियार मठ, बिम्बिसार जेल, रथ पहिये के निशान शैल वर्ण और वन गंगा स्तूप सहित राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) के साथ स्थित संरक्षित संस्मारक बुनियादी ढांचे के दबाव से तेजी से प्रभावित हो रहे हैं। मणियार मठ के प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर नियोजित कॉलम सहित ऊंची सड़कों के प्रस्ताव विरासत ताने-बाने के लिए सीधे खतरे पैदा करते हैं। पर्यटन से संबंधित निर्माण जैसे मनोरंजक पार्क, वन्यजीव सफारी और सार्वजनिक सुविधाएं आस-पास स्थापित की गई हैं, जिससे आसपास की पारंपरिक विशेषता में खलल पड़ रहा है।

शांति स्तूप सड़क, जो राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) को पास के विरासत स्थलों से जोड़ती है, संरक्षित संस्मारक- जीवाकामरा वन से गुजरती है, जो प्रभावी रूप से इसे दो भागों में विभाजित करती है। यह संरेखण न केवल संरक्षित संस्मारक की स्थानिक निरंतरता से समझौता करता है, बल्कि विरासत-संवेदनशील योजना और दृष्टिकोण की अनुपस्थिति को भी दर्शाता है। गृद्धकूट स्तूप के प्राचीन पत्थर के मार्ग को समकालीन फर्श सामग्री से ढक दिया गया है, जिससे संरक्षित संस्मारक की प्रामाणिकता प्रभावित हुई है।

जरासंध का अखाड़ा के आसपास सफारी वाहनों की निरंतर आवाजाही स्थल की स्थिरता और पर्यावरण के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है।

इसके अलावा, सतह पर खुदे हुए खोल के पात्र सतह पर पर्यटक आवाजाही के कारण अत्यधिक अतिसंवेदनशील होते हैं। नतीजतन, उन्हें पहचानना मुश्किल हो गया है और वे लगातार दृश्यता खो रहे हैं।

राजगीर पहाड़ियों में अवैध खनन ने ढलानों को कमजोर कर दिया है, जिससे पहाड़ियों की चोटियों और तलहटी में स्थित संरक्षित संस्मारकों की स्थिरता को खतरा है। उचित संकेत और सूचनात्मक प्रदर्शन की अनुपस्थिति ने सार्वजनिक अजागरूकता, अनजाने में क्षति और अतिक्रमण की संभावना में वृद्धि की है। ये दबाव सामूहिक रूप से इन संरक्षित संस्मारकों के संरक्षण और महत्व दोनों को खतरे में डालते हैं।

6.3 संरक्षित संस्मारकों या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

i. महादेव मंदिर और जैन मंदिर/मठ:

संरक्षित संस्मारकों से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक वैभारगिरि पहाड़ी की चोटी पर स्थित हैं। उत्तर की ओर, इमारतों और निर्माण कार्यों के साथ राजगीर शहर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अन्य दिशाओं में, दृश्य में जैन मंदिर और राजगीर पहाड़ियाँ शामिल हैं, जो घने वन और प्राकृतिक वनस्पति से ढकी हुई हैं।

विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

खंडित मंदिर ऊंचाई में कम हैं और विनियमित क्षेत्र से दिखाई नहीं दे रहे हैं। यह क्षेत्र घनी वनस्पति से ढका हुआ है, जो संरचनाओं के दृश्य को बाधित करता है।

ii. **मणियार मठ:**

संरक्षित संस्मारक से दृश्यता:

राजगीर पहाड़ियाँ, घने वन और वनस्पति संरक्षित संस्मारक से सभी दिशाओं में दिखाई देती हैं।

विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक पहुंच सड़कों से आंशिक रूप से दिखाई देता है।

iii. **सोन भंडार गुफाएं:**

संरक्षित संस्मारक से दृश्यता:

यह संरक्षित संस्मारक वैभारगिरि पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। राजगीर पहाड़ियाँ, वन विभाग की काटेज और घने वन संरक्षित संस्मारक से दिखाई दे रहे हैं।

विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक दक्षिण से दिखाई देता है, जबकि घनी वनस्पति अन्य सभी दिशाओं में दृश्य को कवर करती है।

iv. **जरासंध का अखाड़ा:**

संरक्षित संस्मारक से दृश्यता:

यह संरक्षित संस्मारक वैभारगिरि पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। राजगीर वन्यजीव सफारी, राजगीर पहाड़ियाँ और घनी वनस्पति संरक्षित संस्मारक से दिखाई दे रही हैं।

विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक दक्षिण से आंशिक रूप से दिखाई देता है।

v. **बिम्बिसार जेल और जीवकामरा वन:**

संरक्षित संस्मारकों से दृश्यता:

राजगीर पहाड़ियाँ और घना वन संरक्षित संस्मारक से सभी दिशाओं में दिखाई देते हैं।

विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक घने वन द्वारा छुप गए हैं तथा प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई नहीं देते हैं।

vi. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

संरक्षित संस्मारकों से दृश्यता:

राजगीर पहाड़ियाँ और घना वन संरक्षित संस्मारक से सभी तरफ दिखाई देते हैं। राजगीर-नालंदा राजमार्ग (एनएच-120) संरक्षित संस्मारक की पश्चिमी सीमा से सटा हुआ है।

विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई नहीं दे रहे हैं। यह आंशिक रूप से तभी दिखाई देता है जब पहुंच रोड के करीब हो।

vii. **गृद्धकूट स्तूप और पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी स्तूप:**

संरक्षित संस्मारकों से दृश्यता:

राजगीर पहाड़ियाँ और घना वन संरक्षित संस्मारक के सभी तरफ से दिखाई देते हैं। विश्व शांति स्तूप आंशिक रूप से दिखाई देता है।

विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक गृद्धकूट पहाड़ी पर स्थित हैं और प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों से आंशिक रूप से दिखाई देते हैं।

viii. **गिरियाक स्तूप:**

संरक्षित संस्मारक से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक से, राजगीर पहाड़ियाँ, घने वन, आस-पास के गाँव के विशाल कृषि मैदान, गंगा जल जलाशय बांध और पूर्व की ओर बहने वाली पंचान नदी दिखाई दे रही हैं।

विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

यह संरक्षित संस्मारक पहाड़ी पर स्थित है और प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देता है।

6.4 भूमि उपयोग:

मौजूदा भूमि उपयोग में आवासीय, धार्मिक, मनोरंजन, सार्वजनिक/अर्ध-सार्वजनिक, कृषि और वन क्षेत्र शामिल हैं।

6.5 संरक्षित संस्मारकों के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर अवशेष:

संरक्षित संस्मारकों के अतिरिक्त, संरक्षित संस्मारकों के निकटवर्ती क्षेत्र में कई अन्य पुरातात्विक धरोहर अवशेष, जिनमें टीले, पत्थर की संरचनाएं, पुराने तालाब और प्राचीन किलेबंदी शामिल हैं, पाए जा सकते हैं।

6.6 सांस्कृतिक परिदृश्य:

राजगीर के संरक्षित संस्मारक सामूहिक रूप से धार्मिक परंपराओं और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच निरंतर आदान-प्रदान द्वारा आकार दिए गए एक समृद्ध सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। वैभारगिरी, गृद्धकूट और गिरियाक की पवित्र पहाड़ियों में फैले ये संरक्षित संस्मारक जिनमें प्राचीन मंदिर, स्तूप, मठ, गुफाएं, शिलालेख और अनुष्ठान स्थान शामिल हैं - इस क्षेत्र में हिंदू, बौद्ध और जैन की उपस्थिति की ऐतिहासिक गहराई को दर्शाते हैं। महादेव मंदिर, जैन मठ, गृद्धकुट स्तूप, सोन भंडार गुफाएं और जीवकामरा वन जैसी संरचनाएं प्राकृतिक इलाके के भीतर सोच-समझकर अंतर्निहित होती हैं, जो अक्सर मौजूदा चट्टान संरचनाओं, पहाड़ी ढलानों और आध्यात्मिक तथा कार्यात्मक उद्देश्यों के लिए ऊंचाई पर होने का उपयोग करती हैं। आसपास की

विशेषताएं, जैसे घने वन कवर, कृषि मैदान, प्राकृतिक परिदृश्य को बढ़ाते हैं और संरक्षित संस्मारकों के ऐतिहासिक महत्व को बढ़ाते हैं। साथ में ये तत्व पूजा, तीर्थयात्रा और भूमि के साथ पवित्र संबंध की स्थायी परंपराओं को प्रतिबिंबित करना जारी रखते हैं।

6.7 महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य जो सांस्कृतिक परिदृश्य का हिस्सा बनते हैं और संरक्षित संस्मारकों को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने में भी मदद करते हैं:

संरक्षित संस्मारकों के आसपास का प्राकृतिक परिदृश्य उनके सांस्कृतिक परिदृश्य का अभिन्न अंग है और पर्यावरण प्रदूषण से उनकी सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देता है। राजगीर पहाड़ियाँ न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व रखती हैं, बल्कि शहरी फैलाव, वाहनों के उत्सर्जन और धूल बढने के विरूद्ध प्राकृतिक बाधाओं के रूप में भी काम करती हैं। घने वन के बढने और देशी वनस्पति से ढकी ये पहाड़ियाँ, तापमान को नियंत्रित करने, मिट्टी के कटाव को कम करने और परिवेशी वायु गुणवत्ता को बनाए रखने में मदद करती हैं। यह प्राकृतिक आवरण एक बफर के रूप में कार्य करता है, जो वायुमंडलीय प्रदूषकों और पर्यावरणीय क्षरण से संस्मारकों की रक्षा करता है। आसपास का इलाका, अपनी ऊंचाई और सीमित पहुंच के साथ, अनियमित निर्माण को और प्रतिबंधित करता है, इन प्राचीन विरासत स्थलों के भौतिक ताने-बाने और सांस्कृतिक विशेषता दोनों को संरक्षित करने में मदद करता है।

6.8 खुली जगह और निर्माण का उपयोग:

खुले स्थानों का उपयोग मुख्य रूप से कृषि, वन और मनोरंजन स्थानों के लिए किया जाता है, जिसमें सार्वजनिक उद्यान और वन्यजीव सफारी शामिल हैं, जबकि निर्माण का उपयोग आवासीय और धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

6.9 पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ:

महादेव मंदिर (संरक्षित संस्मारक) में महाशिवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है, जिसमें बड़ी संख्या में तीर्थयात्री आते हैं। वार्षिक राजगीर महोत्सव नवंबर-दिसंबर में आयोजित किया जाता है, ऐतिहासिक *मलमास मेला* हर तीन साल में एक बार मनाया जाता है और माघ पूजा मार्च में मनाई जाती है।

6.10 संरक्षित संस्मारकों और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज:

i. महादेव मंदिर और जैन मंदिर/मठ:

वैभारगिरि पहाड़ियों पर स्थित यह संरक्षित संस्मारक राजगीर शहर और आसपास के घने वन और वनस्पति के दृश्य प्रदान करते हैं।

ii. मणियार मठ:

एक घने वन वाले क्षेत्र के भीतर स्थित संरक्षित संस्मारक, आसपास के वन और राजगीर पहाड़ियों के स्पष्ट दृश्य प्रदान करता है। उत्तर-पूर्व में जय प्रकाश उद्यान स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

iii. **सोन भंडार गुफाएं:**

वैभारगिरि पहाड़ियों की तलहटी के भीतर स्थित, संरक्षित संस्मारक आसपास के घने वन, प्राकृतिक वनस्पति, राजगीर पहाड़ियों और वन विभाग के क्वार्टर और अतिथि गृह के दृश्य प्रदान करता है।

iv. **जरासंध का अखाड़ा:**

एक घने वन वाले क्षेत्र के भीतर स्थित संरक्षित संस्मारक, आसपास के वन और राजगीर पहाड़ियों के स्पष्ट दृश्य प्रस्तुत करता है। उत्तर-पूर्व में, राजगीर वन्यजीव सफारी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

v. **बिम्बिसार जेल और जीवकामरा वन:**

घने वन के भीतर स्थित संरक्षित संस्मारक, आसपास के वन, प्राकृतिक वनस्पति और राजगीर पहाड़ियों के दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

vi. **रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण और नए उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप:**

घने वन के भीतर स्थित संरक्षित संस्मारक, आसपास के वन, प्राकृतिक वनस्पति और राजगीर पहाड़ियों के दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

vii. **गृद्धकूट स्तूप और पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी के स्तूप:**

संरक्षित संस्मारक अलग-अलग ऊंचाइयों पर अलग-अलग पहाड़ियों पर स्थित हैं, जो घने वन क्षेत्र, राजगीर पहाड़ियों और शांति स्तूप के दृश्य प्रदान करते हैं।

viii. **गिरियाक स्तूप:**

यह संरक्षित संस्मारक, एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, जो आसपास की पहाड़ियों और घनी वनस्पति के दृश्य प्रदान करता है।

6.11 पारंपरिक वास्तुकला:

संरक्षित संस्मारकों के आसपास कोई पारंपरिक वास्तुकला प्रचलित नहीं है।

6.12 स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा उपलब्ध विकास योजना:

किसी भी स्थानीय प्राधिकरी द्वारा कोई विकास योजना तैयार नहीं की गई है या सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध नहीं कराई गई है।

6.13 अनुमेय भवन संबंधी मापदंड:

संरक्षित संस्मारक - **"उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक अथवा अवशेष, राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार"** अन्य संरक्षित संस्मारकों **"पुराने और नए राजगृह के रूप में ज्ञात उक्त दो प्राचीन शहरों के आधे मील की दूरी के भीतर स्थित सभी प्राचीन संरचनाएं और सभी कृत्रिम गुफाओं और प्राचीन अवशेषों वाले टीले, राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार"** तथा **"पुराने और नए राजगृह के रूप में ज्ञात उक्त दो प्राचीन शहरों की दीवारें, राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार"** के करीब स्थित हैं। अत: **"उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों**

के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक अथवा अवशेष, राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार" का विनियमित क्षेत्र उपरोक्त समीपवर्ती संरक्षित संस्मारकों के विनियमित क्षेत्र के साथ आवेरलैप करता है। इसलिए इन उप-विधियों को एक दूसरे के साथ संयोजन में पढ़ा जाना चाहिए। यदि निर्माण स्थल दो अलग-अलग संस्मारकों के विनियमित क्षेत्र में आता है, तो प्रस्तावित निर्माण के कारण निर्माण स्थल के निकट स्थित संस्मारक पर पड़ने वाले संभावित प्रतिकूल प्रभाव को प्राथमिकता दी जाएगी।

6.13.1 मरम्मत और नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में):

आंतरिक परिवर्तन और अनुकूली पुनः उपयोग की सामान्य रूप से अनुमति दी जा सकती है। हालाँकि, बाहरी परिवर्तन सक्षम प्राधिकारी द्वारा विस्तृत जाँच के अधीन होंगे। ऐसे परिवर्तन जिनमें रेट्रोफिटिंग/नवीनीकरण शामिल है, की अनुमति तब दी जा सकती है जब इमारत संरचनात्मक रूप से कमज़ोर या असुरक्षित हो या जब उस पर किसी प्राकृतिक आपदा का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हो और नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक हो। मूल इमारत शब्दावली और लेआउट के साथ-साथ निर्मित-खुले संबंधों का पालन किया जाना चाहिए। सक्षम प्राधिकारी से पूर्व अनुमति के अधीन इमारतों की सामान्य मरम्मत और रखरखाव की अनुमति होगी।

भवन/संरचनाओं में मरम्मत और नवीनीकरण संरक्षित संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्रों की धरोहर विशेषताओं के अनुरूप और उससे मेल खाता होना चाहिए। एल्युमिनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), लैमिनेट्स, टाइलिंग या ग्लेज़िंग जैसी नई क्लैडिंग सामग्रियों की अनुमति नहीं दी जाएगी। मरम्मत और नवीनीकरण कार्यों को करने में स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6.13.2 पुनर्निर्माण:

पुनर्निर्माण को एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 2(ट) में परिभाषित किया गया है। विनियमित क्षेत्र में पुनर्निर्माण की अनुमति एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग(2) और एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 6(IV) और नियम 7 के अनुसार दी जाती है। किसी संरक्षित संस्मारक या संरक्षित क्षेत्र के प्रतिषिद्ध या विनियमित क्षेत्र में स्थित किसी भी प्रकार के भवन या सरंचना, जो प्राकृतिक आपदाओं से ध्वस्त या क्षतिग्रस्त हो गयी है और जिसकी मरम्मत नहीं की जा सकती है, के मामले में पुनर्निर्माण की एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 16 के अनुसार दी जाती है। प्राकृतिक आपदा के कारण क्षतिग्रस्त भवन अथवा संरचना के पुनर्निर्माण की अनुमति उसी सीमा तक दी जाएगी जितनी क्षति हुई है। पुनर्निर्माण के मामले में पुरानी इमारत के प्रतिस्थापन के रूप में नई संरचना या इमारत को पहले से मौजूद संरचना के अनुसार उसी क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर सीमाओं का पालन करना होगा। अग्रभाग में असंगत सामग्री जैसे ग्लेज़िंग, मेटल क्लैडिंग, एल्युमीनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), टाइल्स, लैमिनेट्स के उपयोग की अनुमति नहीं होगी। नई संरचना संरक्षित संस्मारक की धरोहर विशेषता और उसके आसपास के क्षेत्र के साथ मेल खाती और उसके अनुरूप होनी चाहिए।

6.13.3 नया निर्माण:

6.13.3 क प्रतिषिद्ध क्षेत्र:

सामान्य शब्दों में, एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20क(4) के अनुसार, संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर किसी भी सार्वजनिक कार्य या जनता के लिए आवश्यक परियोजना या अन्य निर्माण सहित किसी भी नए निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी।

6.13.3 ख विनियमित क्षेत्र:

"बिहार भवन उप-नियम, 2014" में निर्दिष्ट सभी विकास नियंत्रण मानदंड और भवन विनियम, जब भी संशोधित होंगे, लागू होंगे। हालाँकि, इस धरोहर उपविधि में निर्दिष्ट ऊँचाई और अन्य मानदंड संरक्षित संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में लागू होंगे।

संरक्षित संस्मारकों के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के कुछ भाग नालंदा वन प्रभाग के अधिकार क्षेत्र में आते हैं, जो बिहार पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग का एक भाग है और इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए।

हालाँकि, कृषि क्षेत्रों में, निर्दिष्ट छूट के अंतर्गत आने वाले निर्माणों की अनुमति दी जा सकती है। बागों और कृषि भूमि पर इन अनुमत निर्माणों में कृषि में लगे लोगों के लिए आवास और सहायक भवनों का निर्माण या फसलों, चारे, खाद, कृषि उपकरणों के भंडारण और अन्य समान सुविधाओं के लिए संरचनाओं का निर्माण शामिल है।

1. **स्थल पर नए निर्माण की ऊंचाई (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन कक्ष, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, टैरेस गार्डन की पेंटहाउस संरचनाएं या छत पर कोई अन्य सेवाएं आदि सहित):**

   i. नए निर्माण या मौजूदा इमारतों में परिवर्धन/परिवर्तन के लिए अधिकतम ऊंचाई सीमा **7.50 मीटर** से अधिक नहीं होगी (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन कक्ष, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, टैरेस गार्डन की पेंटहाउस संरचना या छत पर कोई अन्य सेवाएं आदि सहित)।

   ii. जहां तक संभव हो, बेसमेंट के निर्माण को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. **उपयोग:**

   i. जहां तक संभव हो, वर्तमान भूमि उपयोग को बरकरार रखा जाए।

   ii. पहाड़ियों को उनके ऐतिहासिक, पुरातात्विक और भूवैज्ञानिक महत्व के कारण संरक्षित किया जाना चाहिए; इसलिए, निर्माण गतिविधियों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

iii. किसी संरक्षित संस्मारक या संरक्षित क्षेत्र के प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र के भीतर भूमि उपयोग का परिवर्तन राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (एनएमए) के साथ पूर्व परामर्श के बाद किया जाना चाहिए।

iv. संरक्षित संस्मारक के विनियमित क्षेत्र के भीतर तालाबों और जल निकायों को संरक्षित किया जाना चाहिए और जहां तक संभव हो, उनके उपयोग में किसी भी प्रकार के परिवर्तन को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

3. अग्रभाग डिजाइन:

i. नए निर्माण का अग्रभाग डिजाइन न्यूनतम प्रकृति का होना चाहिए, ताकि यह संरक्षित संस्मारकों और आसपास के क्षेत्र की समग्र विरासत विशेषता पर हावी न हो। अग्रभाग का डिजाइन सूक्ष्म, प्लास्टर किया हुआ और मिट्टी के रंगों (सफेद, ग्रे, बेज, भूरा आदि) में रंगा हुआ होना चाहिए।

ii. विनियमित क्षेत्र में स्थित सभी भवनों के लिए दुकानों और आवासों के अनौपचारिक विस्तार को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

iii. सभी ऐतिहासिक इमारतों, दुकानों और घरों के अग्रभागों को मूल डिजाइन (ब्रैकेट, छज्जा, मेहराबदार दरवाजे, खिड़कियां आदि की श्रृंखला) के अनुसार बनाए रखा जाना चाहिए।

iv. प्लंबिंग और बिजली की सेवाएं व्यवस्थित होनी चाहिए और इमारत के बाहरी हिस्से में नहीं होनी चाहिए।

4. छत का डिज़ाइन:

i. पारंपरिक ढलान / सपाट वाली छत डिजाइन का पालन किया जाए।

ii. इमारतों की छत पर एल्युमीनियम, फाइबर ग्लास, पॉलीकार्बोनेट या इसी तरह की सामग्री का उपयोग करके अस्थायी प्रकृति की संरचनाओं के निर्माण को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

iii. सभी सेवाएँ जैसे कि बड़ी एयर कंडीशनिंग इकाइयाँ, छत पर पानी के भंडारण टैंक या छत पर रखे गए बड़े जनरेटर सेट को स्क्रीन दीवारों (ईंट/सीमेंट शीट, लौवर, जालियाँ या ऐसे अन्य डिज़ाइन तत्व) का उपयोग करके ढक दिया जाना चाहिए। इन सभी सेवाओं को अधिकतम स्वीकार्य ऊँचाई में शामिल किया जाना चाहिए।

5. निर्माण सामग्री:

संरक्षित संस्मारक के सभी सड़क के अग्रभागों पर निर्माण सामग्री और रंग में एकरूपता बनाए रखी जानी चाहिए। बाहरी सज्जा के लिए आधुनिक निर्माण सामग्री जैसे एल्युमीनियम क्लैडिंग, ग्लास ईंटें और किसी भी अन्य सिंथेटिक टाइल या सामग्री के उपयोग हतोसाहित किया जाना चाहिए। ईंट और पत्थर जैसी पारंपरिक निर्माण सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए।

6. **रंग:**

बाहरी रंग संरक्षित संस्मारक के साथ सामंजस्य रखते हुए तटस्थ स्वर का होना चाहिए, जैसे कि बफ बलुआ पत्थर का रंग, सफेद, बेज और अन्य मिट्टी के रंग, जो संरक्षित संस्मारक और उसके आसपास के वातावरण के साथ तीव्र विरोधाभास पैदा न करें।

7. **अन्य विनियम:**

मेट्रो रेल सिस्टम (भूमिगत या एलिवेटेड), रेल या सड़क ओवर ब्रिज, फ्लाई ओवर, बहु-स्तरीय पार्किंग सुविधाएं या सार्वजनिक हित में इसी तरह की विकास परियोजनाओं और संस्थागत भवनों के निर्माण या जो जनता के लिए आवश्यक हैं, जैसे बड़े पैमाने पर सार्वजनिक बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं के निर्माण के प्रस्ताव एक विस्तृत विरासत प्रभाव आकलन (एचआईए) रिपोर्ट के अध्यधीन होंगे। ऐसी परियोजनाओं पर तभी विचार किया जा सकता है जब यह स्पष्ट रूप से स्थापित हो जाए कि वे संरक्षित संस्मारक या उसके आस-पास के क्षेत्र के संरक्षण, सुरक्षा, संरक्षा, दृश्य अखंडता या पहुंच पर कोई महत्वपूर्ण प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेंगे।

6.14 आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन:

व्यवहार्यता के अनुसार अतिरिक्त आगंतुक सुविधाओं और प्रसाधनों पर विचार किया जाए।

अध्याय - 7

स्थल विशिष्ट सिफारिशें

7.1 स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें:

i. यदि राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-120), राज्य राजमार्ग का चौड़ीकरण किया जाता है तो यथासंभव संरक्षित संस्मारकों की संरक्षित सीमा से दूर की दिशा में किया जाना चाहिए।

ii. उनके विरासत महत्व को देखते हुए शैल वर्ण रॉक उत्कीर्णन के संरक्षण और सुरक्षा के लिए पर्याप्त सावधानी बरती जानी चाहिए।

iii. संरक्षित संस्मारकों के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में स्थित जल निकायों से आच्छादित क्षेत्र को उसकी वर्तमान स्थिति में संरक्षित किया जाना चाहिए और जहाँ तक संभव हो, इसके मौजूदा उपयोग में किसी भी परिवर्तन को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

iv. संरक्षित संस्मारकों के ऐतिहासिक संदर्भ को संरक्षित करने और भूदृश्य की अखंडता की रक्षा के लिए संरक्षित संस्मारकों के आसपास के विनियमित क्षेत्र के भीतर प्राकृतिक स्थलाकृति संबंधी विशेषताओं को बनाए रखने की सिफारिश की जाती है।

v. स्थानीय प्रशासन द्वारा संरक्षित संस्मारक की प्रतिषिद्ध और विनियमित सीमाओं के भीतर अनधिकृत निर्माण और अतिक्रमण का उचित समाधान किया जाना चाहिए।

vi. संरक्षित संस्मारकों या उसके आसपास के क्षेत्रों में एलईडी या डिजिटल संकेतक, प्लास्टिक फाइबर ग्लास या किसी अन्य अत्यधिक परावर्तक सिंथेटिक सामग्री का उपयोग संकेतक के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

vii. संरक्षित संस्मारकों के पास, विशेष रूप से उनकी चारदीवारी पर, होर्डिंग, बिलबोर्ड और पोस्टर के रूप में किसी भी विज्ञापन की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

viii. वाहनों से निकलने वाले उत्सर्जन और कंपन के कारण संरक्षित संस्मारकों पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए संरक्षित संस्मारकों के आसपास आवागमन के लिए पर्यावरण-अनुकूल वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

ix. वर्षा जल संचयन जैसी सर्वोत्तम प्रणालियों सहित हरित भवनों के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

x. विनियमित क्षेत्र के भीतर टेलीफोन एक्सचेंज, मोबाइल टॉवर, बिजली ट्रांसमिशन टॉवर, उच्च विस्तार टॉवर, चिमनी और ओवरहेड वॉटर टैंक को हतोत्साहित किया जाना चाहिए और उनके विनियमित क्षेत्र से बाहर स्थानांतरित करने पर विचार किया जा सकता है।

7.2 अन्य सिफारिशें:

i. जब भी मास्टर प्लान, क्षेत्रीय योजना या विकास योजना तैयार की जाए या उसमें संशोधन किया जाए, तो उसमें राष्ट्रीय महत्व के सभी संरक्षित संस्मारकों और उनके प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों को स्पष्ट रूप से दर्शाया जाना चाहिए।

ii. क्षेत्र को प्लास्टिक और पॉलीथीन मुक्त क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए।

iii. सांस्कृतिक विरासत स्थलों और परिसरों के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दिशानिर्देश https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf पर देखे जा सकते हैं।

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

In exercise of the powers conferred by section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended, read with Rule 22 of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and Other Functions of the Competent Authority) Rule, 2011, the following Heritage Bye-Laws for the Protected Monuments **"All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar"**, prepared by the Competent Authority, in Consultation with the National Institute of Technology Patna, Bihar were published on 09.06.2023, as required by sub-rule 2 of Rule 18 of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, for inviting objections or suggestions from the public;

The objections/suggestions, received before the specified date have duly been considered by the National Monuments Authority in consultation with the Competent Authority.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (5) of the Section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended, the National Monuments Authority, hereby makes the following bye-laws, namely:

Heritage Bye-Laws for "All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar"

CHAPTER - 1

PRELIMINARY

1.1 Short title, extent and commencements:

(i) These Heritage Bye-Laws may be called the National Monuments Authority Heritage Bye-Laws, 2026 of Protected Monuments **"All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar."**

(ii) They shall extend to the entire Prohibited and Regulated Area of the Protected Monuments.

(iii) The provisions of these bye-laws shall have effect notwithstanding anything inconsistent therewith contained in any other bye-laws, whether made before or after the commencement of these bye-laws, or in any instrument having effect by virtue of any bye-laws. It shall not be obligatory to carry out amendments in these bye-laws to make them consistent with any other bye-laws.

(iv) They shall come into force with effect from the date of their publication.

1.2 Definitions:

1. In these Heritage Bye-Laws, unless the context otherwise requires, -

(a) "ancient monument" means any structure, erection or monument, or any tumulus or place of interment, or any cave, rock sculpture, inscription or monolith, which is of historical, archaeological or artistic interest and which has been in existence for not less than one hundred years, and includes -

(i) the remains of an ancient monument,

(ii) the site of an ancient monument,

(iii) such portion of land adjoining the site of an ancient monument as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving such monument, and

(iv) the means of access to, and convenient inspection of an ancient monument,

(b) "archaeological site and remains" means any area which contains or is reasonably believed to contain ruins or relics of historical or archaeological importance which have been in existence for not less than one hundred years, and includes:

(i) such portion of land adjoining the area as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving it, and

(ii) the means of access to, and convenient inspection of the area,

(c) "Act" means the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended,

(d) "Archaeological Officer" means an officer of the Department of Archaeology of the Government of India not lower in rank than Assistant Superintendent of Archaeology,

(e) "Authority" means the National Monuments Authority constituted under Section 20F of the Act,

(f) "Competent Authority" means an officer not below the rank of Director of archaeology or Commissioner of archaeology of the Central or State Government or equivalent rank, specified, by notification in the Official Gazette, as the competent authority by the Central Government to perform functions under this Act:

Provided that the Central Government may, by notification in the Official Gazette, specify different competent authorities for the purpose of section 20C, 20D and 20E,

(g) "construction" means any erection of a structure or a building, including any addition or extension thereto either vertically or horizontally, but does not include any re-construction, repair and renovation of an existing structure or building, or, construction, maintenance and cleansing of drains and drainage works and of public latrines, urinals and similar conveniences, or, the construction and maintenance of works meant for providing supply or water for public, or, the construction or maintenance, extension,

management for supply and distribution of electricity to the public or provision for similar facilities for public,

(h) "Government" means The Government of India,

(i) "maintain", with its grammatical variations and cognate expressions, includes the fencing, covering in, repairing, restoring and cleansing of a Protected Monument, and the doing of any act which may be necessary for the purpose of preserving a Protected Monument or of securing convenient access thereto,

(j) "owner" includes:

(i) A joint owner invested with powers of management on behalf of himself and other joint owners and the successor-in-title of any such owner, and

(ii) Any manager or trustee exercising powers of management and the successor-in- office of any such manager or trustee,

(k) "prescribed" means prescribed by rules made under this Act;

(l) "Prohibited Area" means any area specified or declared to be a Prohibited Area under section 20A,

(m) "Protected Area" means any archaeological site and remains which is declared to be of national importance by or under this Act,

(n) "Protected Monument" means any ancient monument which is declared to be of national importance by or under this Act,

(o) "Regulated Area" means any area specified or declared to be a Regulated Area under section 20B,

(p) "re-construction" means any erection of a structure or building to its pre-existing structure, having the same horizontal and vertical limits,

(q) "repair and renovation" means alterations to a pre-existing structure or building, but shall not include construction or re-construction,

2. The words and expressions used herein and not defined shall have the same meaning as assigned in the Act or the rules made there under.

CHAPTER - 2

Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended

2.1 Background of the Act:

The Heritage Bye-Laws are intended to guide physical, social and economic interventions within 300 metres in all directions of the Protected Monument. The 300 metres area has been divided into two parts (i) the **Prohibited Area**, the area beginning at the limit of the Protected Area or the Protected Monument and extending to a distance of 100 metres in all directions and (ii) the **Regulated Area**, the area beginning at the limit of the Prohibited Area and extending to a distance of 200 metres in all directions.

As per the provisions of the Act, no person shall undertake any construction or mining operation in the Protected Area and Prohibited Area while permission for repair and renovation of any building or structure, which existed in the Prohibited Area before 16th day of June, 1992, or which had been subsequently constructed with the approval of Director General (DG), Archaeological Survey of India (ASI) and; permission for construction, re-construction, repair or renovation of any building or structure in the Regulated Area, must be sought from the Competent Authority.

2.2 Provision of the Act related to Heritage Bye-Laws:

Section 20E of the AMASR Act, 1958, as amended and Rule 22 of the Ancient Monument and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and other function of the Competent Authority) Rules 2011, specifies framing of Heritage Bye-Laws for Protected Monuments. Ibid Rule provides parameters for the preparation of Heritage Bye-Laws. Rule 18 of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, specifies the process of approval of Heritage Bye-Laws by the Authority.

2.3 Rights and Responsibilities of Applicant:

Section 20C of the AMASR Act, 1958, as amended, specifies details of application for repair and renovation in the Prohibited Area, or construction or re- construction or repair or renovation in the Regulated Area as described below:

(a) Any person, who owns any building or structure, which existed in a Prohibited Area before 16th day of June, 1992, or, which had been subsequently constructed with the approval of the Director General and desires to carry out any repair or renovation of such building or structure, may make an application to the Competent Authority for carrying out such repair and renovation as the case may be.

(b) Any person, who owns or possesses any building or structure or land in any Regulated Area, and desires to carry out any construction or re-construction or repair or renovation of such building or structure on such land, as the case may be, make an application to the Competent Authority for carrying out construction or re-construction or repair or renovation as the case may be.

(c) It is the responsibility of the applicant to submit all relevant information and abide by the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of the Authority and Conduct of Business) Rules, 2011.

CHAPTER - 3

Location and Setting of the Protected Monuments - All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar

3.1 Location and Setting of the Protected Monuments:

The Protected Monuments comprises 12 Protected Monuments namely: - Mahadev Temple, Jain Temple/Monastery, Maniyar Math, Sone Bhandar Caves, Jarasandh ka Akhada, Bimbisar Jail, Jivakamra Van, Chariot Wheel Mark and Shell Characters, Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa, Gridhakuta Stupa, Partially Mud Stupa on Hill and Giriyak Stupa. These are located across the Rajgir Hills and their surrounding areas, some situated atop the hills, others within forested foothills and several positioned in the intervening depressions between the ranges. The region is defined by five principal hills: Ratnagiri, Vipulachal, Vaibharagiri, Songiri and Udaygiri, collectively referred to as the Rajgir Hills.

The Protected Monuments are located across the Rajgir Hills and their foothills. On Ratnagiri Hill stand the Giriyak Stupa, Gridhakuṭa Stupa and a Partially Mud Stupa. Vaibharagiri Hill contains the Jain Temple/Monastery and Mahadev Temple, while its foothills accommodate Jarasandh ka Akhada, Sone Bhandar Caves and Maniyar Math. The foothills of Udaygiri Hill feature the Chariot Wheel Mark, Shell Characters and the Newly Excavated Stupa (Van Ganga Stupa). Bimbisar Jail is situated at the base of Songiri Hill and Jivakamra Van lies at the foot of Ratnagiri Hill.

The Giriyak Stupa, positioned at the Easternmost end of Ratnagiri Hill, is approximately 14 kilometres from the Mahadev Temple, located at the Westernmost point of Vaibharagiri Hill. Among the terrestrial sites, the Newly Excavated Stupa marks the Southernmost point, lying about 2.8 kilometres from Maniyar Math at the North.

Access to the Protected Monuments is provided via Rajgir-Nalanda Highway (NH-120). The Protected Monuments are surrounded by forested areas, hills and a few constructions.

The geographical coordinates of its location are:

i. **Mahadev Temple: Latitude:** 25°00'23.0" N, **Longitude:** 85°24'42.7" E.

ii. **Jain Temple/Monastery: Latitude:** 25°00'24.7" N, **Longitude:** 85°24'41.9" E.

iii. **Maniyar Math: Latitude:** 25°00'07.0" N, **Longitude:** 85°25'20.6" E.

iv. **Sone Bhandar Caves: Latitude:** 25°00'14.9" N, **Longitude:** 85°25'00.4" E.

v. **Jarasandh ka Akhada: Latitude:** 24°59'57.2" N, **Longitude:** 85°24'43.3" E.

vi. **Bimbisar Jail: Latitude:** 24°59'41.6" N, **Longitude:** 85°25'45.0"E.

vii. **Jivakamra Van: Latitude:** 24°59'43.7" N, **Longitude:** 85°26'07.9" E.

viii. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters: Latitude:** 24°59'05.0" N, **Longitude:** 85°25'52.6" E.

ix. **Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa: Latitude:** 24°58'55.8" N, **Longitude**: 85°25'48.2" E.

x. **Gridhakuta Stupa: Latitude:** 25°00'06.4" N, **Longitude:** 85°26'47.1" E.

xi. **Partially Mud Stupa on Hill: Latitude:** 25°00'20.0" N**, Longitude:** 85°27'01.8" E.

xii. **Giriyak Stupa: Latitude:** 25°01'30.5" N**, Longitude:** 85°30'46.8" E.

The nearest railway station is Rajgir Railway Station approximately five kilometres away and the closest airport is the Gaya Airport and Jay Prakash Narayan International Airport, Patna located 78 kilometres and 120 kilometres from the Protected Monuments, respectively.

The Protected Monuments-"Jain Temple/Monastery and Mahadev Temple" are located in close proximity to another Protected Monument, "Saptaparni Caves." Therefore, this Heritage Bye-Law should be read in conjunction with the Heritage Bye-Laws of the "All ancient structures and all artificial caves and mounds containing ancient remains which are situated within a distance of half a mile of the said two ancient cities known as old and new Rajgriha, Rajgir, District-Nalanda, Bihar." **Refer Figure 7**

The Protected Monuments- "Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa" are located in close proximity to another Protected Monument- "Cyclopean wall." Therefore, this Heritage Bye-law should also be read in conjunction with the Heritage Bye-laws of the "The walls of the two ancient cities known as old and new Rajgriha, Rajgir, District-Nalanda, Bihar." **Refer Figure 8**

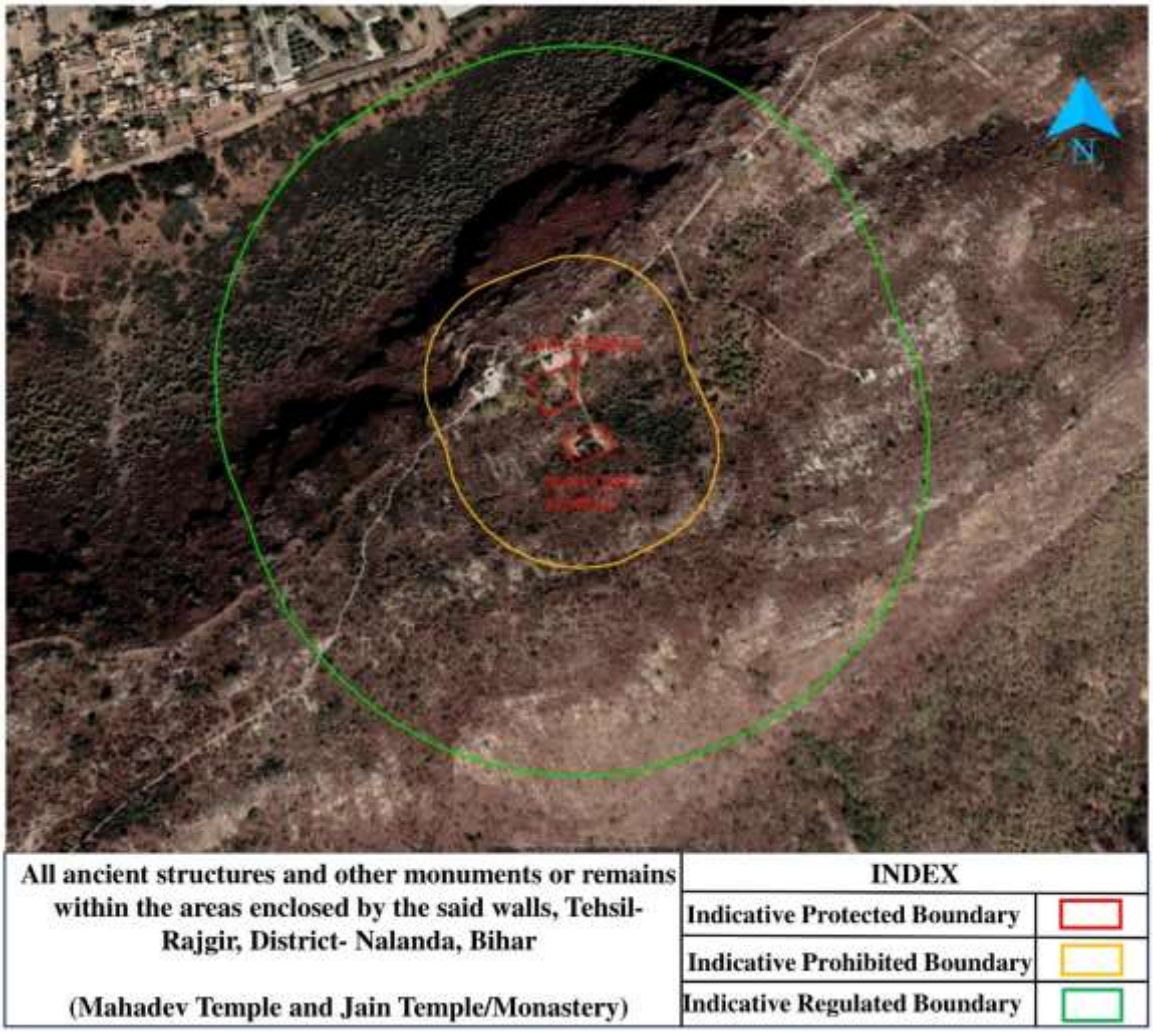

Figure 1: Satellite Image Showing Location and Setting of All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar.

(Mahadev Temple and Jain Temple/Monastery)

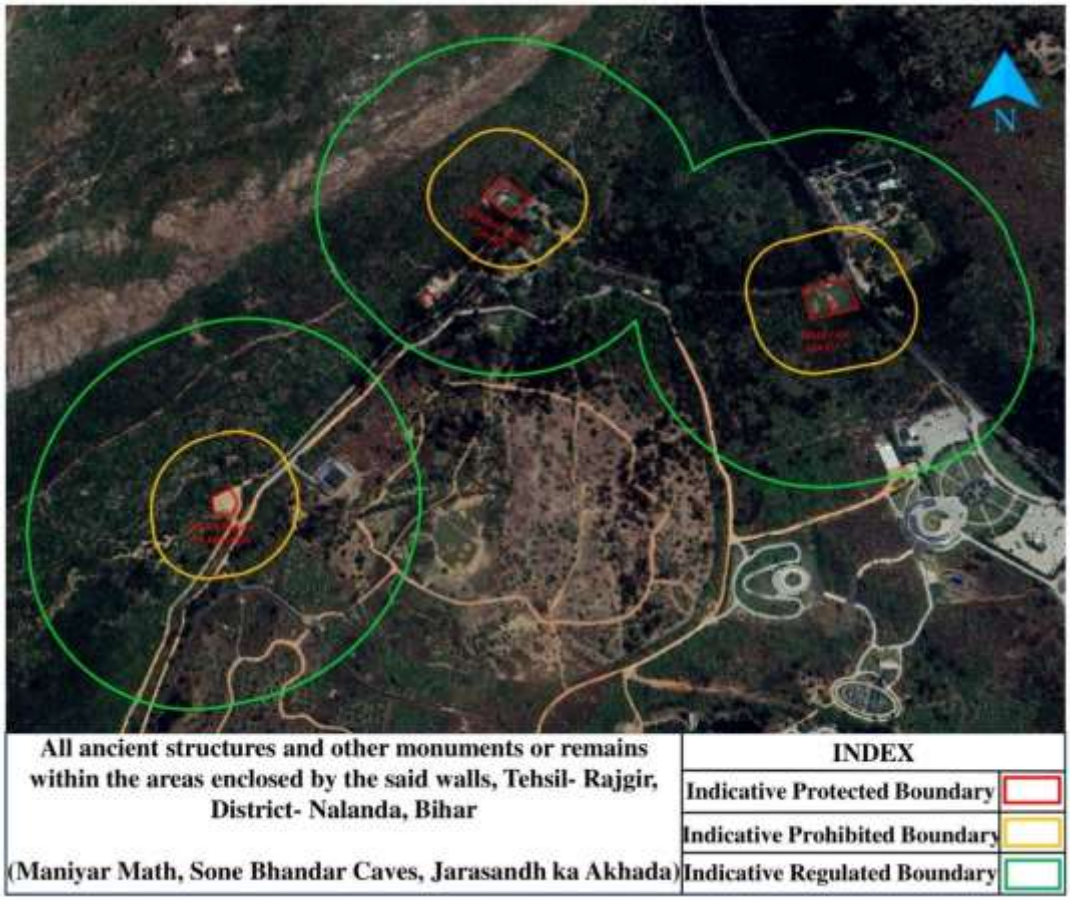

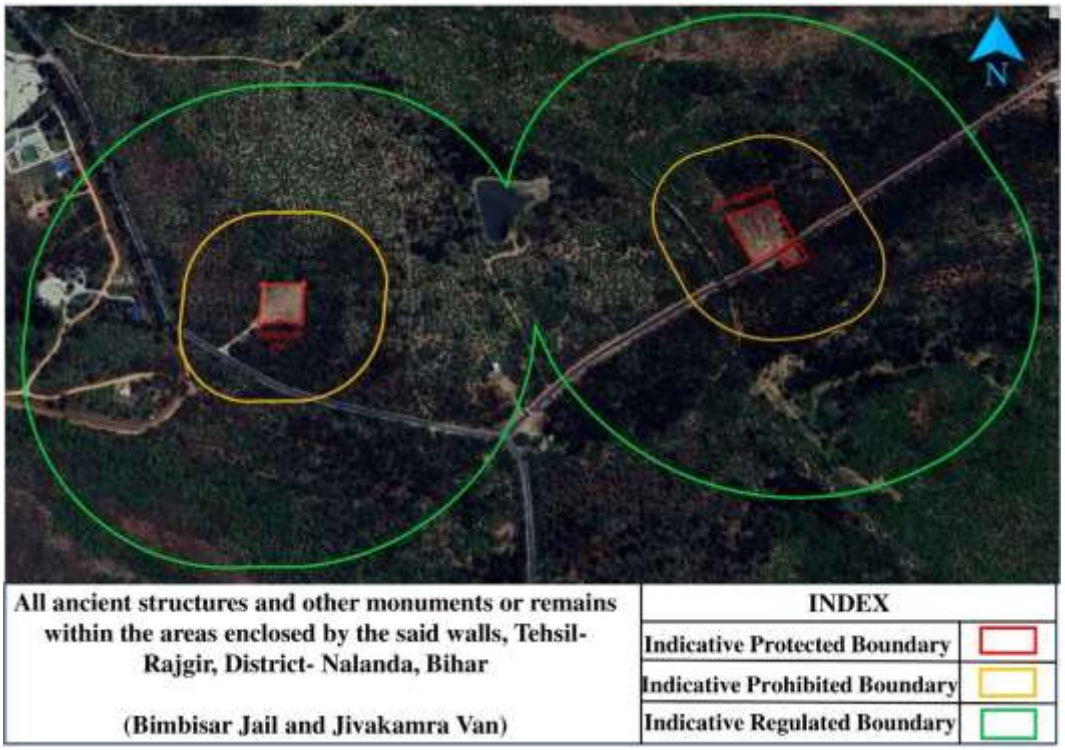

Figures 2 and 3: Satellite Image Showing Location and Setting of All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar.

(Maniyar Math, Sone Bhandar Caves, Jarasandh ka Akhada, Bimbisar Jail and Jivakamra Van)

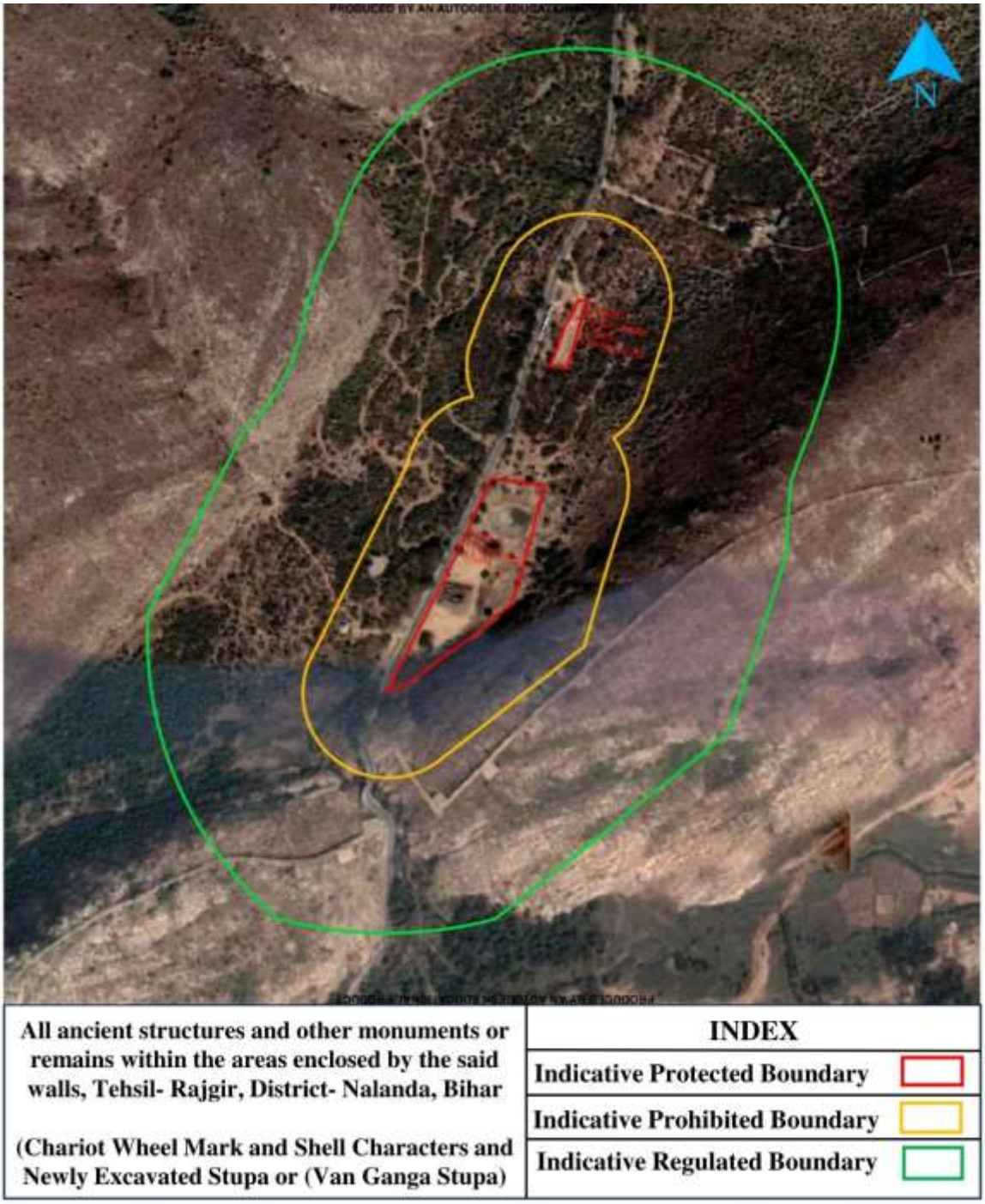

Figure 4: Satellite Image Showing Location and Setting of All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil-Rajgir, District-Nalanda, Bihar.

(Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa)

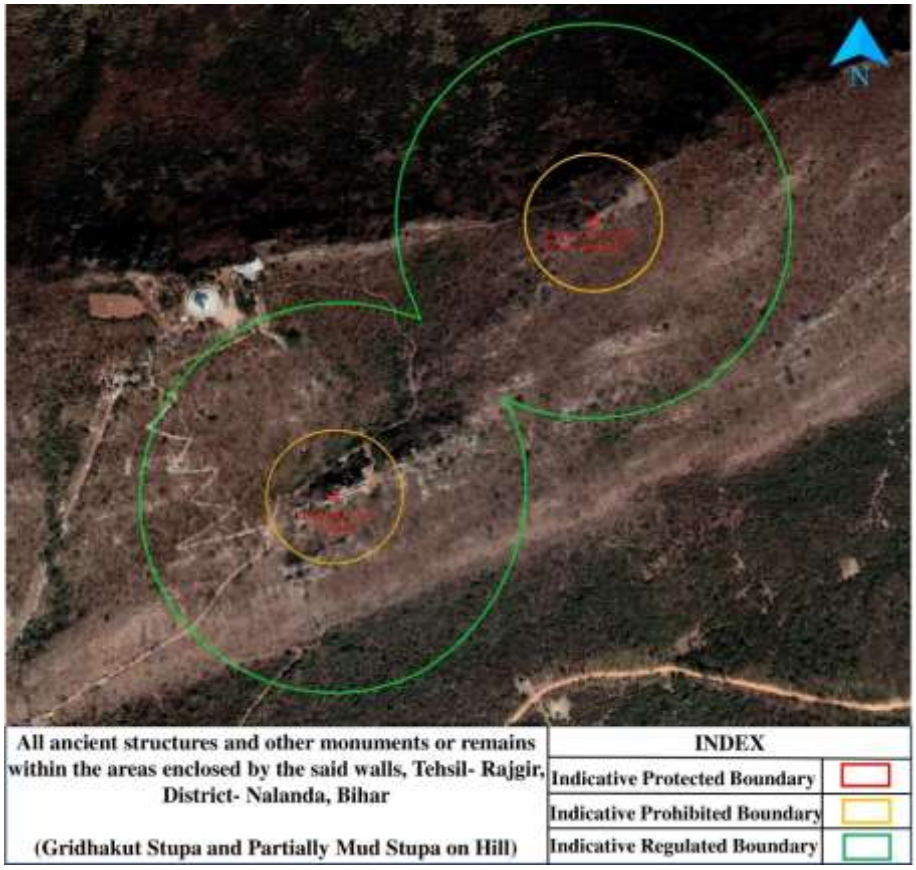

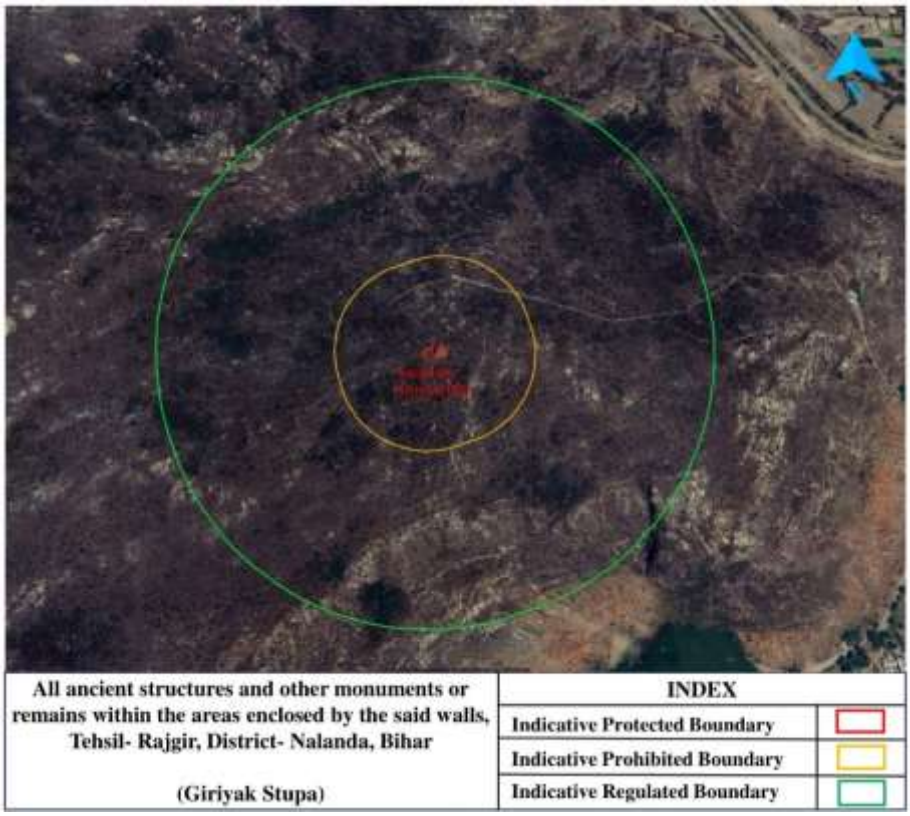

Figure 5 and 6: Satellite Image Showing Location and Setting of All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar.

(Gridhakut Stupa, Partially Mud Stupa on Hill and Giriyak Stupa)

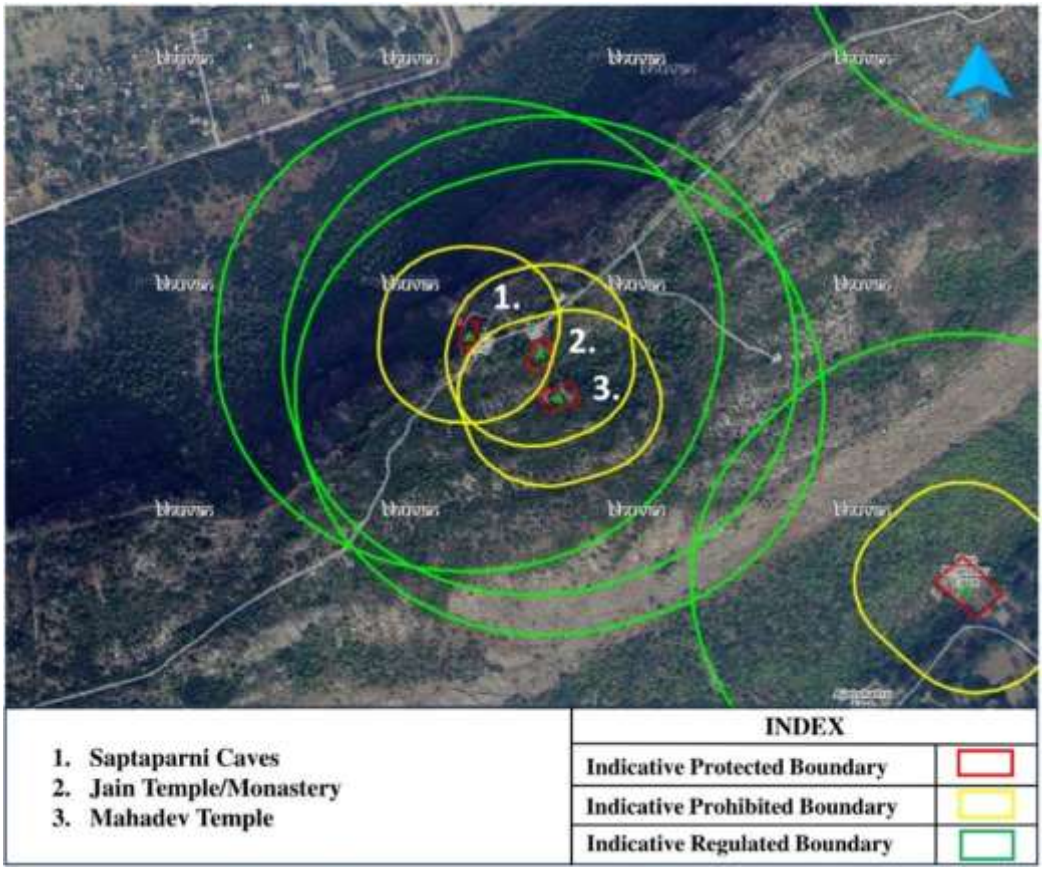

Figure 7: All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar.

Jain Temple/Monastery and Mahadev Temple along with another Protected Monument, viz: - Saptaparni Caves Source: Bhuvan Portal.

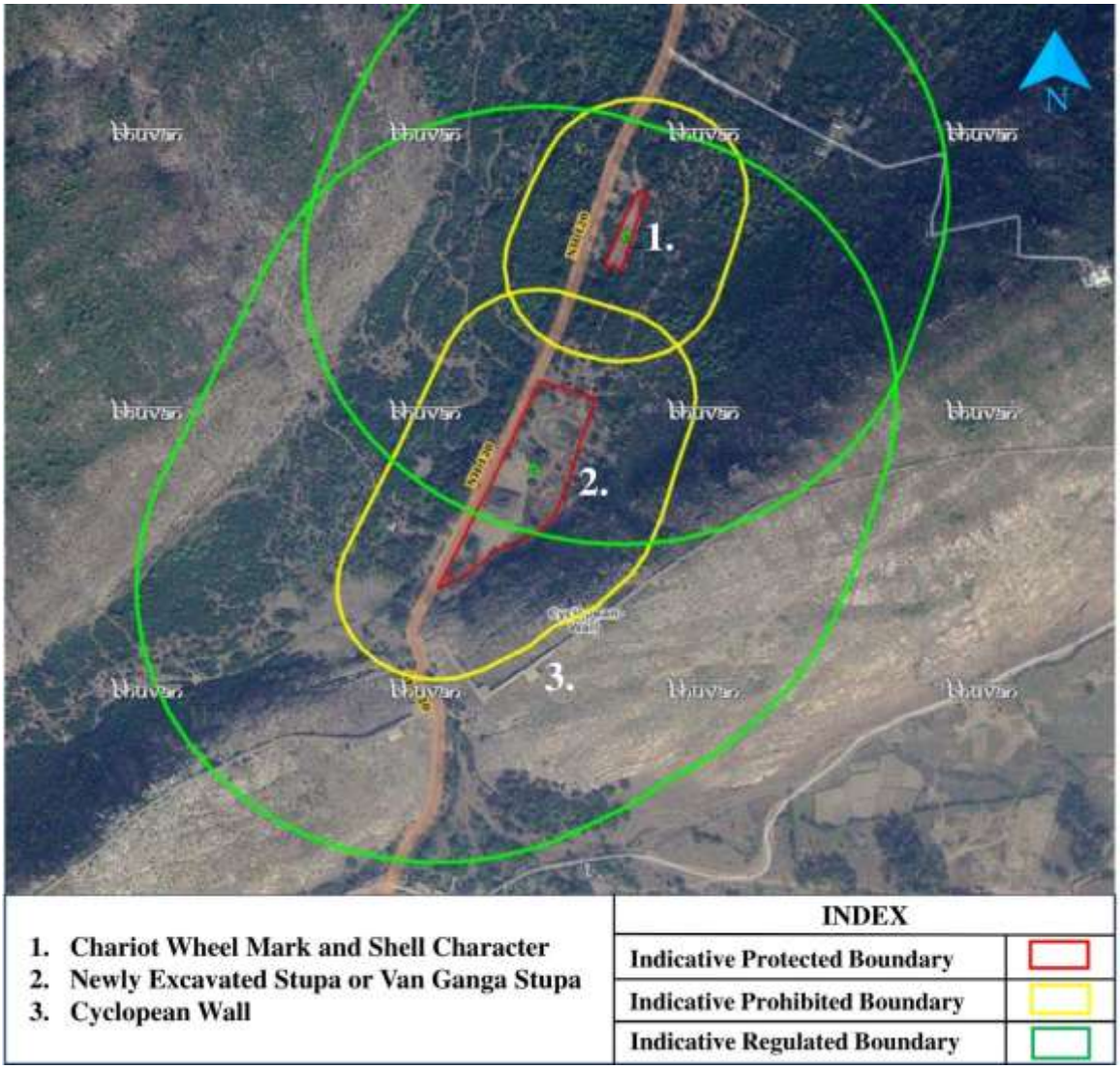

Figure 8: All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar.

Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa along with another Protected Monument, viz: - Cyclopean Wall. Source: Bhuvan Portal.

3.2 Protected Boundary of the Protected Monuments:

The boundary of the Protected Monument All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar may be seen in **Annexure-I**.

3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records:

The Gazette Notification of All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar may be seen in **Annexure-II**.

3.3 History of the Protected Monuments:

i. Mahadev Temple:

Vaibharagiri Hill comprises numerous ancient and relatively recent temples and ruins. A ruined temple dedicated to Shiva consists of a small sanctum (*garbha-griha).* It is believed to be associated with Jarasandh, the ruler of ancient Magadh. The temple, built with brick and granite, is approximately 1000 years old. It is part of a complex of sites significant to Hinduism, Buddhism and Jainism.

ii. Jain Temple/Monastery:

An ancient Jain temple, situated on Vaibharagiri Hill, was brought to light in the mid-1830s. This brick structure comprises a central East-facing chamber enclosed by a courtyard. Niches within the chamber and adjoining cells enshrine Jain images, including those of Parsvanatha, Mahavira and Sambhavanatha. A defaced figure in the central chamber bears a brief dedicatory inscription, datable to the 8th century CE.

The antiquity of Jain establishments on Vaibharagiri Hill is further evidenced by a finely carved figure of Mahavira with a worn inscription on its pedestal, assigned to the 5th century CE and by the 7th century account of the Chinese pilgrim Xuanzang (Hiuen Tsang), who recorded the frequent presence of unclothed ascetics, clearly a reference to Jain monks.

iii. Maniyar Math:

The Protected Monument may be identified with the *Manimala-chaitya* of the Pali texts or the Mani-naga shrine mentioned in the Mahabharata. The exterior once featured stucco niches with images such as a garlanded *liṅga*, four-armed crowned Viṣhṇu, Naga and Nagi figures, Gaṇehsa entwined with serpents and a six-armed dancing Shiva, largely lost today. The iconographic style suggests a Gupta provenance, while the earliest structural phase is datable to the 3rd century BCE.

iv. Sone Bhandar Caves:

The Protected Monument comprise two rock-cut chambers at the Southern base of Vaibharagiri Hill, presumably dated to the 3rd – 4th century CE. According to an inscription between the door and window of the Western cave, they were excavated by the Saint Bhairodeva for Jain ascetics. The Eastern cave, at a lower elevation, bears finely executed reliefs of Jain TIrthankaras such as Padmaprabha, Parsvanatha and Mahavira on its Southern wall. An upper storey, accessed by a rock-cut staircase, was added during the Gupta period using brick construction.

v. Jarasandh ka Akhada:

As per the Mahabharata, Jarasandh was the son of Brihadrath and renowned for his extraordinary prowess in warfare. It is located approximately 1.5 kilometres West of the Sone Bhandar Caves and accessible via a narrow footpath. It is locally known as the Akhaṛa or Raṇabhumi of Jarasandh. The site is traditionally regarded as the battlefield where Bhima, one of the five Pandava

brothers, overcame and killed Jarasandh, the legendary ruler of Magadh, following twenty-eight days of intense *malla-yuddha* (dual combat).

vi. **Bimbisar Jail:**

The Protected Monument lies approximately 1 kilometre South of Maniyar Math, along the main road. It is traditionally identified as the prison where King Bimbisara was confined by his son Ajatasatru. According to the Buddhist Pali tradition, from this jail Bimbisara gazed upon the Gridhrakuṭa Hill—the Buddha's abode, fulfilling his final wish.

vii. **Jivakamra Van:**

These structural remains are identified as the Jivakamra Van Monastery, associated with the 6th century BCE Buddhist tradition. Jivaka, the eminent court physician to Kings Bimbisara and Ajatasatru of the Haryanka dynasty (544 BCE to 413 BCE). According to the Pali Buddhist texts, upon embracing the teachings of the Buddha, Jivaka donated his mango grove (*Amravana*) for the use of the Buddhist monastic community.

viii. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters:**

The stone enclosure is distinguished by two remarkable features. Extending for approximately 30 feet are two deep, parallel furrows carved into the rock. Local tradition attributes these to the mighty chariot wheel of Lord Krishna, owing to the historical association of Rajgir with Jarasandh of the Brihadratha Dynasty, a notable figure of the Mahabharata era. Adjacent to these marks lie ornate spiral motifs resembling conch shells. These undeciphered shell inscriptions, found across Northern India, date from the 4th to the 9th century CE.

ix. **Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

In 1847, Major Kittoe identified the mound as a site of potential antiquity, perceiving it to hold significant relics. Excavations by the Archaeological Survey of India (1999–2001) revealed a two-tiered brick stupa atop a low earthen mound, with a stone-lined chamber evidencing post-cremation burial. Traces of lime plaster remains were also found. On the basis of associated antiquities and ceramic typology, the principal structure is presumably dated to the early Mauryan period (c. 324 BCE – c. 273 BCE), with limited additions during the Gupta period (c. 319 CE – c. 550 CE).

x. **Gridhakuta Stupa:**

Gridhrakuta, Buddha's favourite residence in Rajgir, was the venue for many sermons. The site features two natural caves accessed by steps, bordered externally by extensive stone walls of ancient origin. Above lies a broad platform adorned with numerous brick and stone shrines. The path to the hilltop passes through two stupas as noted by Hiuen Tsang: the first marks where King Bimbisara alighted from his chariot, the second where he dismissed the crowd to listen to Buddha's discourse.

xi. **Partially Mud Stupa on Hill:**

The Stupa mound on Ratnagiri Hill, presumably, dates to the Mauryan era, circa the 3rd century BCE. This stupa is traditionally attributed to the patronage of Emperor Ashoka, under whose reign Buddhism flourished. According to the Parinibbana Sutta, a portion of the Buddha's relics was given to Ajatashatru and these relics are believed to lie beneath this stupa.

xii. **Giriyak Stupa:**

Giriyak Peak is identified with the Goose Monastery and stupa mentioned in Buddhist texts and noted by the Chinese pilgrims Fa-Hsien and Hiuen Tsang. Adjoining the stupa lies a raised platform for offerings, featuring a central chamber that yielded sealings bearing the Buddhist creed and stupa motifs. Excavations during 2010–11 revealed a brick enclosure wall encompassing both the stupa and the platform, affirming the site's monastic and ritual significance.[1]

3.4 Description of the Protected Monuments (architectural features, elements, materials, etc.):

i. **Mahadev Temple:**

The Protected Monument consists of a small sanctum (*garbha-griha*) about 3.5 metres square internally. The sanctum has a flat roof and enshrines a small *linga*, a headless bull and a miniature *shikhara*. The doorway is flanked by two female figures and sculptured stone slabs with the pot-and-foliage design. In front of this sanctum there originally stood a *mandapa*, of which the granite pillars, arranged in six rows of five each, are still standing. The enclosure wall is a later addition to preserve the pillars and shows two different periods of construction.

ii. **Jain Temple/Monastery:**

The Protected Monument is a brick-built structure, comprising a central chamber-oriented Eastward and encompassed by a courtyard. This courtyard is further enclosed on all sides by a series of cells. Both the central chamber and the adjoining cells are furnished with wall niches, enshrining Jain images, notably those of Parsvanatha, Mahavira and Sambhavanatha. Adjoining the Eastern wall, at a level lower than the principal structure, lies an ancillary chamber, accessed by a staircase on the Northern side. Within are a few images, one of which represents Neminatha, as indicated by the pair of conch-shells upon its pedestal.

iii. **Maniyar Math:**

The Protected Monument comprises a hollow cylindrical structure, measuring approximately 3.00 metres in diameter and constructed with a double-layered wall of 1.20 metres thickness. The outer surface is adorned with niches enshrining stucco figures, among which a garlanded linga, a four-armed crowned Vishnu, images of Naga and Nagi, Ganesha entwined with serpents and a six-armed dancing Shiva. Several subsidiary structures- altars, platforms and shrines appear to have been erected for religious and ritual use, evidently

[1]Archaeological Survey of India (Patna Circle).

linked to serpent worship, as suggested by the presence of terracotta serpent hoods and pottery jars with multiple spouts, some in the form of serpent hands.

iv. **Sone Bhandar Caves:**

Internally, the caves are rectangular in plan, featuring vertical walls up to a certain height, surmounted by a vaulted roof. The courtyard before the caves, along with beam holes visible on their exterior, indicates the former presence of a roofed verandah. The Eastern cave, situated on a lower level, bears finely carved reliefs of Jain tirthankars-Padmaprabha, Parsvanatha, Mahavira, among others—on its Southern wall. An upper storey, added during the Gupta period, was constructed in brick and accessed via a rock-cut staircase.

v. **Jarasandh ka Akhada:**

The quadrangular stone structure, accessed by a flight of steps on one side, contains distinctively soft, white-bleached earth, typically associated with traditional wrestling grounds or *akhadas*.

vi. **Bimbisar Jail:**

The Protected Monument is square in plan and covering an area of approximately 60 square metres, is enclosed by a stone wall measuring about 2 metres in thickness, with circular bastions positioned at each corner.

vii. **Jivakamra Van:**

Extensive stone masonry ruins and rubble are found at the site. Excavations have revealed a distinctive structural pattern comprising elliptical halls surrounded by oblong chambers.

viii. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters:**

The enclosure comprises numerous inscriptions in “shell” characters, along with several ancient cart or chariot wheels deeply impressed upon the rocky ground.

ix. **Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

The excavations carried out by the Archaeological Survey of India between 1999 and 2001 uncovered a two-tiered brick stupa erected upon a low earthen mound. This structure includes a stone-lined chamber associated with post-cremation burial practices. Of paricular significance were the fragments of a soapstone casket found on one side of the stupa, while a robber’s trench was observed on the opposite side. The lower terrace measures 29 by 25 metres and is elevated to a height of approximately 2 metres. The upper terrace is characterised by an apsidal chamber and numerous rectangular or square brick compartments, some of which retain traces of lime plaster.

x. **Gridhakuta Stupa:**

A number of terracotta plaques, depicting seven Past Buddhas and Maitreya—the future Buddha, seated in two rows with the Buddhist creed inscribed beneath each figure, were found within one of the caves. Adjacent to the caves stand substantial stone walls of ancient structures. Further uphill is a broad platform

containing numerous brick and stone shrines. The path leading to the peak of Gridhrakuta Hill is marked by two stupas.

xi. **Partially Mud Stupa on Hill:**

The structure is circular in plan, surmounted by a brick mound indicative of a stupa. The bricks appear to have been assembled without the use of mortar, being laid one above the other in dry masonry.

xii. **Giriyak Stupa:**

The stupa consists of a solid cylindrical brick tower, measuring 7 metres in height and 9.5 metres in diameter, with remnants of lime plaster bearing decorative designs. The tower is positioned upon a square platform, which is furnished with mouldings and niches on all four sides. On one side lies a distinct platform, raised for ritual offerings, containing a central chamber that has yielded numerous sealings inscribed with the Buddhist creed and depictions of stupas. During the 2010–11 excavation, a brick enclosure wall was traced, encompassing both the stupa and the adjoining platform.[2]

3.5 Current Status:

3.5.1 Condition of the Protected Monuments - condition assessment:

The maintenance and preservation of the Protected Monuments is the exclusive domain of the Archaeological Survey of India (ASI). The photographs depicting the present condition of the Protected Monuments are appended at **Annexure-V**.

3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers:

i. **Mahadev Temple:**

During Sawan 2000 visitors/day, otherwise 10–20 visitors/day on normal days.

ii. **Jain Temple/Monastery:**

During Sawan 2000 visitors/day, otherwise 10–20 visitors/day on normal days.

iii. **Maniyar Math:**

In summers 100–150 visitors/day, while in winters 500–600 visitors/day.

iv. **Sone Bhandar Cave:**

In summers 100–150 visitors/day, while in winters 500–600 visitors/day.

v. **Jarasandh Ka Akhada:**

Receives 75–80 visitors/day.

[2] Archaeological Survey of India (Patna Circle).

vi. **Bimbisar Jail:**

On regular days 50–75 visitors/day, while in winters 100–150 visitors/day.

vii. **Jivkamra Van:**

Receives around 50 visitors/day.

viii. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters:**

On normal days 50–60 visitors/day, while in winters 100–150 visitors/day.

ix. **Newly Excavated Stupa (Van Ganga Stupa):**

On normal days 50–60 visitors/day, while in winters 100–150 visitors/day.

x. **Gridhakuta Stupa:**

On normal days 50–60 visitors/day, while in winters 400–500 visitors/day.

xi. **Partially Mud Stupa on Hill:**

No visitors due to steep shrub-covered access path and absence of signages.

xii. **Giriyak Stupa:**

Receives only 5–7 visitors/month.

The festival of Maha Shivratri in Mahadev Temple (Protected Monument), Magh Pooja in Venu Van, Rajgir Mahotsav (November-December) and Malmash Mela (once in three years, July-August) attracts additional visitors from nearby areas, leading to significant surge in daily footfall.[3]

[3] Archaeological Survey of India (Patna Circle).

CHAPTER - 4

Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans

4.1 Existing Zoning:

No zoning regulations or master plan has been prepared till date by the local authorities. The monument lies under the jurisdiction of the 'Nagar Parishad Rajgir'.

Portions of the Prohibited and Regulated Areas of the Protected Monuments fall under the jurisdiction of the Nalanda Forest Division, which is part of the Bihar Department of Environment, Forest & Climate Change.

4.2 Existing Guidelines of the Local Bodies:

All other development control norms and building regulations specified in the **"Bihar Building Bye-Laws, 2014"**, as and when amended shall be applicable. **Refer Annexure-IV**

CHAPTER - 5

Information as per First Schedule, Rule 21(1) / Survey Plan of the Prohibited and the Regulated Areas on the basis of boundaries defined in Archaeological Survey of India records

5.1 Survey Plan of the Protected Monuments:

Survey Plan of All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar may be seen in **Annexure-I**.

5.2 Analysis of surveyed data:

5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details:

i. **Mahadev Temple and Jain Temple/Monastery:**

Prohibited Area of both Protected Monuments is 62,945 square metres, approximately.

Regulated Area of both Protected Monuments is 3,08,777 square metres, approximately.

ii. **Maniyar Math and Sone Bhandar Cave:**

Prohibited Area of Maniyar Math is 54,074 square metres, approximately.

Prohibited Area of Sone Bhandar Cave is 47,391 square metres, approximately.

Regulated Area of both Protected Monuments is 5,68,408 square metres, approximately.

iii. **Jarasandh ka Akhada:**

Prohibited Area is 43,545 square metres, approximately.

Regulated Area is 2,75,915 square metres, approximately.

iv. **Bimbisar Jail and Jivakamra Van:**

Prohibited Area of Bimbisar Jail is 47,452 square metres, approximately.

Prohibited Area of Jivakamra Van is 59,096 square metres, approximately.

Regulated Area of both Protected Monuments is 5,93,168 square metres, approximately.

v. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

Prohibited Area is 1,37,199 square metres, approximately.

Regulated Area is 4,64,275 square metres, approximately.

vi. **Gridhakuta Stupa and Partially Mud Stupa on Hill:**

Prohibited Area of Gridhakuta Stupa is 34,631 square metres, approximately.

Prohibited Area of Partially Mud Stupa on Hill is 35,772 square metres, approximately.

Regulated Area of both Protected Monuments is 5,79,270 square metres, approximately.

vii. **Giriyak Stupa:**

Prohibited Area is 38,401 square metres, approximately.
Regulated Area is 2,64,963 square metres, approximately.

5.2.2 Description of built-up area:

Prohibited Area and Regulated Area:

1. **Mahadev Temple and Jain Temple/Monastery:**

   i. **North:**

   Prohibited Area includes two Jain temples and Towards North-West, Protected Monument - Saptaparni Caves is present. Towards North-East, one Jain Temple is present in the Regulated Area.

   ii. **East:**

   No construction exists within the Prohibited Area, however a Jain Temple is present in the Regulated Area.

   iii. **South and West:**

   No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

2. **Maniyar Math:**

   i. **North:**

   No construction exists in the Prohibited Area. Towards the North-East, various structures within Jai Prakash Udyan are situated in the Regulated Area.

   ii. **East:**

   Prohibited Area comprises various structures within Jai Prakash Udyan. No construction exists in the Regulated Area.

   iii. **South:**

   No construction exists in the Prohibited Area. In the Regulated Area, various structures within Rajgir Wildlife Safari are present.

iv. **West:**

No construction exists in the Prohibited Area. Regulated Area includes boundary wall of Rajgir Wildlife Safari.

3. **Sone Bhandar Caves:**

i. **North:**

Towards the North-East, a few structures constructed by the Forest Department, along with an old telephone exchange and tower, are located within the Prohibited and Regulated Areas.

ii. **East and West:**

No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

iii. **South:**

Several structures, including a farmhouse constructed by the Forest Department in the South-Western direction, are located within the Prohibited and Regulated Areas. The boundary wall of the Rajgir Wildlife Safari is situated towards the South, within the Regulated Area.

4. **Jarasandh ka Akhada:**

i. **North and West:**

No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

ii. **East:**

The boundary wall of Rajgir Wildlife Safari lies within the Prohibited Area, while several structures within the Safari are situated in the Regulated Area.

iii. **South:**

The boundary wall of Rajgir Wildlife Safari lies within both the Prohibited and Regulated Areas.

5. **Bimbisar Jail:**

i. **North, East and South:**

No construction is Present.

ii. **West:**

A portion of Rajgir Wildlife Safari, including the boundary wall and structures, lies within the Regulated Area.

6. **Jivakamra Van:**

i. **North, East and South:**

No construction is Present.

ii. **West:**

A single structure is located within the Regulated Area.

7. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

i. **North:**

No construction exists within the Prohibited Area. Jain temples and several structures are located to the North-East, within the Regulated Area.

ii. **East:**

No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

iii. **South:**

Another Protected Monument—the Cyclopean Wall and the Maa Durga Temple lie within the Prohibited Area. A few constructions are present within the Regulated Area.

iv. **West:**

A Jain Samadhi is situated within the Prohibited Area, while no construction is present within the Regulated Area.

8. **Gridhakuta Stupa:**

i. **North:**

Small shrines and sheds are situated within the Prohibited Area. A portion of the Vishwa Shanti Stupa, along with a small stupa, is located within the Regulated Area.

ii. **East:**

No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

iii. **South:**

Sheds are situated towards the South-West within both the Prohibited and Regulated Areas.

iv. **West:**

No construction is present within the Prohibited Area, however an operational ropeway passes through the Regulated Area.

9. **Partially Mud Stupa on Hill:**

No construction exists in any cardinal direction, owing to its position atop Ratnagiri Hill.

10. **Giriyak Stupa:**

No construction exists in any cardinal direction, owing to its position atop the Ratnagiri Hill.

5.2.3 Description of green/open spaces:

Prohibited Area and Regulated Area:

1. **Mahadev Temple and Jain Temple/Monastery:**

The Prohibited and Regulated Areas of both these Protected Monuments are surrounded by forest area and hilly terrain with thick vegetation in all directions.

2. **Maniyar Math:**

i. **North:**

Forest area, open spaces with trees and ponds within Jai Prakash Udyan lie within the Prohibited and Regulated Areas.

ii. **East:**

A portion of Jai Prakash Udyan, including open spaces with trees and forest area, lies within the Prohibited and Regulated Areas.

iii. **South and West:**

Open spaces within Rajgir Wildlife Safari and forest area are situated within the Prohibited and Regulated Areas.

3. **Sone Bhandar Caves:**

i. **North:**

Vaibharagiri Hill and the surrounding forest area are situated within the Prohibited and Regulated Areas.

ii. **East:**

Hilly terrain and forest area are situated within the Prohibited and Regulated Areas.

iii. **South:**

Forest area, a seasonal stream and open spaces within Rajgir Wildlife Safari are situated within the Prohibited and Regulated Areas.

iv. **West:**

Vaibharagiri Hill and the surrounding forest area are situated within the Prohibited and Regulated Areas.

4. **Jarasandh ka Akhada:**

   i. **North:**

   Vaibharagiri Hill, along with the surrounding forest area, is situated within the Prohibited and Regulated Areas.

   ii. **East and South:**

   Forest area and open spaces within Rajgir Wildlife Safari are situated within the Prohibited and Regulated Areas.

   iii. **West:**

   Vaibharagiri Hill, along with the surrounding forest area, is situated within the Prohibited and Regulated Areas.

5. **Bimbisar Jail:**

   i. **North:**

   Hilly terrain and dense forest are situated within the Prohibited and Regulated Areas. A pond is situated within the Regulated Area towards the North-East.

   ii. **East:**

   Dense forest is situated within both the Prohibited and Regulated Areas.

   iii. **South:**

   Hilly terrain and dense forest are situated within the Prohibited and Regulated Areas.

   iv. **West:**

   Dense forest is situated within the Prohibited Area, while open spaces and forest area of Rajgir Wildlife Safari lies within the Regulated Area.

6. **Jivakamra Van:**

   Dense forest lies in all cardinal directions of the Prohibited and Regulated Areas, while a pond is located in the Regulated Area towards the North-West.

7. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

   Hilly terrain and dense forest are situated to the North, East and South within the Prohibited and Regulated Areas, while dense forest is also present to the West within the Prohibited and Regulated Areas.

8. **Gridhakuta Stupa:**

   Two seasonal streams are present in the North-East and West within the Prohibited Area. Dense forest and hilly terrain are situated in all cardinal directions within the Prohibited and Regulated Areas.

9. **Partially Mud Stupa on Hill:**

   Dense forest and hilly terrain are situated in all cardinal directions within the Prohibited and Regulated Areas.

10. **Giriyak Stupa:**

    Forest area and hilly terrain are situated in all cardinal directions within the Prohibited and Regulated Areas.

5.2.4 Areas covered under circulation- roads, footpaths etc.:

The Protected Monuments are surrounded by a well-connected road network providing access to both the Prohibited and Regulated Areas. National Highway 120 (Rajgir-Nalanda Highway) offers access from the South and extends across the North and East, intersecting with various roads and streets that connect the surroundings of the Protected Monuments.

5.2.5 Existing Heights of the Buildings:

Prohibited Area and Regulated Area:

1. **Mahadev Temple and Jain Temple/Monastery:**

   i. **North and East:**

   The height of the buildings is up to ground floor.

   ii. **South and West:**

   No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

2. **Maniyar Math:**

   i. **North and East:**

   The building heights range from G to G+1 floors.

   ii. **South and West:**

   The height of the building is up to ground floor.

3. **Sone Bhandar Caves:**

   i. **North and South:**

   The building heights range from G to G+1 floors.

   ii. **East and West:**

   No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

4. **Jarasandh ka Akhada:**

   i. **North and South:**

   The building heights range from G to G+1 floors.

   ii. **East and West:**

   No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

5. **Bimbisar Jail:**

   i. **North, East and South:**

   No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

   ii. **West:**

   The height of the buildings is up to ground floor.

6. **Jivakamra Van:**

   i. **North, East and South:**

   No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

   ii. **West:**

   The building heights range from G to G+1 floors.

7. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

   i. **North, South and West:**

   The height of the buildings is limited up to ground floor.

   ii. **East:**

   No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

8. **Gridhakuta Stupa:**

   i. **North:**

   The building height ranges from G to G+1 floors.

   ii. **East and West:**

   No construction exists within the Prohibited and Regulated Areas.

   iii. **South:**

   The height of the buildings is up to ground floor.

9. **Partially Mud Stupa on Hill and Giriyak Stupa:**

   No construction exists in any cardinal direction, owing to its position atop the hill's highest peak.

5.2.6 State Protected Monuments and listed Heritage Buildings by local Authorities, if available, within the Prohibited/Regulated Area:

There are no State Protected Monuments or other listed Heritage Buildings by local Authorities reported as yet within the Prohibited and Regulated Areas of the Protected Monument.

5.2.7 Public amenities:

The public amenities, including drinking water, ramp, public conveniences and seating areas are present.

5.2.8 Access to the Protected Monuments:

i. **Mahadev Temple and Jain Temple/Monastery:**

The Protected Monuments are situated atop the Vaibharagiri Hill, amidst dense forest cover and are approached by the Saptaparni cave trail, comprising approximately 560 steps.

ii. **Maniyar Math:**

This Protected Monument lies to the West of the Rajgir-Nalanda Highway (NH-120) and is accessible via the Swarna Bhandar (Sone Bhandar) Road, which is a metalled road.

iii. **Sone Bhandar Caves:**

The caves are located to the East of the Rajgir–Nalanda Highway (NH-120) and may be approached by way of the Swarna Bhandar (Sone Bhandar) Road, which is also connected to the highway (NH-120).

iv. **Jarasandh ka Akhada:**

The Protected Monument is located to the North-East of Swarna Bhandar (Sone Bhandar) Road and is approached via an unpaved (*kuccha*) road connected to it.

v. **Bimbisar Jail:**

The Protected Monument is situated to the East of the Rajgir–Nalanda Highway (NH-120) and is approached via an unpaved (*kuccha*) road connected to it.

vi. **Jivakamra Van:**

The Protected Monument is located to the North of Shanti Stupa Road and is directly accessible from it.

vii. **Chariot Wheel Mark, Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

These Protected Monuments are situated to the East of the Rajgir–Nalanda Highway (NH-120) and are directly accessible from the highway.

viii. **Gridhakuta:**

The Protected Monument is located on the Ratnagiri Hill and is approached by cave stairs, which connect to the Shanti Stupa Trail (South-West), further linked to the Rajgir–Nalanda Highway (NH-120).

ix. **Partially Mud Stupa on Hill:**

The Protected Monument is located on Ratnagiri Hill and is reached by continuing along the same trail used for Gridhakuta, which extends further uphill to the Mud Stupa.

x. **Giriyak Stupa:**

The Protected Monument is situated to the East of Ratnagiri Hill and is approached via a *kuccha* road branching from the Bihar–Mokama road. The route includes approximately 350 steps, followed by a lengthy trail with stone steps at intervals which lead directly to the Giriyak Stupa.

5.2.9 Infrastructure services (water supply, storm water drainage, sewage, solid waste management, parking etc.):

Water supply, storm water drainage, sewage, dustbins and parking are available.

5.2.10 Proposed zoning of the area as per guidelines of the Local Bodies:

There is no development plan prepared and made available in public domain by any of the current Local Authorities, therefore no zoning is proposed at present.

CHAPTER - 6

Architectural, Historical and Archaeological Value of the Protected Monuments

6.1 Architectural, Historical and Archaeological Value:

Architectural Value:

The Protected Monuments at Rajgir exemplify a remarkable confluence of architectural styles spanning several centuries, reflecting the religious traditions of Hinduism, Buddhism and Jainism. Architecturally, the Mahadev Temple, with its modest sanctum (*garbha-griha*), granite pillars and combination of brick and stone, represents early medieval temple construction. The Jain Temple/Monastery exhibits advanced brick masonry and spatial planning, featuring a central East-facing chamber surrounded by cells containing religious images. The Maniyar Math is distinguished by its hollow cylindrical structure with double-layered walls, adorned with stucco figures indicative of Gupta-period artistic and religious expression. The rock-cut Sone Bhandar Caves illustrate a blend of Jain iconography and Gupta-era expansions, characterised by vaulted roofs and finely carved reliefs. The brick stupas, including the Van Ganga Stupa and Giriyak Stupa, demonstrate early Mauryan and Gupta funerary architecture, with terraced platforms, apsidal chambers and decorative lime plasterwork, reflecting evolving construction techniques and ritual significance.

Historical Value:

Historically, these Protected Monuments provide substantial testimony to the vibrant cultural and religious landscape of ancient Magadh. The Mahadev Temple and Jain establishments on Vaibharagiri Hill bear evidence of continuous worship over many centuries and are associated with legendary figures such as Jarasandh and early Jain ascetics recorded by Chinese pilgrims like Hiuen Tsang. The Maniyar Math and Sone Bhandar Caves afford insight into religious iconography and practices from the Mauryan to the Gupta periods. Protected Monuments such as Jarasandh ka Akhada preserve martial traditions linked to epic narratives from the Mahabharata, whereas Bimbisar Jail is connected with Buddhist history, notably the imprisonment of King Bimbisara. The Jivakamra Van represents the patronage of prominent historical figures linked to the early Buddhist Sangha. Collectively, these Protected Monuments reveal an intricate interplay between mythology, religious history and dynastic developments in ancient Bihar.

Archaeological Value:

From an archaeological perspective, the Protected Monuments yield invaluable information on ancient construction methods, religious symbolism and settlement patterns. Excavations at the Van Ganga Stupa have uncovered a two-tiered brick structure dating to the Mauryan period, with later Gupta additions, substantiated by ceramic typology and relic chambers. Inscriptions and sculptural elements at Maniyar Math and Sone Bhandar Caves contribute significantly to the understanding of early sculptural traditions and religious symbolism. The shell inscriptions and chariot wheel marks provide rare epigraphic evidence relating to the region's mytho-historical traditions. The ruins at Jivakamra Van and terracotta plaques from Gridhakuta further enhance knowledge of monastic architecture and Buddhist devotional art.

6.2 Sensitivity of the Protected Monuments (e.g., developmental pressure, urbanization, population pressure etc.):

The Protected Monuments situated along the Rajgir–Nalanda Highway (NH-120) including Maniyar Math, Bimbisar Jail, Chariot Wheel Marks, shell characters, and the Van Ganga Stupa—are increasingly affected by infrastructure pressure. Proposals for elevated roads, including a column planned within the Prohibited Area of Maniyar Math, pose direct threats to heritage fabric. Tourism-related constructions such as recreational parks, wildlife safaris and public amenities have been established nearby, disturbing the traditional character of the surroundings.

The Shanti Stupa Road, which connects the Rajgir–Nalanda Highway (NH-120) with nearby heritage sites, passes through the Protected Monument- Jivakamra Van, effectively dividing it into two parts. This alignment not only compromises the spatial continuity of the Protected Monument but also reflects an absence of heritage-sensitive planning and consideration. The ancient stone pathway to Gridhakuta Stupa has been overlaid with contemporary flooring material, affecting the Protected Monument's authenticity.

The continuous movement of safari vehicles around Jarasandh ka Akhada poses a significant threat to the site's stability and environment.

Furthermore, the shell characters, being inscribed on the surface, are highly susceptible to wear due to tourist movement on the surface. Consequently, they have become difficult to identify and are steadily losing visibility.

Illegal mining in the Rajgir Hills has weakened slopes, threatening the stability of Protected Monuments located on hilltops and at foothills. The absence of proper signage and informational displays has led to public unawareness, unintentional damage and increased chances of encroachment. These pressures collectively endanger both the preservation and significance of these Protected Monuments.

6.3 Visibility from the Protected Monuments or Area and visibility from the Regulated Area:

i. **Mahadev Temple and Jain Temple/Monastery:**

Visibility from the Protected Monuments:

The Protected Monuments are located on top of Vaibharagiri Hill. Towards the North, the city of Rajgir is clearly visible along with buildings and construction works. In other directions, the view includes Jain temples and the Rajgir Hills, which are covered with dense forest and natural vegetation.

Visibility from the Regulated Area:

The ruined temples are low in height and are not visible from the Regulated Area. The area is covered by dense vegetation, which obstructs the view of the structures.

ii. **Maniyar Math:**

Visibility from the Protected Monument:

The Rajgir Hills, dense forest and vegetation are visible in all directions from the Protected Monument.

Visibility from the Regulated Area:

The Protected Monument is partially visible from the approach roads.

iii. **Sone Bhandar Caves:**

Visibility from the Protected Monument:

This Protected Monument is situated at the foothills of Vaibharagiri Hill. The Rajgir Hills, forest department cottages and dense forest are visible from the Protected Monuments.

Visibility from the Regulated Area:

The Protected Monument is visible from the South, while dense vegetation covers the view in all other directions.

iv. **Jarasandh ka Akhada:**

Visibility from the Protected Monument:

This Protected Monument is located at the foothills of Vaibharagiri Hill. Rajgir Wildlife Safari, Rajgir Hills and dense vegetation are visible from the Protected Monument.

Visibility from the Regulated Area:

The Protected Monument is partially visible from the South.

v. **Bimbisar Jail and Jivakamra Van:**

Visibility from the Protected Monuments:

The Rajgir Hills and dense forest are visible in all directions from the Protected Monuments.

Visibility from the Regulated Area:

The Protected Monuments is concealed by the dense forest and is not visible from the Prohibited and Regulated Areas.

vi. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

Visibility from the Protected Monuments:

The Rajgir Hills and dense forest are visible on all sides from the Protected Monuments. The Rajgir–Nalanda Highway (NH-120) lies adjacent to the Western boundary of the Protected Monuments.

Visibility from the Regulated Area:

The Protected Monuments are not visible from the Prohibited and Regulated Areas. It becomes partially visible only when in close proximity to the access road.

vii. **Gridhakuta Stupa and Partially Mud Stupa on Hill:**

Visibility from the Protected Monuments:

The Rajgir Hills and dense forest are visible from all sides of the Protected Monuments. The Vishwa Shanti Stupa is partially visible.

Visibility from the Regulated Area:

These Protected Monuments are situated on Gridhakuta Hill and are partially visible from the Prohibited and Regulated Areas.

viii. **Giriyak Stupa:**

Visibility from the Protected Monument:

From the Protected Monument, the Rajgir Hills, dense forest, vast agricultural plains of the nearby village, Ganga Water Reservoir Dam and the Panchane River flowing to the East are visible.

Visibility from the Regulated Area:

This Protected Monument lies embedded on the Hill and is visible from the Prohibited and Regulated Areas.

6.4 Land-use:

The existing land use comprises residential, religious, recreational, public/semi-public, agricultural and forest areas.

6.5 Archaeological heritage remains other than Protected Monuments:

In addition to the Protected Monuments, several other archaeological heritage remains, including mounds, stone structures, ancient pond, walls and ancient fortifications, can be found in close vicinity to the Protected Monuments.

6.6 Cultural landscapes:

The Protected Monuments of Rajgir collectively represent a rich cultural landscape shaped by continuous interaction between religious traditions and the natural environment. Spread across the sacred hills of Vaibharagiri, Gridhakuta and Giriyak, these Protected Monuments including ancient temples, stupas, monasteries, caves, inscriptions and ritual spaces—illustrate the historical depth of Hindu, Buddhist and Jain presence in the region. Structures like the Mahadev Temple, Jain Monastery, Gridhrakuta Stupa, Sone Bhandar Caves and Jivakamra Van are thoughtfully embedded within the natural terrain, often making use of existing rock formations, hill slopes and elevated positions for spiritual and functional purposes. The surrounding features, such as dense forest cover, agricultural plains, enhance the natural setting and support the historical significance of the Protected Monuments.

Together, these elements continue to reflect enduring traditions of worship, pilgrimage and sacred association with the land.

6.7 Significant natural landscapes that form part of cultural landscape and also help in protecting the Protected Monuments from environmental pollution:

The natural landscape surrounding the Protected Monuments of Rajgir is integral to their cultural setting and contributes significantly to their protection from environmental pollution. The Rajgir Hills, not only hold religious and historical significance but also serve as natural barriers against urban sprawl, vehicular emissions and dust intrusion. These hills, covered with thick forest growth and native vegetation, help regulate temperature, reduce soil erosion and maintain ambient air quality. This natural cover acts as a buffer, protecting monuments from atmospheric pollutants and environmental degradation. The surrounding terrain, with its elevation and limited accessibility, further restricts unregulated construction, helping preserve both the physical fabric and the cultural character of these ancient heritage sites.

6.8 Usage of open space and constructions:

Open spaces are primarily used for agriculture, forest and recreational spaces including public gardens and Wildlife safari, while constructions are used for residential and religious purposes.

6.9 Traditional, Historical and Cultural Activities:

The festival of Maha Shivratri is celebrated at the Mahadev Temple (Protected Monument) attracting numerous pilgrims. The annual Rajgir Mahotsav is held in November–December, the historic *Malmas Mela* is celebrated once every three years and Magh Puja is celebrated in March.

6.10 Skyline as visible from the Protected Monuments and from the Regulated Areas:

i. **Mahadev Temple and Jain Temple/Monastery:**

Situated on Vaibharagiri Hills, these Protected Monuments offer views of Rajgir city and the surrounding dense forest and vegetation.

ii. **Maniyar Math:**

The Protected Monument, located within a densely forested area, offers clear views of the surrounding forest and the Rajgir Hills. To the North-East, Jai Prakash Udyan is distinctly visible.

iii. **Sone Bhandar Caves:**

Situated within the foothills of the Vaibharagiri Hills, the Protected Monument offers views of the surrounding dense forest, natural vegetation, Rajgir Hills and the Forest Department's quarters and guest house.

iv. **Jarasandh ka Akhada:**

The Protected Monument, located within a densely forested area, offers clear views of the surrounding forest and the Rajgir Hills. To the North-East, the Rajgir Wildlife Safari is distinctly visible.

v. **Bimbisar Jail and Jivakamra Van:**

The Protected Monuments, situated within a dense forest, offer views of the surrounding forest, natural vegetation and the Rajgir Hills.

vi. **Chariot Wheel Mark and Shell Characters and Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa:**

The Protected Monuments, situated within a dense forest, offer views of the surrounding forest, natural vegetation and the Rajgir Hills.

vii. **Gridhakuta Stupa and Partially Mud Stupa on Hill:**

The Protected Monuments are situated on different hilltops at varying elevations, offering views of the dense forest area, the Rajgir Hills and the Shanti Stupa.

viii. **Giriyak Stupa:**

This Protected Monument, situated on a hilltop, offers views of the surrounding hills and dense vegetation.

6.11 Traditional Architecture:

No traditional architecture is prevalent around the Protected Monuments.

6.12 Developmental Plan, as available, by the local authorities:

There is no development plan prepared or made available in the public domain by any of the current Local Authorities.

6.13 Permissible Building related parameters:

The Protected Monument – **"All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Rajgir, District- Nalanda, Bihar"** is located in close vicinity of other Protected Monuments **"All ancient structures and all artificial caves and mounds containing ancient remains which are situated within a distance of half a mile of the said two ancient cities known as old and new Rajgriha, Rajgir, District - Nalanda, Bihar"** and **"The walls of the two ancient cities known as old and new Rajgriha, Rajgir, District- Nalanda, Bihar."** Hence, the Regulated area of the "**All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Rajgir, District - Nalanda, Bihar"** overlaps with the Regulated area of the above-mentioned nearby Protected Monuments. These bye-laws should therefore be read in conjunction with one another. In the event of a site of construction falls in the Regulated area of two separate monuments, the likely adverse impact on account of the proposed construction on the monument which is closer to the site of construction, shall be given precedence.

6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated Area):

Internal changes and adaptive reuse may be generally permitted. However, external changes shall be subject to detailed scrutiny by the Competent Authority. Such changes which include retrofitting/renovation may be

permitted when the building is structurally weak or unsafe or when it has been adversely impacted by any natural calamity and renovation is absolutely necessary. Original building vocabulary and layout along with built-open relationships are to be adhered to. General repair and upkeep of buildings will be permissible, subject to prior permission from the Competent Authority.

The repair and renovation in building/structures should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected monument and its surrounding areas. New cladding materials like Aluminum Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), laminates, tiling or glazing will not be permitted. Use of locally available building material should be encouraged in carrying out repair and renovation works.

6.13.2 Reconstruction:

Reconstruction is defined in Section 2(k) of Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended. Permission for reconstruction in Regulated Area is accorded as per Section 20C(2) of the AMASR Act, 1958, as amended, and Rule 6 (IV) and Rule 7 AMASR (Framing of heritage Bye-Laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. In case of any type of building or structure located in the Prohibited or Regulated Area of the Protected Monument or Protected Area, collapsed or damaged and found beyond repair due to natural calamities, the permission for reconstruction is accorded as per Rule 16 of AMASR (Framing of heritage Bye-Laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. Reconstruction of building or structure damaged due to natural calamity shall be permissible only to the extent it is damaged. The new structure or building as a replacement to the older building in case of reconstruction shall follow the same horizontal and vertical limits as per the pre-existing structure. The use of incongruous materials in the façade such as glazing, metal cladding, Aluminium Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), tiles, laminates will not be permissible. The new structure should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected Monuments and its surrounding area.

6.13.3 New Construction:

6.13.3 A Prohibited Area:

In general terms, as per Section 20A(4) of AMASR Act, 1958, as amended, no new construction including carrying out any public work or project essential to the public or other construction, shall be permitted within the Prohibited Area of the Protected monument.

6.13.3 B Regulated Area:

All the development control norms and building regulations specified in the **"Bihar Building Bye-Laws, 2014"** as and when amended shall be applicable. However, the height and other parameters specified in this Heritage Bye-law shall be applicable in the Regulated Area of the Protected Monument.

Portions of the Prohibited and Regulated Areas of the Protected Monuments- fall under the jurisdiction of the Nalanda Forest Division, which is part of the Bihar Department of Environment, Forest & Climate Change and this should be taken into consideration.

However, in the agricultural fields, constructions that fall under specified exemptions may be permitted. These permissible constructions on the orchards and agricultural land include construction of structures for dwellings and ancillary buildings for people engaged in farming or structures for storage of crops, fodder, manure, agricultural tools and other similar facilities.

1. **Height of the new construction on the site (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, HVAC unit, solar panel, rain water harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc. or any other services on the roof):**

   i. The maximum height limit for new construction or additions/alteration to existing buildings shall not exceed **7.50 metres** (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, generator room, HVAC unit, solar panel, rainwater harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc. or any other services on the roof).

   ii. Construction of the basement should be discouraged as far as feasible.

2. **Usage:**

   i. Present land use may be retained as far as feasible.

   ii. The hills should be protected for their historical, archaeological and geological significance; therefore, construction activity should be discouraged.

   iii. The conversion of land within the Prohibited Area and Regulated Area of a Protected Monument or Protected Area should be done after prior consultation with the National Monuments Authority (NMA).

   iv. The ponds and the water bodies within the Regulated Area of the Protected Monument, must be preserved and any alternations to use should be discouraged as far as feasible.

3. **Façade Design:**

   i. The façade design of new construction must be minimalistic in nature, so that it does not overpower the Protected Monuments and the overall heritage character of the surrounding area. The façade design should be subtle, plastered and painted in earthy colours (white, grey, beige, brown etc.).

   ii. Informal extensions of shops and residences are to be restricted for all the buildings located within the Regulated Area.

iii. Façades of all historic buildings, shops and houses need to be maintained as per original design (series of brackets, chajjas, arched doors, windows etc.).

iv. Plumbing and electrical services shall be concealed and not on the exterior of the building.

4. Roof Design:

i. Traditional sloping / Flat roof design may be followed.

ii. Erection of structures, even of temporary nature, using materials such as Aluminium, fibre glass, polycarbonate or similar materials should be discouraged on the roof of the building.

iii. All services such as large air conditioning units, rooftop water storage tanks or large generator sets placed on the roof to be screened off using screen walls (brick/cements sheets, louvres, jaalis or other such design elements). All of these services should be included in the maximum permissible height.

5. Building Material:

Consistency in building materials and colour along all street façades of the Monument may be maintained. Modern building materials such as Aluminium cladding, glass bricks and any other synthetic tiles or materials should be discouraged for exterior finishes. Traditional building materials such as brick and stone should be used.

6. Colour:

The exterior colour should be of a neutral tone in harmony with the Protected Monument in earthy colours which do not create a harsh contrast with the Protected Monument and its immediate surroundings.

7. Other Regulations:

Proposals for the construction of large-scale public infrastructure projects such as Metro Rail Systems (underground or elevated), rail or road over bridges, flyovers, multi-level parking facilities, or similar development projects and construction of institutional buildings in public interest or which are essential for public, shall be subject to a detailed Heritage Impact Assessment (HIA) report. Such projects may be considered only if it is clearly established that they will not cause any significant adverse impact on the preservation, safety, security, visual integrity, or accessibility of the Protected Monument or its immediate surroundings.

6.14 Visitors facilities and amenities:

Additional visitor facilities and amenities may be considered as per feasibility.

CHAPTER - 7

Site Specific Recommendations

7.1 Site Specific Recommendations:

i. The widening of the National Highway (NH-120), State Highway, if done, should be in the direction away from the Protected boundary of the Protected Monuments as far as feasible.

ii. Adequate care should be taken for preservation and safety of the shell characters rock engravings, given their heritage significance.

iii. The area covered by water bodies, situated in the Prohibited and Regulated Area of the Protected Monuments should be preserved in its current state and any alternations to its existing use should be discouraged as far as feasible.

iv. It is recommended to retain the natural topographical features within the Regulated Area surrounding the Protected Monuments to preserve its historical context and protect the integrity of the landscape.

v. There should be an appropriate addressal of unauthorized construction and encroachment within the Prohibited and Regulated boundaries of the Protected Monument by the local administration.

vi. LED or digital signs, plastic fiber glass or any other highly reflective synthetic material should not be used for signages in the vicinity of the Protected Monuments or its immediate surrounding areas.

vii. No advertisements in the form of hoardings, bill-boards and posters should be permitted near the Protected Monuments, especially on its boundaries.

viii. Use of Eco-Friendly vehicles for movement in the vicinity of the Protected Monuments may be encouraged to mitigate adverse impact on the Protected Monument due to vehicular emissions and vibrations.

ix. Construction of green buildings including best practices like rainwater harvesting should be encouraged.

x. Telephone exchanges, mobile towers, electricity transmission towers, high extension towers, chimneys and overhead water tanks within the Regulated Area should be discouraged and their relocation beyond the Regulated Area may be considered.

7.2 Other Recommendations:

i. Whenever the Master Plan, Zonal Plan or Development Plan is prepared or amended, it should clearly show all Protected Monuments of national importance and their Prohibited and Regulated Area.

ii. The area should be declared as Plastic and Polythene free zone.

iii. National Disaster Management Guidelines for Cultural Heritage Sites and Precincts may be referred at https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf .

अनुलग्नक
ANNEXURES

अनुलग्नक-I
ANNEXURE-I

उक्त दीवारों से घिरे क्षेत्रों के भीतर सभी प्राचीन संरचनाएं और अन्य संस्मारक या अवशेष, तहसील - राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार की सर्वेक्षण योजना

Survey Plan of All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, Tehsil - Rajgir, District - Nalanda, Bihar

जैन मंदिर/मठ (क) और महादेव मंदिर (ख) की सर्वेक्षण योजना

Survey Plan of Jain Temple/Monastery (A) and Mahadev Temple (B)

अनुलग्नक-I(क)
ANNEXURE-I(a)

जरासंध का अखाड़ा (ग) सोन भंडार गुफाएं (घ) और मणियार मठ (ङ) की सर्वेक्षण योजना
Survey Plan of Jarasandh ka Akhada (C) Sone Bhandar Caves (D) and Maniyar Math (E)

अनुलग्नक-I(ख)

ANNEXURE-I(b)

बिम्बिसार जेल (च) और जीवकामरा (छ) वन की सर्वेक्षण योजना

Survey Plan of Bimbisar Jail (F) and Jivakamra Van (G)

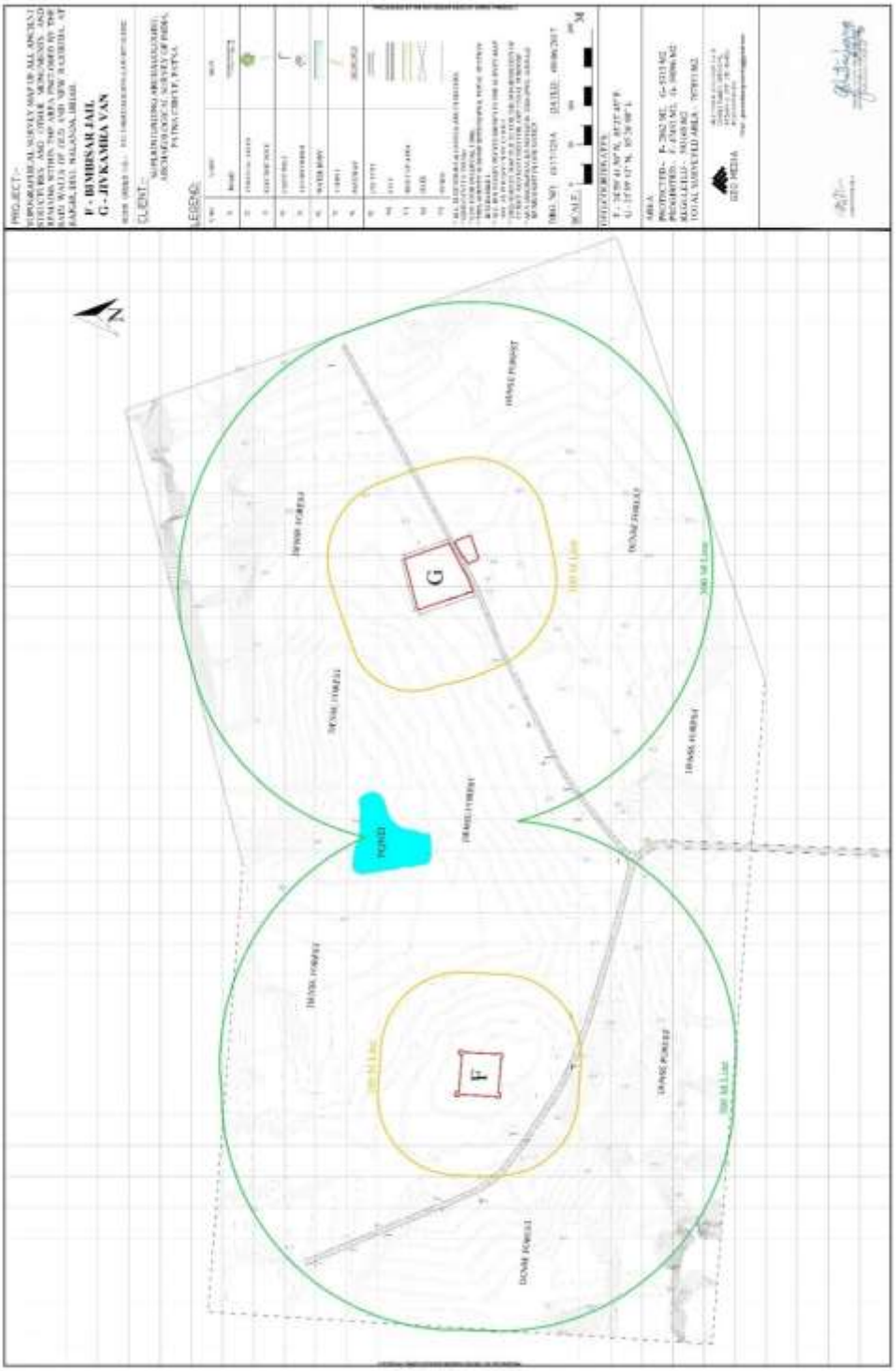

अनुलग्नक-I(ग)
ANNEXURE-I(c)

रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण (ज) और नए उत्खनित स्तूप (झ) और (वन गंगा स्तूप) की सर्वेक्षण योजना

Survey Plan of Chariot Wheel Mark and Shell Characters (H) and Newly Excavated Stupa (I) or (Van Ganga Stupa)

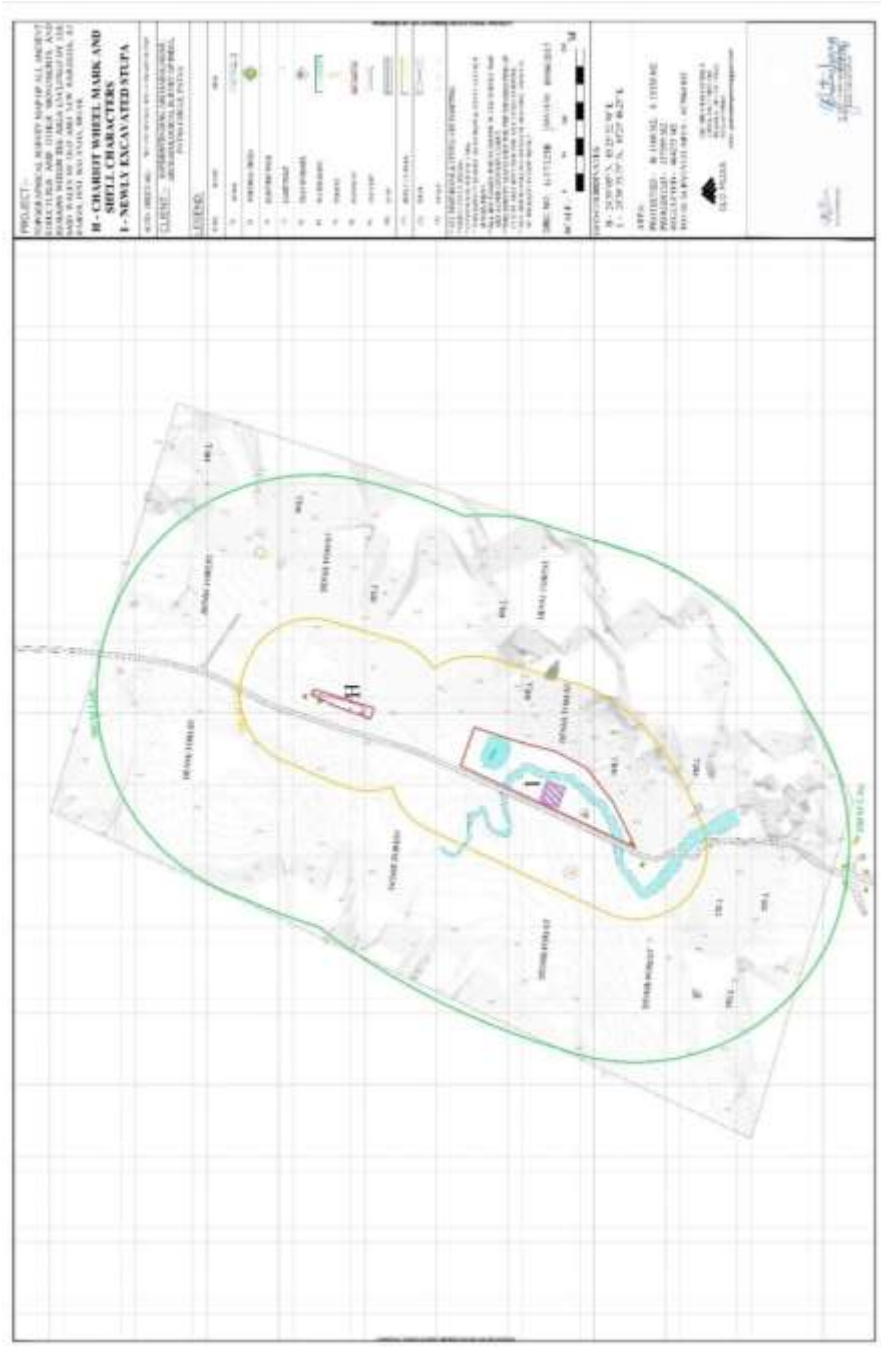

अनुलग्नक-I(घ)
ANNEXURE-I(d)

गृद्धकूट स्तूप (ट) और पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी का स्तूप (ठ) की सर्वेक्षण योजना
Survey Plan of Gridhakuta Stupa (K) and Partially Mud Stupa on Hill (L)

अनुलग्नक-I(ङ)
ANNEXURE-I(e)

गृद्धकूट स्तूप की सर्वेक्षण योजना (ञ)
Survey Plan of Giriyak Stupa (J)

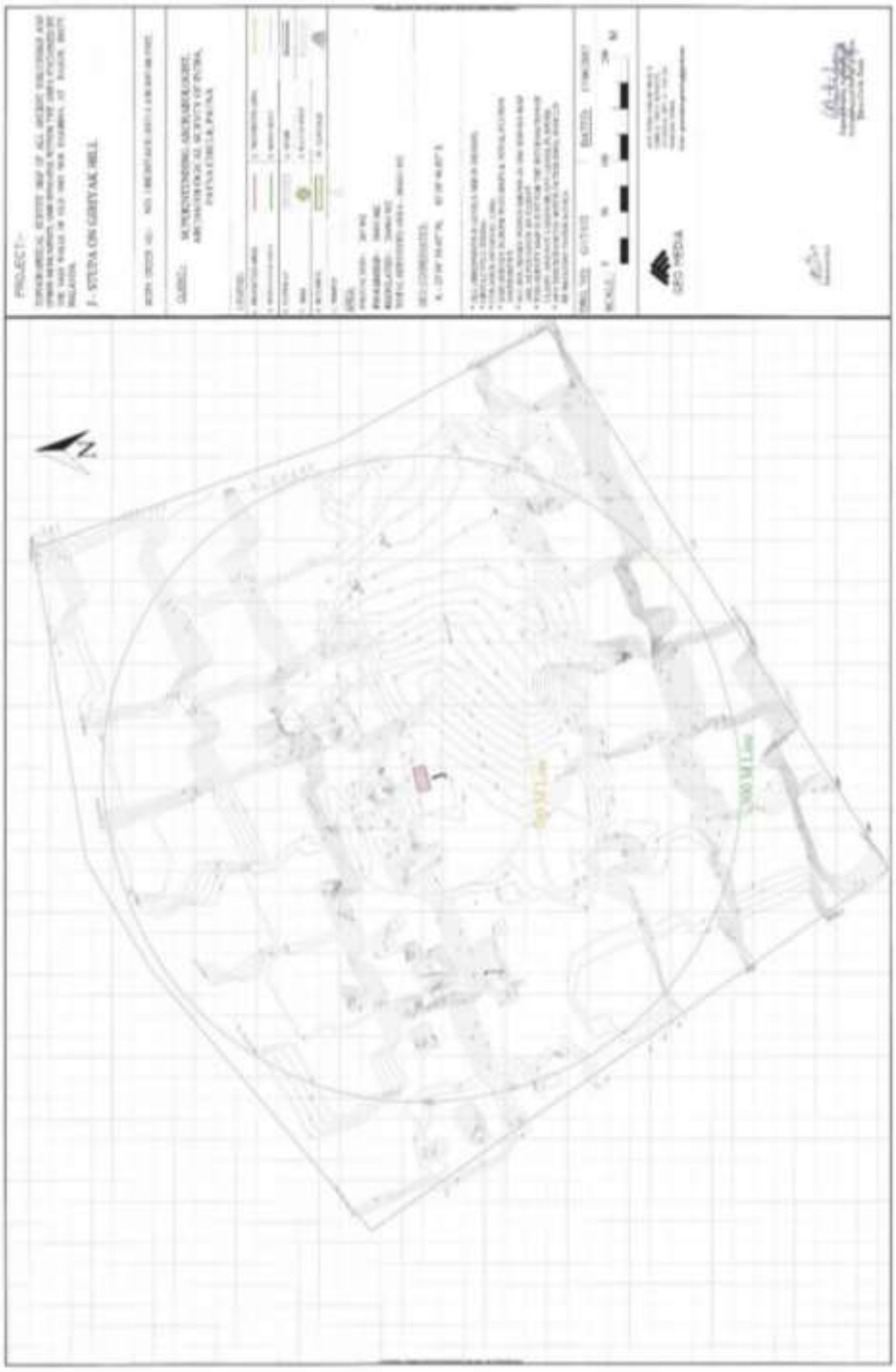

अनुलग्नक-II
ANNEXURE-II

संरक्षित संस्मारकों की अधिसूचना
Notification of the Protected Monuments

GENERAL DEPARTMENT.

NOTIFICATIONS.

No. 2836 —The 7th July 1908.—In exercise of the power conferred by section 3, sub-section (*1*), of the Ancient Monuments Preservation Act, 1904 (VII 1904), the of Lieutenant-Governor is pleased to declare the ancient monuments described below, in the vicinity of the village of Rajgir, in the Bihar subdivision of the Patna district, to be protected monuments within the meaning of the said Act:—

Patna.

(1) The walls of the two ancient cities known as old and new Rajgriha,

(2) All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, and

(3) All ancient structures and all artificial caves and mounds containing ancient remains which are situated within a distance of half a mile of the said two ancient cities known as old and new Rajgriha.

2. Any objections to the issue of this notification which are received by the undersigned within one month from the date on which a copy of the notificatson is fixed up in a conspicious place on or near the said monuments will be taken into consideration.

No. 4.—The 2nd January 1909.—In exercise of the power conferred by sub-section (*3*) of section 3 of the Ancient Monuments Preservation Act, 1904 (VII of 1904), the Lieutenant-Governor is pleased to confirm Notification No. 2836, dated the 7th July 1908, which was issued under sub-section (*1*) of that section and published at page 1248 of Part I of the *Calcutta Gazette* of the 8th July 1908.

मूल अधिसूचना की टंकित प्रति
Typed Copy of Original Notification

GENERAL DEPARTMENT

NOTIFICATIONS

No. 2836, - The 7th July 1908. Patna - In exercise of the power conferred by section 3, sub-section (1), of the Ancient Monuments Preservation Act, 1904 (VII 1904), the of Lieutenant-Governor is pleased to declare the ancient monuments described below, in the vicinity of the village of Rajgir, in the Bihar subdivision of the Patna district, to be protected monuments within the meaning of the said Act:-

(1) The walls of the two ancient cities known as old and new Rajgriha,

(2) All ancient structures and other monuments or remains within the areas enclosed by the said walls, and

(3) All ancient structures and all artificial caves and mounds containing ancient remains which are situated within a distance of half a mile of the said two ancient cities known as old and new Rajgriha.

2. Any objections to the issue of this notification which are received by the undersigned within one month from the date on which a copy of the notification is fixed up in a conspicious place on or near the said monuments will be taken into consideration.

No. 4. – The 2nd January 1909,. – In exercise of the power conferred by sub-section (3) of section 3 of the Ancient Monuments Preservation Act, 1904 (VII of 1904), the Lieutenant Governor is pleased to confirm Notification No. 2836, dated the 7th July 1908, which was issued under sub-section (1) of that section and published at page 1248 of Part I of the Calcutta Gazette of the 8th July 1908.

अनुलग्नक-III
ANNEXURE-III

नए और पुराने राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार को दर्शाता अभिलेखीय मानचित्र

The Archival Map showing New and Old Rajgir, District - Nalanda, Bihar

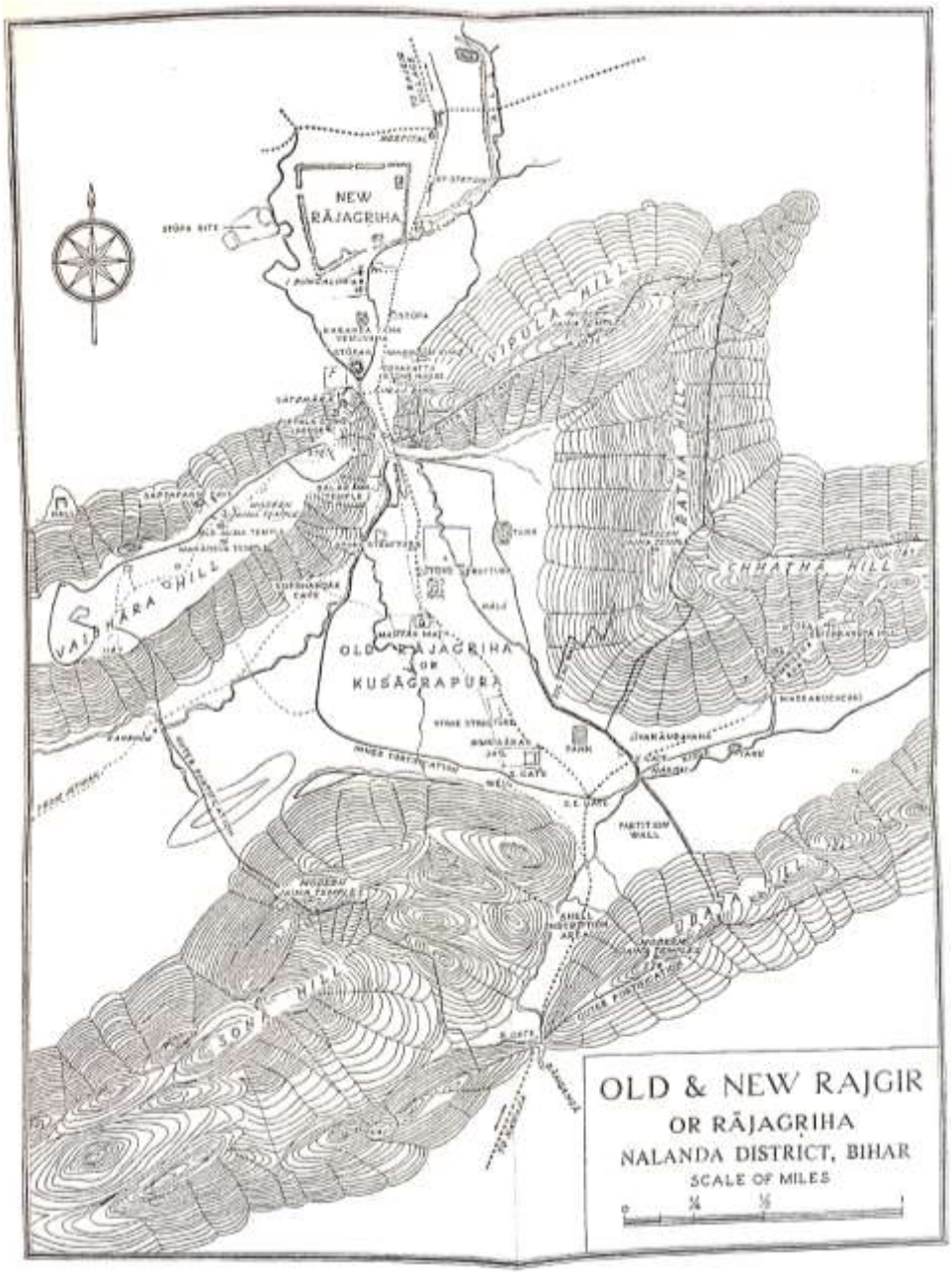

अनुलग्नक-III(क)
ANNEXURE-III(a)

राजगीर, जिला - नालंदा, बिहार की किलेबंदी को दर्शाता अभिलेखीय मानचित्र

The Archival Map showing Fortifications of Rajgir, District - Nalanda, Bihar

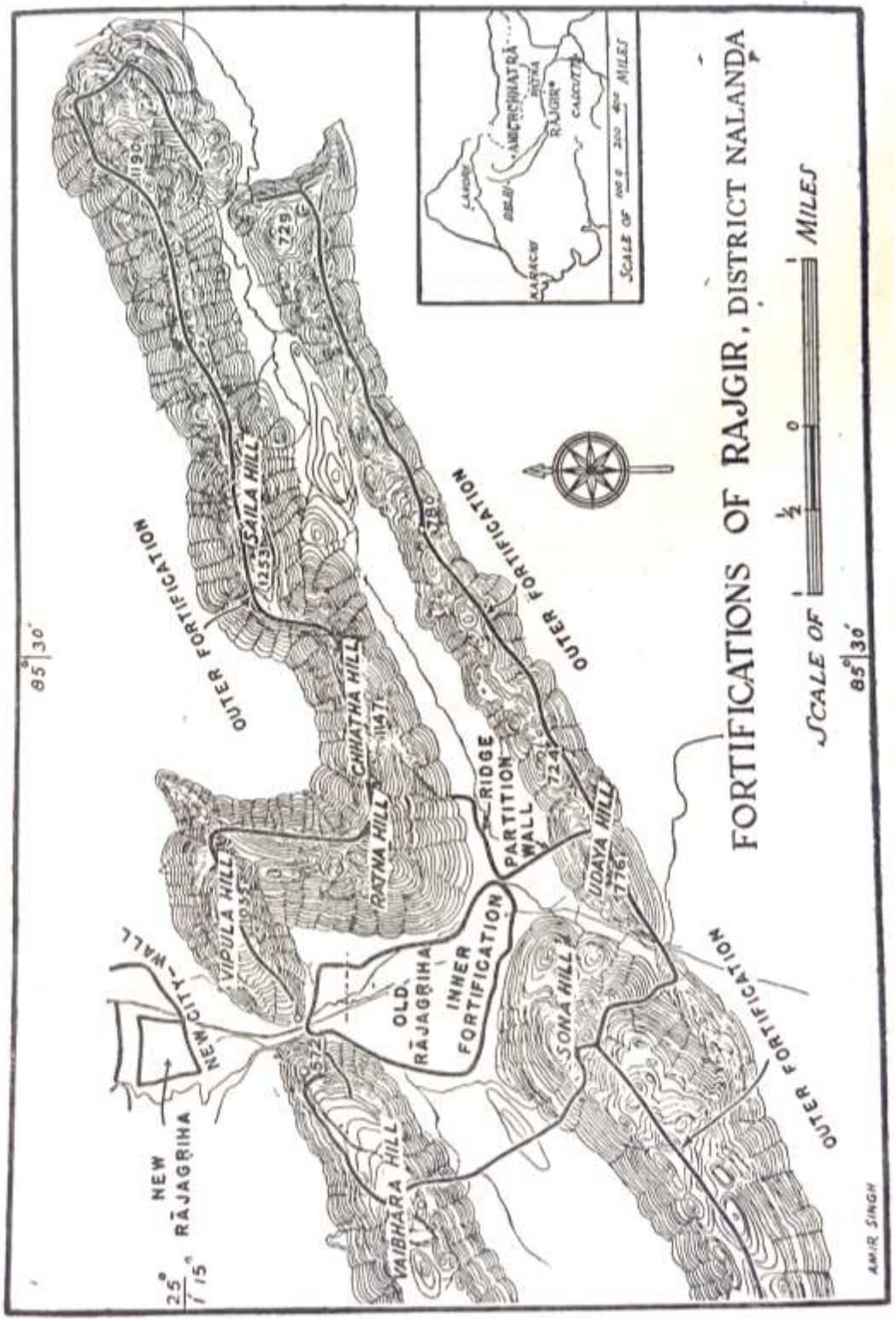

अनुलग्नक-III(ख)
ANNEXURE-III(b)

संरक्षित संस्मारकों के अभिलेखीय चित्र
Archival Images of the Protected Monuments

चित्र 1 और 2: संरक्षित संस्मारकों - जैन मंदिर/मठ और महादेव मंदिर ।

Image 1 and 2: Protected Monuments - Jain Temple/Monastery and Mahadev Temple.

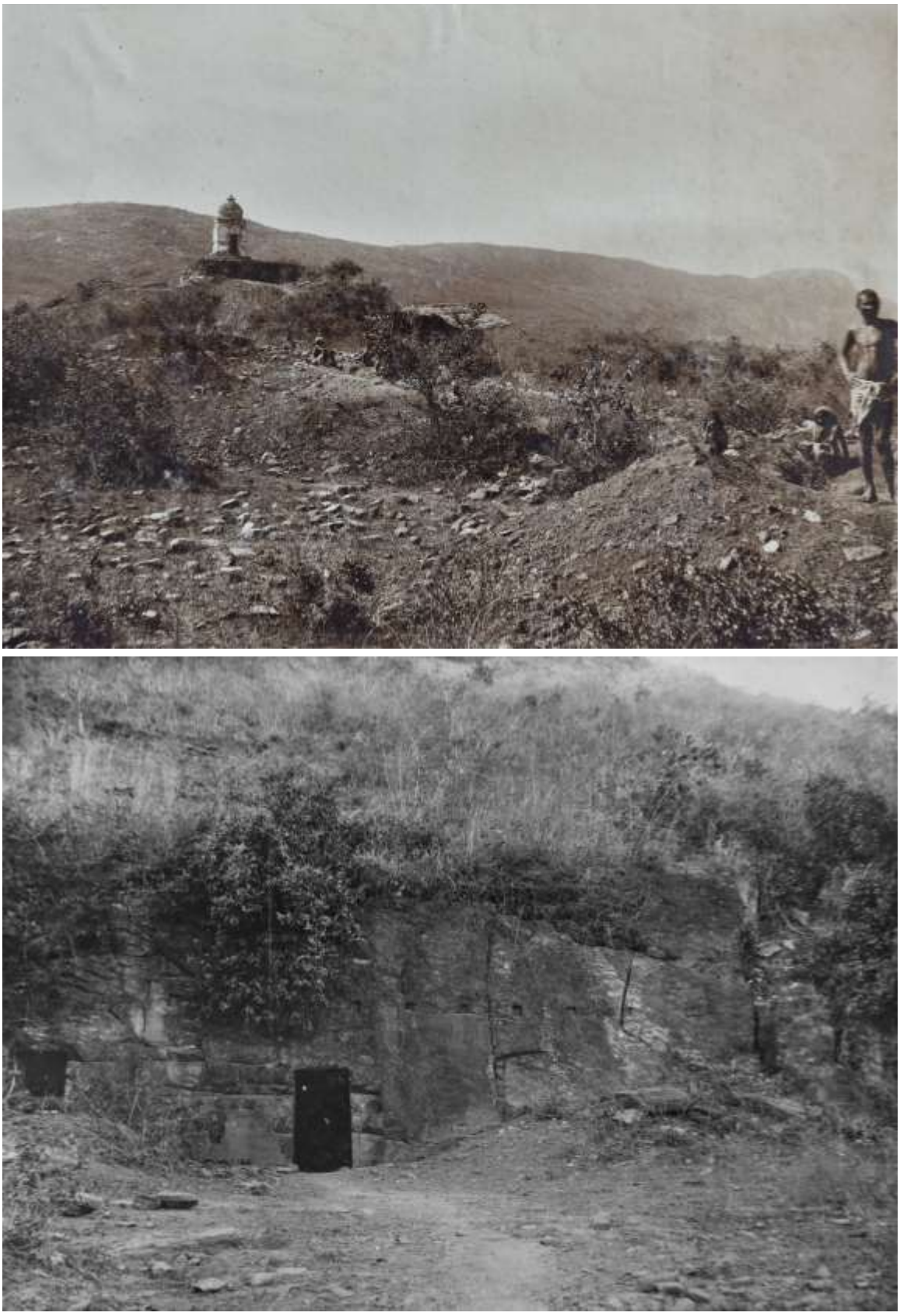

चित्र 3 और 4: संरक्षित संस्मारकों - मणियार मठ और सोन भंडार गुफाएं।

Image 3 and 4: Protected Monuments - Maniyar Math and Sone Bhandar Caves.

चित्र 5 और 6: संरक्षित संस्मारकों - नया उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप और गृद्धकूट स्तूप ।

Image 5 and 6: Protected Monuments - Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa and Gridhakuta Stupa.

चित्र 7: संरक्षित संस्मारक - गिरियाक स्तूप ।[1]
Image 7: Protected Monument- Giriyak Stupa.

[1]भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (पटना सर्किल)।
Archaeological Survey of India (Patna Circle).

बिहार भवन उप-नियम, 2014
Bihar Building Bye-Laws, 2014

20. **Construction near protected monuments.**-(1) No construction or re-construction of any building, within a radius of 100 meters, or such other higher distance from any archaeological site, as may be decided by the Archaeological Survey of India and Bihar State Art, Culture and Youth Department from time to time, from the outer boundary of a declared protected monument shall be permitted.

(2) (i) No construction above 1st floor and above 7 (seven) meters shall be allowed beyond a radius of 100 meters and within a radius of 300 meters of such monuments.

(ii) The construction or reconstruction of any building under sub-bye law (2) shall not be above 7 (Seven) meters of total height.

(3) Notwithstanding anything contained in the sub-bye law (1) & (2) above, construction/re-construction/addition/alteration shall be allowed on production of clearance from A.S.I./State Archaeology Department as the case may be.

(4) If a building or premises, not covered under The Ancient Monument Preservation Act, 1904, or The Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, in the opinion of the Authority, is of historical or architectural interest, and is in danger of being demolished or altered or likely to be affected in its character by a development, the Authority shall not grant permission for construction over any land situated near the said building or premises. The matter shall be referred to the Art Commission, whose decision shall be final.

(5) These provisions shall apply mutatis mutandis in respect of archaeological sites notified by the Art Commission.

(6) An appeal against the decision under sub-bye law (4) shall lie with the respective Tribunal under the Act or the Municipal Act.

21. **Construction near important buildings.-**No building exceeding 10 meters height shall be permitted within 200 meters radius from the boundary of the Governor's House, Bihar State Secretariat, Bihar Legislative Assembly, High Court and such other buildings as may be decided by the Authority or the State Government from time to time.

22. **Construction near river front.-** (1) No construction or re-construction of any building, within a strip of land of 200 metres, or such other higher distance as may be prescribed from time to time by the State Government, from the outer boundary of the river of Ganges (as prescribed by the Irrigation Department), shall be permitted except for repair and renovation work of heritage buildings.

(2) In case of rivers other than the Ganges, no construction or re-construction of any building shall be allowed, within a strip of land of 100metres, or such distances as prescribed by the State Government, from the outer boundary of the riverfront of any river (as prescribed by the Irrigation Department). The State Government shall notify a list of such rivers.

(3) No construction shall be allowed within the boundary of the river.

(4) Notwithstanding the above provision, any Planning Authority or Government Body shall be able to undertake development and beautification work of riverfront, ghats or any other planned development on reclaimed lands with the approval of the Government.

अनुलग्नक-V
ANNEXURE-V

संरक्षित संस्मारकों और उसके आसपास के क्षेत्रों के चित्र
Images of the Protected Monuments and its surrounding areas

चित्र 1 और 2: संरक्षित संस्मारकों - जैन मंदिर/मठ और महादेव मंदिर ।
Image 1 and 2: Protected Monuments - Jain Temple/Monastery and Mahadev Temple.

चित्र 3: मंदिर के वास्तुशिल्प टुकड़े ।
Image 3: Architectural fragments of the Temple.

चित्र 4: सभी कार्डिनल दिशाओं में वन आवरण द्वारा घिरा हुआ विनियमित क्षेत्र ।
Image 4: The Regulated Area is enclosed by forest cover in all cardinal directions.

चित्र 5 और 6: संरक्षित संस्मारकों के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित जैन मंदिर ।
Image 5 and 6: Jain temples located within the Prohibited and Regulated Areas of the Protected Monuments.

चित्र 7: संरक्षित संस्मारक - मणियार मठ ।
Image 7: Protected Monument Maniyar Math.

चित्र 8: प्रतिषिद्ध क्षेत्र के उत्तर-पूर्व और पूर्वी हिस्सों में स्थित जय प्रकाश उद्यान ।
Image 8: Jai Prakash Udyan located in the North-East and Eastern parts of the Prohibited Area.

चित्र 9: संरक्षित संस्मारकों (मणियार मठ और सोन भंडार गुफाएं) के विनियमित क्षेत्र के भीतर पश्चिम में स्थित राजगीर वन्यजीव सफारी की चारदीवारी और प्रवेश द्वार ।

Image 9: Boundary wall and entrance gate of Rajgir Wildlife Safari, located to the West within the Regulated Area of the Protected Monuments (Maniyar Math and Sone Bhandar Caves).

चित्र 10: सभी कार्डिनल दिशाओं में वन आवरण और पहाड़ियों से घिरा हुआ आसपास का क्षेत्र ।
Image 10: The surrounding area is enclosed by forest cover and hills in all cardinal directions.

चित्र 11: संरक्षित संस्मारक - सोन भंडार गुफाएं।
Image 11: Protected Monument - Sone Bhandar Caves.

चित्र 12: पत्थर में तराशी गई जैन मूर्तियां।
Image 12: Jain Images carved in stone.

चित्र 13 और 14: गुफाओं के भीतर पत्थर की नक्काशीदार मूर्तियां और शिलालेख ।
Image 13 and 14: Stone-carved images and inscriptions within the caves.

चित्र 15: प्रतिषिद्ध क्षेत्र का दृश्य ।
Image 15: View of the Prohibited Area.

चित्र 16: प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर उत्तर-पूर्वी दिशा में स्थित पुराना टेलीफोन एक्सचेंज और टॉवर ।
Image 16: Old telephone exchange and tower located to the North-Eastern direction within the Prohibited and Regulated Areas.

चित्र 17 और 18: प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर स्थित वन विभाग के स्टाफ क्वार्टर और अतिथि गृह।

Image 17 and 18: Staff quarters and guest house of the Forest Department located within the Prohibited and Regulated Areas.

चित्र 19 और 20: संरक्षित संस्मारक - जरासंध का अखाड़ा ।

Image 19 and 20: Protected Monument - Jarasandh ka Akhada.

चित्र 21: राजगीर वन्यजीव सफारी के वाहनों द्वारा उपयोग किए जाने वाले गेट के साथ चारदीवारी और कच्ची सड़क की पूर्वी दिशा का दृश्य।
Image 21: View towards the Eastern direction of the boundary wall with gate and unpaved road used by vehicles of the Rajgir Wildlife Safari.

चित्र 22: अन्य दिशाओं से पहाड़ियों और वन का दृश्य।
Image 22: View of Hills and Forest from other directions.

चित्र 23 और 24: संरक्षित संस्मारक - बिम्बिसार जेल और जीवकामरा वन ।

Image 23 and 24: Protected Monuments - Bimbisar Jail and Jivakamra Van.

चित्र 25: संरक्षित संस्मारक - जीवकामरा वन से गुजरने वाली शांति स्तूप सड़क।
Image 25: Shanti Stupa Road passing through the Protected Monument - Jivakamra Van.

चित्र 26: संरक्षित संस्मारकों के आसपास अन्य दिशाओं से पहाड़ियों और वन का दृश्य।
Image 26: View of hills and forest from other directions around the Protected Monuments.

चित्र 27 और 28: संरक्षित संस्मारक - रथ के पहिये के निशान और शैल वर्ण ।

Image 27 and 28: Protected Monument - Chariot Wheel Mark and Shell Characters.

चित्र 29: संरक्षित संस्मारक - नया उत्खनित स्तूप या वन गंगा स्तूप ।
Image 29: Protected Monument- Newly Excavated Stupa or Van Ganga Stupa.

चित्र 30: संरक्षित संस्मारकों के पश्चिम की ओर प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर जैन समाधि ।
Image 30: Jain Samadhi within the Prohibited Area, towards the West of the Protected Monuments.

चित्र 31 और 32: स्तूप परिसर के भीतर सूखे तालाब और पत्थर की संरचना ।
Image 31 and 32: Dried-up Pond and stone structure within the Stupa complex.

चित्र 33: अन्य सभी दिशाओं में घने वन और पहाड़ियों से घिरे संरक्षित संस्मारकों ।
Image 33: Protected Monuments surrounded by dense forest and hills in all other directions.

चित्र 34: संरक्षित संस्मारक - गृद्धकूट स्तूप ।
Image 34: Protected Monument - Gridhakuta Stupa.

चित्र 35 और 36: गृद्धकूट स्तूप से दृश्य ।
Image 35 and 36: View from Gridhakuta Stupa.

चित्र 37: संरक्षित संस्मारक - पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी स्तूप ।
Image 37: Protected Monument - Partially Mud Stupa on Hill.

चित्र 38: पहाड़ी पर आंशिक रूप से मिट्टी स्तूप से दृश्य ।
Image 38: View from Partially Mud Stupa on Hill.

चित्र 39: संरक्षित संस्मारक - गिरियाक स्तूप ।

Image 39: Protected Monument - Giriyak Stupa.

चित्र 40: पहुंच सड़क से संरक्षित संस्मारक जाने के लिए सीढियां ।

Image 40: Steps from the approach road to the Protected Monument.

चित्र 41: संरक्षित संस्मारक के लिए पहुंचने की सीढियों के बाद शुरू होता प्राचीन पत्थर का मार्ग ।

Image 41: Ancient stone pathway begins after the approach steps to the Protected Monument.

चित्र 42: पहाड़ी की चोटी पर स्थित संरक्षित संस्मारक का दृश्य ।

Image 42: View of the Protected Monument situated on the hilltop.

चित्र 43 और 44: पुरातात्विक अवशेष जिसमें एक प्राचीन तालाब और एक बड़ी पत्थर की संरचना शामिल है ।
Image 43 and 44: Archaeological remains comprising an ancient pond and a large stone structure.

चित्र 45: एक अन्य संरक्षित संस्मारक - साइक्लोपियन दीवार निकट में स्थित है ।

Image 45: Another Protected Monument - Cyclopean Wall located in close vicinity.

चित्र 46: पंचाने नदी और एक अन्य संरक्षित संस्मारक – जिसे गढ़ के रूप में जाना जाने वाला टीला का दृश्य ।

Image 46: View of the Panchane River and another Protected Monument - the mound known as Garh.

चित्र 47: संरक्षित संस्मारक से गंगा जल जलाशय बांध का दृश्य।
Image 47: View of the Ganga Water Reservoir Dam from the Protected Monument.